बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

मैथिली

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-१)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

<u>प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:</u>

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. संविधान सभा मे प्रारूप समितिक अध्यक्ष छलाह
   (क) जवाहर लाल नेहरू (ख) राजेन्द्र प्रसाद
   (ग) भीमराव अंबेदकर (घ) रामाराव

2. मेरठक सैनिक छावनी मे विद्रोह कयने छलाह
   (क) मंगल पाण्डे (ख) सुनील पाण्डे
   (ग) भगत सिंह (घ) बुटकेश्वर दत्त

3. 'लेभराह अन्हार मे एकटा इजोत' एकांकीक एकांकीकार थिकाह
   (क) महेन्द्र मलंगिया (ख) तंत्रनाथ झा
   (ग) रामदेव झा (घ) सुधांशु 'शेखर' चौधरी

4. अशोकक पोथी छनि
   (क) मैथिल आँखि (ख) एकल पाठ
   (ग) मन्दाकिनी (घ) डोकहर आँखि

5. 'कन्यादान' उपन्यासक हिन्दी अनुवाद कयने छथि
   (क) विभा रानी (ख) अजीत आजाद
   (ग) रामनारायण सिंह (घ) शंकरदेव झा

Cont. ....

6. 'घसल अठन्नी' क रचयिता छथि

(क) सुरेन्द्र झा 'सुमन' (ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ग) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (घ) काञ्चीनाथ झा 'किरण'

7. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि

(क) द्वादशी पर (ख) अर्चना पर

(ग) राधाविरह पर (घ) प्रेरणापुञ्ज पर

8. 'कविचूड़ामणि' उपाधि छनि

(क) हरिमोहन झाक (ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क

(ग) काञ्चीनाथ झा 'किरण'क (घ) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क

9. हिन्दी मे 'नागार्जुन' नाम सँ लिखैत छथि

(क) वैद्यनाथ मिश्र (ख) राजकमल

(ग) गंगेश गुञ्जन (घ) रमण झा

10. 'विदित' उपनाम छनि

(क) विद्यनाथ झाक (ख) विलट पासवान

(ग) शैलेन्द्र मोहन झा (घ) मनमोहन झा

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : $4 \times 1 = 4$

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) माँ	(क) महेन्द्र मलंगिया
(ii) भरि छीपा भात	(ख) अशोक
(iii) बाबाक आत्मीयता	(ग) विभा रानी
(iv) लेभराह अन्हार मे एकटा इजोत	(घ) तारानन्द वियोगी

12. निम्नलिखित खाली स्थान केँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : $3 \times 1 = 3$

(क) जीवन मे उतार-चढ़ाव .... नियम छैक। (प्रकृतिक/सामाजिक)

(ख) महार जाति .... बूझल जाइत छैक। (अस्पृश्य/स्पृश्य)

(ग) प्रतिभावान अंबेदकर 1912 मे अर्थशास्त्र आ .... मे डिग्री हासिल कयलनि। (राजनीति/अंग्रेजी)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : $3 \times 1 = 3$

(i) क्रैक बेसी काल एकछाहा मैथिली बजैए।

(ii) कांग्रेसक कोलकाता अधिवेशनक अध्यक्ष छलाह पं. जवाहर लाल नहेरू।

(iii) भारत छोड़ो आंदोलन 1942 ई. मे भेल।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

क) रेडिओ ख) स्त्रीशिक्षा ग) सहकारी खेती घ) बाढ़ि

15 निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त .शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

स्वतंत्रता आन्दोलन कँ गतिशील बनएबाक हेतु जखन समाजवादी आन्दोलन देश मे पसरल तँ मिथिला समाजवादी आन्दोलनक केन्द्रविन्दु बनि गेल। एखन धरि सुनियोजित ढंग सँ ई प्रयास नहि भेल छल जे स्वतंत्रता आन्दोलन मे मिथिलाक योगदान विषयक इतिहास प्रस्तुत हो। छिटपुट रूपँ विद्वान लोकनि एहि पर काज कयलनि अछि तथा विषयवस्तु पर प्रकाश देलनि अछि किन्तु प्रयोजन छैक, जे योजनाबद्ध रूपँ एहि पर कार्य हो। एहि सँ सबटा तथ्य संकलित भय प्रकाश मे आबय। जहि सँ मिथिलाक भावी पीढ़ी संगहि समस्त देशवासी ई बुझि सकय जे जहिना मिथिला सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं कला मे अग्रणी रहल अछि तहिना स्वतंत्रता आन्दोलन मे सेहो अगिला पाँती मे रहल अछि।

16. माय कँ पत्रोत्तर दैत एकटा पत्र लिखू। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

संसारक सभ केओ अपन-अपन संस्कृतिक रक्षा मे लीन अछि। एहन परिस्थिति में मिथिलहु कँ चुप रहब उचित नहि। ई काज केवल मिथिलहिक नहि थीक। वर्तमान सरकार सभक संस्कृति रक्षाक यत्न कए रहल अछि। आशा अछि, एहि सुयोग मे आनक संग-संग मिथिलहु कँ अपन संस्कृतिक रक्षा करबाक अवसर प्राप्त होएत एवं ओहि कार्य मे सफलता प्राप्त करत।

अथवा

लड़त सिपाही जा सीमा पर
हऽम अन्न उपजेबै
आमद सँ कम खर्चा करबै
बेसी अन्न बचेबै
असरा ने रखबै आन केर

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

असरा, आमद, बटुआ, पालक, रौदी

19. निम्नलिखित क्रिया सँ विशेषण बनाउ : 5

आनब, ओढ़बा, खायब, डाहब, मरब

20. निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द बनाउ : 5

अन्य देश, अन्य जन्म, अभिनय केनिहार, आँखिक सोझाँ, जे देबाक अछि

21. निम्नलिखित शब्दक सन्धि विच्छेद करू : 5
दुर्गति, विद्यालय, भोजनालय, कुम्हड़ौड़ी, तथैव
22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू : 5
नव, हमर, तोहर, चार, पापी
23. भारत छोड़ो आन्दोलनक वर्णन करू। 4
24. अशोकक साहित्यक परिचय दिअ। 4
25. भदइ सुखयलाक बाद आ धान दहयलाक बाद गरीब किसानक स्थितिक वर्णन करू। 4
26. 'भाव भरदुतिया विधान हे' कविताक भाव स्पष्ट करू। 4
27. देशक विकास मे जवान ओ किसानक योगदानक उल्लेख करू। 5
28. डॉ. जयकान्त मिश्रक जीवनी पर प्रकाश दिअ। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-१)

1. (ग) भीमराव अंबेदकर
2. (क) मंगल पाण्डे
3. (क) महेन्द्र मलंगिया
4. (क) अशोक
5. (क) विभा रानी
6. (ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
7. (ग) राधाविरह पर
8. (ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क
9. (क) वैद्यनाथ मिश्र
10. (क) विद्यानाथ झाक
11.

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) माँ	(घ) तारानन्द वियोगी
(ii) भरि छीपा भात	(ग) विभा रानी
(iii) बाबाक आत्मीयता	(ख) अशोक
(iv) लेभराह अन्हार मे एकटा इजोत	(क) महेन्द्र मलंगिया

12. (क) प्रकृतिक
    (ख) अस्पृश्य
    (ग) राजनीति
13. (i) शुद्ध
    (ii) अशुद्ध
    (iii) शुद्ध

14. (क) **रेडिओ**

आजुक युग मे विज्ञानक विकास दिनानुदिन आगाँ बढ़ि रहल अछि। एहि सँ असम्भवो कार्य सम्भव देखि पड़ैछ। केओ नहि अनुमान कए सकैत छल जे घरहि बैसल-बैसल कोसक दूरी पर गाओल गीत आ देल भाषण तत्कालहि अक्षरश: सुनिकए ज्ञान आ आनन्द प्राप्त कए सकत। मुदा आइ ओ सुगम रीति सँ सानन्द सुनल जाइछ। एहि आश्चर्यजनक घटनाचक्रक आधार अछि रेडियो।

एकर जन्मदाता भेलाह इटलीक मारकोनी साहेब। हुनके द्वारा एकर आविष्कार सन् 1921 ई. मे भेल। एकर सर्वप्रथम प्रचार इंगलैंड मे भेल। प्रचार दिनानुदिन बढ़ए लागल। आइ-काल्हि ई गाम-घर मे पसरि गेल अछि।

एकर सिद्धान्त विचित्रे अछि। बेतारक तार एकर आधार अछि। जखन केओ व्यक्ति बजैछ तखन ओहि व्यक्ति द्वारा उच्चरित शब्द सँ वायुमंडल मे कम्पन होइछ ओ कम्पन द्रुतगति सँ भ्रमण करैछ। यंत्र ओकरा धारण करैछ। ओहि सँ ध्वनि उत्पन्न होइछ। ओएह ध्वनि लोक सुनैछ। शब्द आ ध्वनिक स्थान कँ जोड़ए हेतु तारक आवश्यकता नहि होइछ।

एकर मुख्य अंग थीक ब्रॉडकास्टिंग। एहि लेल स्थान नियत रहैछ। ओतए सँ समाचार प्रेषित कएल जाइछ। एहि कार्यक लेल एक स्टेशन रहैछ जे ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन कहबैछ। समाचार वायुपूर्ण घर मे एक यंत्रक आगाँ कहल जाइछ। ओहि यंत्रक नाम अधि 'माइक्रोफोन'। वायु द्वारा ओहि समाचारक शब्दकंपन दूर देश तक लए गेल जाइछ। ओहि दूरस्थ स्थान पर लोक रेडियोसेट रखैछ। जहि स्टेशनक विषय ज्ञात करबाक इच्छा होइछ ताहि स्टेशनक स्थान पर लोक रेडिओक तार स्थिर कए दैछ। समाचार एहि तरहेँ सुनबा मे अबैछ जेना केओ व्यक्ति निकट स्थान मे बैसिकए बाजि रहल होअए।

एहि सँ अनेको लाभ होइछ। देश-विदेशक वार्त्ता भटैछ। कलापूर्ण कविता, कमनीय कथा, नूतन नाटक, अभिनव आलेख आदिक स्पष्ट पाठ लोक घरहि बैसल सुनैछ। ई शिक्षाप्रचारक क्षेत्र मे क्रांति उत्पन्न कएलक अछि। पैघ-पैघ विद्वान्क भाषण सुनि लोक महान् लाभ प्राप्त करैछ। रेडियो सँ हानि बड़ थोड़ होइछ। धनी आ विलासी व्यक्ति धनक मोह छोड़ि दैछ। ओ समयक मूल्य बिसरि जाइछ। कोनहु वस्तुविशेष संबंधी भाषणक द्वारा जनता कँ उभाड़ल जाए सकैछ जे महाघातक सिद्ध होइछ।

रेडिओ सर्वहितकारी अछि। हानिकारक अंशक बहिष्कार सँ सोना मे सुगन्धि आबि

जाइछ। एकर बाढ़ि सँ विश्व कँ एक सूत्र मे बान्हिकए ज्ञानक प्रत्येक क्षेत्र मे विकास प्राप्त कएल जाए सकैछ।

14. (ख) **स्त्रीशिक्षा**

आजुक प्रगतिशील युगमे स्त्रीशिक्षा परमावश्यक अछि। स्त्री कँ देशक धारासँ जोड़क लेल शिक्षाक व्यवस्था केनाइ ओही रूपँ आवश्यक अछि जाहि रूपँ भोजन-वस्त्र। जाधरि देशक महिला शिक्षित नहि हेतीह ताधरि राष्ट्रक अभ्युदयक मात्र एकटा कल्पना होएत आर किछु नहि। पुरुष शिक्षा पबैत छथि लेकिन स्त्रीक शिक्षा लेल लोक ओहन कारगार व्यवस्था नहि करैत छथि। लोककँ सतत ध्यान राखक चाही जे जीवन-रथक दू गोट पहिया अछि पुरुष आ स्त्री। जँ एकटा पहिया ठीक रहत आ दोसर नहि तँ कखनो गाड़ी चलि नहि सकत। तँ स्त्री शिक्षा दिस ध्यान देब व्यक्ति, समाज आ राष्ट्रक कर्त्तव्य होइत अछि।

समाज मे स्त्रीक स्थान बड़ पैघ मानल गेल अछि। ई जननी मानल गेल छथि। हिनक महत्त्वक जतेक वर्णन करब से कम होएत। उक्ति अछि ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

वास्तव मे समाज मे ई भिन्न-भिन्न रूपमे हमरा लोकनिक समक्ष छथि। ई छथि राष्ट्रक भावी संततिक भाग्यक निर्माण करएवाली राष्ट्रमाता। समाजक प्रतिष्ठा राखएवाली स्त्री, पतिक जीवनकँ पूर्ण कएनिहारि अर्द्धांगिनी, गृह-भार उठौनिहारि गृहिणी, पतिक जीवन कँ सफल आ पूर्ण कएनिहारि पत्नी आ संततिक जन्म देनिहारि जननी। अतः हिनक स्थान समाज मे बड़ पैघ आ पूज्य मानल गेल अछि। एहि गृहलक्ष्मी कँ शिक्षा देब समाजक बड़ पुनीत कर्त्तव्य अछि।

आजुक प्रगतिशील युग मे स्त्री कँ शिक्षित करब अनिवार्य अछि कारण शिक्षाक अभाव मे ओ पशुतुल्य बनल रहि जेतीह। शिक्षा हुनका मे आत्मनिर्भरता आनि प्रगतिक पथ पर अग्रसर करतनि। ओ अपन संतानक चरित्र-निर्माण मे सहायक सिद्ध भए सकतीह। ओ अपन कर्त्तव्यक पालन कए पुरुष कँ पुरुषार्थक पुण्य फल प्राप्त करएबा मे सफल भए सकतीह। हुनका मे सद्विवेकक भावना जागत। हुनक संकुचित हृदय विशाल भए जाएत। शिष्टाचारक शिक्षा सामाजिक सुधार करत। परिवारक आय-व्ययक हिसाब-किताब राखि पारिवारक आर्थिक स्थिति कँ मजबूती प्रदान करतीह। घरक नीक व्यवस्था सँ पुरुष जीवन शान्तिमय आ सुखद होएत। स्वच्छता, सुरक्षा आ गृहकार्यक समयोचित प्रबन्ध सँ सुख-शान्ति आ सामंजस्यक केन्द्र परिवार कँ बनौतीह जाहि सँ हुनका लोकनिक जीवन सुखमय होएत।

एहि तरहँ स्पष्ट अछि जे आजुक भौतिकवादी युग मे व्यक्ति, समाज आ राष्ट्रक सर्वांगीण विकास लेल स्त्री शिक्षा परमावश्यक अछि।

14. (ग) **सहकारी खेती**

जँ अनेक व्यक्ति साझी भए मिलिजुलि कए एकठाम खेती करथि तँ ओ खेती सहकारी खेती कहाओत। आजुक युग मे एहि तरहक खेतीक उपयोगिता स्पष्ट देखि पड़ैछ, कारण कृषकक अवस्था गेल-गुजरल अछि ओ हुनका जमीन आ खेतीक साधन अपर्याप्त छनि। एहि लेल सहकारी खेतीक पद्धति चलल अछि।

शहर मे सहकारी व्यवसाय चलैछ। दस ठाम दस स्थान मे कार्य कएनिहार व्यक्ति सहकारी रूपेँ भोजन-व्यवस्था चलबैछ। एहि मे बरोबरि-बरोबरि पूँजी लगबैछ। एहि सँ बरोबरि लाभ होइछ। यैह व्यवस्था अछि सहकारी खेती मे। मुदा जँ केओ व्यक्ति अधिक श्रम करत तँ ओकरा अतिरिक्त पारिश्रमिक भेटतैक।

देशक अधिकांश भाग मे साझी परिवारक व्यवस्था आजुक समय मे छिन्न-भिन्न भए रहल अछि। फलतः, जमीन छोट छीन कोला मे बाँटिकए राइछित्ती भए रहल अछि। एहि सँ कृषि मे खर्च अधिक, लाभक स्थान मे मूरहु मे हानि, आ कुव्यवस्था सब कँे अस्त व्यस्त बनौने रहैछ। एहि हेतु घटल आदमी सब दिन घाटा मे रहैछ। एहि स्थिति मे सहकारी कृषि पद्धति लेल आवश्यक देखि पड़ैछ।

एहि पद्धति सँ अनेक लाभ अछि। ई देशक हेतु उपयुक्त अछि। छोट-छोट कृषक पैघ पैमानाक कृषि सँ लाभ उठाए सकताह। खेत, पूँजी तथा श्रम एकत्र कए समुचित उपयोग मे लगाओल जाइछ। फलतः, भूमिक विभाजनक समस्या नहि उठि सकैछ। एहि सँ कृषिक विकास सम्भव भए जाइछ। एहि सँ लाभ उठौनिहार जनताक गरीबी दूर होइछ।

एहि पद्धतिक प्रयोग कैक राज्य मे भए रहल अछि। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में सहकारी फार्म व्यवस्था चलि रहल अछि। अपनहुँ बिहार राज्य मे कइएक वर्ष सँ सहकारी कुसियार समिति चलि रहल अछि।

सहकारी कृषि-पद्धति वस्तुतः देशक लेल महाउपकारी अछि। सम्मिलित कुटुम्ब कँे कात करबाक मुख्य कारण होइछ भूमि, मुदा एहि पद्धति कँे अपनौला सँ भूमिक उपविभाजन तथा उपखण्डनक प्रश्ने नहि उठैछ। फलतः कृषिक विकास मे सहायता भेटैछ, उपज मे वृद्धि होइछ, खाद्यान्नक समस्याक बहुत किछु समाधान होइछ, निर्धनताक पलायन होइछ आ देशक महान् उपकार होइछ। एहि कार्य लेल सरकार ओ

जनताक सुन्दर सहयोग अपेक्षित अछि। एकर सफलता पर समाज आ राष्ट्रक उन्नति निर्भर करैछ। अतएव प्रत्येक देश हितैषीक कर्त्तव्य होइछ एहि उपकारी कार्य मे सहायता प्रदान करब।

14. (घ) **बाढ़ि**

जलक स्वभाव अछि जे ओ नीचाँ दिस होइत बहत। तेँ साधारण रूपेँ जल रहने धार आ नदीक पानि किनहेरिक बीच घेरल रहैछ मुदा विशेष समय मे विशेष कारण सँ अधिक जलक आगमन होइछ। फलतः, ओकर किनहेरि सँ जल ऊपर आबि जाइछ। यैह अतिरिक्त जल धारक कातक घर, आड.न आ खेत-पथार मे पसरि जाइछ। अतिरिक्त जलक यैह प्रसार थीक बाढ़ि।

कहियो काल मूसलधार पानि पड़ैछ। अधिक पानि केँ धार अथवा नदी रोकि रखबा मे असमर्थ भए जाइछ। अतएव अतिरिक्त जल चारूकात पसरि जाइछ। कहियो काल पर्वत शिखर परहक बर्फ वायुक झोंक सँ पघिल जाइछ। एहि हेतु जलक परिमाण मे वृद्धि भए जाइछ। धारक पेट उत्थर भएने थोड़बो जल बढ़ने पानि उछलि जाइछ। एहि सब कारण सँ उत्तर बिहार अर्थात् मिथिला मे कमला आ कोशी नदी मे बड़ बाढ़ि अबैछ।

बाढ़ि लोक केँ बड़ कष्ट पहुँचबैछ। घर-आड.न टापू भए जाइछ। जीव-जन्तु जान सँ हाथ धोइछ। माल-मवेशी खतरा मे पड़ि जाइछ। लोक गृहविहिन आ धनहीन भए जाइछ। खेत-पथारक उपजल अन्न दहाए जाइछ। अकाल विकराल रूप बनाकए देश पर टूटि पड़ैछ। फलतः, गृहविहिन जनता अन्नक हेतु तरसैछ।

बाढ़ि सँ लाभो होइछ। बाढ़िक नवीन जल मे पाँक मिलल रहैछ। तेँ जेम्हर देने बाढ़िक पानि पसरैछ, तेम्हर-तेम्हर पाँक पड़ैछ जे उपजाक लेल अमूल्य खादक काज करैछ। भूमिक उर्वराशक्ति बहुत बढ़ि जाइछ। सुखाएल पोखरि-झाँखरि भरि जाइछ जे जलक भण्डार बनि लाभप्रद प्रमाणित होइछ।

अतः स्पष्ट अछि जे बाढ़ि हानिकारक आ लाभप्रद दुनू अछि। यदि ओकर उत्पातक नियंत्रण कएल जाए तँ नोकसानक स्थान पर लाभेलाभ भेनिहार थीक। मुदा नियंत्रण कठिन कार्य थीक आ एहि मे अधिक व्ययक काज पड़ैछ। ई व्यय ने केवल सरकारे कए सकैछ आ ने केवल जनता। दुनू केँ मिलिजुलि कए कार्य कएला सँ सफलता भेटब सुगम भए जाइछ। शारीरिक श्रमदान दए जनता सरकारक सहयोग कए बाढ़ि केँ काबू मे आनिकए समाज आ देशक संग राष्ट्रक महान उपकार करबाक भागी

भए सकैछ। तैँ सबहि व्यक्तिक आ सबल संस्थाक पावन कर्त्तव्य होइछ जे ओ यथासाध्य बाढ़िग्रस्त जनता ओ जीव कँ सहायता प्रदान कए देशहितसाधना मे सहयोगी बनथि।

15. शीर्षक : स्वतंत्रता आंदोलन आ मिथिला

मिथिला स्वतंत्रता आंदोलन मे सेहो ओहिना अग्रणी रहल जहिना सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं कला मे अगुआ रहल। मिथिला समाजवादी आंदोलनक केन्द्र बिन्दु बनल छल। मुदा एहि विषयक इतिहास अत्यल्प अछि। प्रयोजन छैक स्वतंत्रता आंदोलन मे मिथिलाक योगदान संबंधी इतिहास लिखबाक।

प्रदत्त शब्द संख्या–108

संक्षिप्त शब्द संख्या–36

16. आदरणीया माँ,

सादर प्रणाम्। झंझारपुर

10.12.2016

अहाँक पत्र भेटल। पत्र पढ़ि हर्षित भेलहुँ। ई बुझि मोन खुशी सँ नाचि उठल जे सलोनीक विवाह स्थिर भए गेलनि आ हुनक विवाह मार्च मे भए जएतनि। आशा करैत छी जे तावत् हमरो परीक्षा सम्पन्न भए जाएत।

एखन हमर विद्यालय मे इम्तिहान चलि रहल छैक। हम नित्य पूर्ण तैयारीक संग परीक्षा देबा लेल जाइत छी। भगवानक कृपा आ अहाँ लोकनिक आशीर्वाद सँ प्रश्न पत्र सन्तोषप्रद अछि। आशा करैत छी जे शेष प्रश्न पत्र सेहो अनुकूले रहत। हमर स्वास्थ्य ठीक अछि।

बाबूजी दिल्ली सँ कहिया घरि घुरताह? हुनका हमर प्रणाम् कहि देवनि। शेष कुशल् सलोनी कँ हमर आशीष।

श्रीमती आशा देवी अहाँक

रोड नं.–7 रमेश

राजीव नगर

17. प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामलोचनशरणक निबन्ध 'मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा' सँ उद्धृत कएल गेल अछि। सांस्कृतिक दृष्टि सँ मिथिलाक सीमा कँ एहि मे देखाओल गेल अछि।

मिथिलाक संस्कृति–भाषा, धार्मिक आचार–विचारक संस्कृति जतबा दूर मे पसरल छल, ताहि मे ह्रास भेल। बौद्ध एवं जैन धर्मक प्रचारक कारणेँ मिथिलाक सीमा सेहो कम होइत गेल। बहुत ठाम जतए मिथिलाक अपन पंचांगक प्रचलन छल, सेहो एहिठाम सँ दूर होइत गेल। नव पर सृष्टिक समग्र लोक अपन–अपन संस्कृतिक रक्षार्थ चेष्टारत छथि। एहन परिस्थिति मे मिथिलांचल आ एतुक्का जनता कँ मुँह पर चाभी लगाए चुप्प बैसब उचित नहि। संगहिँ सरकार दिस सँ सेहो प्रयत्न होएबाक चाही।

अथवा

प्रस्तुत पाँती रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'जय जवान : जय किसान' कविता सँ लेल गेल अछि। ई कविता हिनक पोथी 'स्वतंत्रता अमर हो हमर' मे संकलित छनि।

भारत पर 1962 ई. मे चीनी आक्रमण भेल छल। तकरा बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री 'जय जवान : जय किसान'क नारा देने रहथि। भारतक सेना आ किसानकेँ जगएबाक लेल ई कविता लिखल गेल अछि। कवि कहैत छथि जे सिपाही सीमा पर शत्रु सँ लड़त। सिपाही जँ घर सँ निश्चिन्त रहत तखन ने पूर्ण मनोयोग सँ दुश्मनक सामना करत। तेँ कृषक वर्ग बेसी अन्न उपजाबक लेल प्राणपण सँ लागल छथि। हुनका लोकनि कँ अनकर आसरा पर रहक नहि छनि। एहि लेल किएक ने खर्चो मे कटौती करए पड़नि, ताहू लेल किसान लोकनि तैयार छथि।

18. असरा –हम अनका पर असरा नहि रखैत छी।

आमद– कृषि मे आमद बेसी नहि छैक।

बटुआ – उग्रू बाबू बटुआ गर्दनि मे लटकौने रहैत छथि।

पालक – यदुआ नीक पशु–पालक अछि।

रौदी – दू बरख सँ रौदी हरान कएने अछि।

19.

क्रिया	विशेषण
आनब	आनल
ओढ़ब	ओढ़ल
खायब	खायल
डाहब	डाहल
मरब	मुइल

20. अन्य देश – देशान्तर

अन्य जन्म – जन्मान्तर

अभियनय केनिहार – अभिनेता

आँखिक सोझाँ – प्रत्यक्ष

जे देबाक अछि – दातव्य

21. दुर्गति – दुः + गति

विद्यालय – विद्या + आलय

भोजनालय – भोजन + आलय

कुम्हड़ौड़ी – कुम्हड़ + औड़ी

तथैव – तथा + एव

22. नव — 𑒢𑒫

हमर — 𑒯𑒧𑒩

तोहर — 𑒞𑒼𑒯𑒩

यार — 𑒨𑒰𑒩

पापी — 𑒣𑒰𑒣𑒲

23. स्वतंत्रता संग्राम मे क्रांतिकारी युवकक भूमिका उल्लेखनीय अछि। प्रथम विश्वयुद्ध आ रूसी क्रांतिक बाद भारत मे सेहो क्रांतिकारी आंदोलनक सूत्रपात भेल। राम प्रसाद विस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त आ चन्द्रशेखर आजाद सदृश स्वतंत्रता सेनानी लोकनि क्रांतिकारी कार्यकलाप मे विश्वास रखैत छलाह। हिनका सभक बलिदान सँ स्वतंत्रता संग्राम कँ गतिशीलता भेटलैक से स्वराज्य कँ लग अनबा मे सफल भेल।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मे सेहो वामपक्षक उदय भेल। समाजवादी विचारधाराक अगुआ बनलाह जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस। हिनका सभ कँ अनेक बिन्दु पर गाँधीजी सँ वैचारिक मतभेद रहनि, तथापि 1936 ई. आ 1937इ. मे जवाहरलाल नेहरू तथा 1938 ई. आ 1939 ई. मे सुभाषचन्द्र बोसक कांग्रेस अपन कार्यकारिणी समिति मे आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा अच्युत पटवर्धन सन समाजवादी कँ रखलनि। बाद मे नेहरू आ सुभाषचन्द्र बोस मे सेहो वैचारिक मतभेद भए गेल आ बोस स्वतंत्रता संग्राम कँ क्रांतिकारी मोड़ देबाक लेल अग्रसर भए गेला।

द्वितीय विश्वयुद्ध संग भारतीय स्वतंत्रता गति मे तीव्रता आबि गेल। 1942 ई. मे 'अंग्रेज, भारत छोड़ू'क नारा देल गेल आ अन्तत: अंग्रेज कँ भारत छोड़हि पड़लैक।

24. अशोक मैथिलीक यशस्वी लोकधर्मी रचनाकार छथि। मधुबनी जिलाक लोहना गाम मे 18 जनवरी, 1953 कँ हिनक जन्म भेलनि।

अशोक अनेक विधा मे लिखैत छथि। चक्रव्यूह (कविता-संग्रह), ओहि रातिक भोर तथा मातवर (कथा-संग्रह) आ मैथिल आँखि (निबन्ध-समीक्षा) हिनक चर्चित पोथी छनि। पृथ्वीपुत्र (ललितक उपन्यासक नाट्य रूपान्तर) तथा संवाद (संपादन) मैथिलीक बेछप पोथी अछि। पत्रिकाक सम्पादन मे हिनक मौलिकता 'संधान' मे तँ देखार होइते अछि, 'घर-बाहर' सेहो ओहि क्षमता-प्रतिभाक साक्षी अछि। सोवियतसंघक यात्रा-कथा जतबे प्रकाशित अछि से बेजोड़ अछि।

25. मिथिलाक खेतिहर किसान गरीब होइछ। सूदी पर टाका उठाए खेती मे लगबैत छथि आ जीजान लगाकए कृषि कार्य करैत छथि। मुदा जखन जजाति तैयार होअए पर रहैत अछि आ कृषक समुदाय फसिल कटबाक ओरिआओन मे लागल रहैत छथि तखने बाढ़िक विभीषिका आबि हुनका लोकनिक आशा पर तुषारापात कए दैछ। फसिलक संग घर-दुआरि सेहो इन्द्र भगवानक कोप मे दहाए जाइछ। यैह हाल रौदीक समय होइछ। पटौनीक व्यवस्था गाम-घर मे ओतेक नहि रहैत छैक। समय पर वर्षा नहि भेला पर धानक बीचा सभ झड़कि जाइछ। गरीब किसान लग कोनो उपाय नहि रहि जाइछ। ओकर सबहिक नेना हाय-हाय करैत रहैछ, एहन दृश्य देखि एहन सन लगैत अछि जेना हृदय फाटि जाएत।

26. 'भावि भरदुतिया विधान हे' शीर्षक कविता कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' क लिखल अछि। एहि कविता मे मिथिलाक भरदुतिया पावनिक वर्णन आ ताहि माध्यम सँ भाइ-बहिनक स्नेह-भावक प्रगाढ़ताक उल्लेख अछि। भरदुतिया पावनिक अवसर पर बहिन घर-आँगन आ दुआरि कँ नीपि-पोति चकचका लेने अछि। अरिपन दए पीढ़ी कँ बीच आँगन मे राखि देने अछि। बिगजी लेल मखान आदिक ओरिआओन कएने अछि। भटवर, तिलकोरक तड़ुआ, गोटा दूधक पोड़ल दही आदिक विन्यास भोजन मे कएने अछि। जँ कि कोनो साइकिलक घंटी कान मे पड़ैछ दुआरि दिस दौगि जाइछ, सूर्यास्त धरि ओकर सखीगण कतेको बेर भाइक बाट देखि अबैत छैक। परञ्च भाइ नहि अबैत छै। बहिनक दुनू आँखि कमला-बलानक रूप धए लैत छैक। ओ अनुभव करैछ जे मायक मुइलाक बाद नैहर सुन्न भए जाइत अछि। भाइक कोन दोष। भाउजक हृदय मे मायक स्नेह कतए सँ आओत।

भरदुतिया मे भाइक नहि आएब कतेक पीड़ादायक होइछ, तकर अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल आ मार्मिक ढ़ंग सँ कवि कएलनि अछि।

27. कोनो देश सुरक्षित आ आत्मनिर्भर तखने रहि सकैछ जखन ओहि देशक किसान आ सैनिक अपन-अपन काज पूर्ण मनोयोग सँ करथि। सेना सीमा पर तैनात रहि राष्ट्र कँ बाहरी शत्रु सँ बचबैछ आ कृषक वर्ग खेत मे दिन-राति परिश्रम कए सैनिक आ देशवासी लेल अन्न उपजबैछ। किसान स्वयं कष्टित रहि अनकर पेट भरैछ। तेहिना सैनिक अपन परिवार, धियापुता सँ दूर रहि बाहरी शक्ति सँ राष्ट्रक रक्षा करैत छथि। दुनू गोटा कँ विभिन्न ऋतुक मारि सहए पड़ैछ। पर्वत सभ पर तैनात सेना ओ खेत मे कार्यरत किसान कँ सभ ऋतु मे अपन-अपन काज करए पड़ैत छनि।

28. डॉ. जयकान्त मिश्रक जन्म मधुबनी जिलाक गजहारा ग्राम मे 20 नवम्बर, 1922 ई. मे भेल। हिनक पितामह म. म. जयदेव मिश्रक एवं पिता म. म. उमेश मिश्र छलथिन। 1943 ई. मे ओ प्रयाग विश्वविद्यालय सँ अंग्रेजी मे एम.ए.कए 1944 ई. मे ओही विश्वविद्यालय मे प्राचार्य एवं अंग्रेजीक व्याख्याता पद पर नियुक्त भेलाह, जतए सँ ओ विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अंग्रेजीक पद सँ सेवानिवृत भेलाह। 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' शोध-प्रबंध पर हिनका पी-एच.डी. क उपाधि प्रदान कएल गेल।

मैथिली आंदोलनक अग्रणी डॉ. जयकान्त मिश्रक मौलिक कृति अछि- ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (दू खंड), वृहत् मैथिली शब्द कोष (दू खंड), तिरहुता ककहरा, मैथिली मे प्राथमिक शिक्षा आ ए इन्ट्रोडक्शन टू फॉक लिटरेचर (दू खंड)। हिनका द्वारा संपादित कृतिक नाम अछि-विद्यापतिक गोरक्षविजय, किरतनिञा नाटक, ज्योतिरीश्वरकृत मैथिली धूर्त्तसमागम, लाल कविक गौरीस्वयंवर, नन्दीपतिक श्रीकृष्ण केलिमाला, शिवदत्तक गौरीपरिणय आदि।

मैथिली भाषा आंदोलनक इतिहास मे डॉ. मिश्रक स्थान सर्वोपरि अछि। प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली कँ स्थान दिअएबाक बिन्दु होअए अथवा साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न-जयकान्त मिश्रक योगदानक उल्लेख अपरिहार्य अछि। मिथिला, मिथिलावासी, मैथिलीक जीवन भरि उत्थानक आकांक्षी डॉ. जयकान्त मिश्रक निधन 03 फरवरी, 2009 ई. कँ भए गेलनि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-२)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णाक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

10×1=10

1. राष्ट्रपति द्वारा श्रेष्ठ ओ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार गोदावरी दत्त कँ देल गेलनि

   (क) 1980 ई. मे (ख) 1970 ई. मे

   (ग) 1975 ई. मे (घ) 1990 ई. मे

2. अनेकता मे एकताक प्रतीक अछि

   (क) फ्रांस (ख) भारत (ग) चीन (घ) बंगलादेश

3. 'जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ' निबन्धक लेखक थिकाह

   (क) जयकान्त मिश्र (ख) दुर्गानाथ झा 'श्रीश'

   (ग) राधाकृष्ण चौधरी (घ) इन्द्रकान्त झा

4. 'उपसंहार'क उपन्यासकार छथि

   (क) लिली रे (ख) वीणा ठाकुर (ग) नीता झा (घ) इन्दिरा झा

5. प्रबोध साहित्य सम्मान सँ सम्मानित छथि

   (क) रामदेव झा (ख) प्रभास कुमार चौधरी

   (ग) राजमोहन झा (घ) महेन्द्र

6. राजमोहन झा कँ अकादेमी पुरस्कार भेटलनि

   (क) गल्तीनामा पर (ख) टिप्पणीत्यादि पर

Cont. ....

(ग) आइ कालिह परसू पर (घ) झूठ-साँच पर

7. 'पर्यावरण'क लेखक छथि

(क) दिनेश्वर लाल 'आनन्द' (ख) मोहन भारद्वाज

(ग) रमानन्द झा 'रमण' (घ) रमण झा

8. भाग्यनारायण झा लिखित नाटक छनि

(क) बसात (ख) गहना (ग) मनोरथ (घ) अन्तिम प्रणाम

9. भारत छोड़ो आंदोलन भेल

(क) 1942 ई. मे (ख) 1941 ई. मे (ग) 1938 ई. मे (घ) 1944 ई. मे

10. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना भेल

(क) दिसम्बर 1885 ई. मे (ख) मार्च 1884 ई. मे

(ग) 1886 ई. मे (घ) 1894 ई. मे

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) रतनेश्वर मिश्र	(क) पर्यावरण
(ii) उमाकान्त	(ख) भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेदकर
(iii) भाग्यनारायण झा	(ग) क्रैक
(iv) दिनेश्वर लाल 'आनन्द'	(घ) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

(क) मानि लिय से ओकर ....क्रैक भेल। (नाम/काज)

(ख) अर-दर गबैत खूब रेस मे ....चलबैत रहैए। (टेम्पो/ट्रक)

(ग) ....गाड़ी स्टार्ट कय चलि पड़ल। (क्रैक/सुमन)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

(i) अंबेदकरक निधन 1960 ई. मे भय गेलनि।

(ii) क्रैक टेम्पो नहि चलबैत अछि।

(iii) क्रैक हरदम दाँत चियारने बत्तिसी देखबैत रहैए।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

(क) हाट (ख) रिक्शावाला (ग) देशाटन (घ) छात्रावासक जीवन

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

लक्ष्मीनाथ आजीवन काव्य-साधना मे तल्लीन रहलाह। हिनक काव्य-रचनाक प्रमुख विषय छल राम आओर कृष्ण लीलाक वर्णन। एकर अतिरिक्त ई विभिन्न तरहक

उपदेशात्मक भजनक रचना सेहो कथलनि। सन्तक लेल गृहविहीन होयबाक विधान अछि तथा हुनका लेल कतहु अधिक दिन ठहरि साहचर्य बढ़ायब सेहो निषिद्ध अछि। मुदा लक्ष्मीनाथ एहि प्राचीन सिद्धान्त सँ विमुख भय परिवार आओर समाजक बीच रहि काव्यक रचना कयलनि एवं क्षेत्रीय रीति-रिवाज, विश्वास, दृश्य आदि अनुभवक समावेश अनिवार्य रूपेँ अपन काव्य मे कयलनि।

16. अनुपस्थिति सँ सम्बद्ध एकटा पत्र प्रधानाध्यापक कँ लिखू। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ एहि सँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्ग सँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो, यदि एहि मे किछु साहित्य पौल जाय आ साहित्य सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

अथवा

प्राचीन काल सँ बंगाली छात्रक सम्पर्क मिथिला सँ रहल अछि। अतएव ओम्हर मिथिलाक संस्कृति बहुत आगू धरि बढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला पश्चिम सँ जतेक गमाय देलक अछि, पूब मे ओतेक पाबियो लेलक अछि।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

अवशिष्ट, प्रवास, उन्मूलन, महती, अबरजात

19. निम्नलिखित सर्वनाम सँ विशेषण बनाउ : 5

अहाँ, ओ, एहि, तों, हम

20. समास ककरा कहबैक? एकर भेद सोदाहरण लिखू। 5

21. निम्नलिखित शब्दक सन्धि विच्छेद करू : 5

निरर्थक, दुष्कर, दिगम्बर, अहंकार, महौषधि

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

राम, नगर, पीयर, तकिया, ओछान

23. वनक उपयोगिता पर अपन विचार प्रस्तुत करू। 4

24. बौद्ध धर्मक प्रति अम्बेदकरक आस्था केहन छल? ओकर प्रभाव हिनका पर केहन पड़ल? 4

25. टेम्पो पर सवार महिलाक सौन्दर्यक वर्णन करू। 4

26. स्वतंत्रता आन्दोलन मे गाँधीजीक योगदानक उल्लेख करू। 4

27. महेन्द्र मलंगियाक नाटककारक छवि सँ परिचित कराउ। 5

28. बाबाक चरित्र चित्रण करू। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-२)

1. (क) 1980 ई. मे
2. (ख) भारत
3. (क) जयकान्त मिश्र
4. (क) लिली रे
5. (ग) राजमोहन झा
6. (ग) आइ काल्हि परसू पर
7. (क) दिनेश्वर लाल 'आनन्द'
8. (ग) मनोरथ
9. (क) 1942 ई. मे
10. (क) दिसम्बर 1885 ई. मे
11.

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) रतनेश्वर मिश्र	(घ) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा
(ii) उमाकान्त	(ग) क्रैक
(iii) भाग्यनाराण झा	(ख) भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी.आर. अंबेदकर
(iv) दिनेश्वर लाल 'आनन्द'	(क) पर्यावरण

12. (क) नाम
    (ख) टेम्पो
    (ग) क्रैक
13. (i) अशुद्ध
    (ii) अशुद्ध
    (iii) शुद्ध
14. (क) **हाट**

प्राचीन काल मे मानव जीवनक स्तर बड़ साधारण छल। सादा रहन-सहन, सादा भोजन आ सादा ओढ़न-पहिरन सभ्यता आ संस्कृतिक सौन्दर्यक बोधक छल।

परंच आइ-कालि्ह पूर्व आ पश्चिमक सम्पर्क सँ आ आधुनिक प्रगतिशील विश्वक विलासी जीवनक उदय सँ नवीन रंग मे रंगल देशवासीक दैनन्दिन जीवनक आवश्यकता दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि। जे किछु होअए, मुदा मानए पड़त जे प्राचीन काल सँ आइ धरि मानवक आवश्यकता-पूर्तिक सब सामान सबहि कँ अपनहि सँ निर्माण करब कहियो सम्भव नहि रहल आ ने रहत; परंच, जीवनयापन लेल ओहि आवश्यकताक पूर्ति अनिवार्य अछि। अत: पहिनहि सँ प्रथा अछि जे गाम आ नगरक लोक अपन आवश्यकता सँ फाजिल वस्तुजात एक निश्चित स्थान पर एक निश्चित समय मे उपस्थित करैत आएल अछि। ओतए चारूकातक लोक आबिकए अपन आवश्यकताक अनुसार सामान कीनि-बेसाहि लैछ। सूर्यास्तक काल मे ओ बाजार उठैछ। लोक अपन-अपन गामक रास्ता धरैछ। यैह बाजार थीक हाट।

जहिना-जहिना मानवक आवश्यकता बढ़ैछ तहिना-तहिना हाटक संख्या अधिक भेल जाइछ आ ओकर विस्तार होइछ। परञ्च ओकर विकास आ विस्तारक श्रेय मुख्यतया ओहि स्थान के रहैछ जतए हाट लगैछ। एहि हेतु हाट लगएबाक स्थानक चुनाव होइछ।

हाट पर क्रय-विक्रय हेतु सामानक प्रचुरता रहैछ। प्रतिदिन जीवनक व्यवहार मे अएनिहार वस्तुक बिक्री अधिक होइछ। मुख्यतया चाउर, दालि, अन्य अन्न, वस्त्र, नोन, तेल, चीनी, मसाला, माछ-मांस, पान, तरकारी, बरतन-बासन आदि वस्तु बिकाइछ। धीयापुताक लेल रंगविरंगक खेलौना आ बनल सामानक संग मनिहारिक वस्तुजात बिकाइछ।

हाट सँ लोक कँ अनेको लाभ होइछ। दैनिक आवश्यकताक पूर्ति होइछ। विभिन्न प्रकारक सूचना भेटैछ तथा विभिन्न विषय पर विचार-विमर्शक उपयुक्त इष्टमित्रक सहायकता भटैछ। शहर जएबाक प्रयोजन हटि जाइछ। गृहउद्योग आ ग्रामोद्योगक वस्तुक उपयोग सँ सब कँ प्रोत्साहन प्राप्त होइछ।

एहि मे किछु त्रुटि देखि पड़ैत अछि। हल्ला-गुल्ला लोकक महान् शत्रु थीक। धूलि-धूसरित वस्तुजातक उपयोग स्वास्थ्यक हेतु हानिकाकर होइछ। हानिकारक माँछी आ कीड़ा सड़ल-गलल सामग्री पर बैसिकए संक्रामक रोगक प्रचार करैछ। गिरहकट्ट आ चोरक चलती होइछ।

सबकिछु होइत बूझि पड़त जे हाट सँ देहात कँ अनेको लाभ होइछ। एहि लेल एकर त्रुटिक निवारण परमावश्यक अछि। एकर सुरक्षा आ सुविधा सँ सबहि व्यक्ति

कँ लाभ भेनिहार थीक। बट्टी सँ प्राप्त पाइ सरकार द्वारा हाटक विस्तार मे लगाएब उचित थीक। हाटक उन्नति, विकास आ सुरक्षाक ध्यान राखब सबहि व्यक्तिक कर्त्तव्य थीक।

14. **(ख) <u>रिक्शावाला</u>**

आजुक युग विज्ञानक युग थीक। विज्ञानक चमत्कार सब कँ चकाचौंध कएने जाए रहल अछि। जाहि क्षेत्र मे नजरि पड़त ताहि क्षेत्र मे विज्ञानक देन विद्यमान देखि पड़त। यातायातक साधन सबल क्रान्ति उपस्थित कएने अछि। जँ आकाश मे वायुयान गनगन करैत उड़ैछ तँ बीच सड़क पर सनसन करैत चलनिहार बस भेटैछ, मुदा जाहि चौक पर दृष्टि पड़त रिक्शा टालकटाल देखि पड़त। ई तीन टाँगक गाड़ी अपन विशिष्टताक कारणेँ एक स्थान सँ दोसर स्थान जएबाक लेल एक प्रमुख साधन भए गेल अछि। जतए जएबाक होए, नगर अथवा देहातक चलतापुर्जा चौक पर ठाढ़ होउ, क्षणभरि मे रिक्शा आबि जाएत। एहि त्रिचक्रीय गाड़ी कँ चलओनिहार थीक रिक्शावाला।

रिक्शा रखिनिहार होइत छथि धनीमानी व्यक्ति मुदा चलौनिहार रहैछ साधारण स्थितिक निर्धन मनुष्य। ओकर फाटल-चीटल वस्त्र आ म्लान मुँह देखि सहजहि बूझि पड़त जे ओ रिक्शावला थीक। रिक्शा चलएबा मे बड़ कष्ट होइछ मुदा उपाय की? मरैत व्यक्ति की नहि करैछ। परिवारक निर्वाहक दोसर साधन नहि देखि लोक अपन जान पर खेलिकए, दिन-राति एक कए कठिन परिश्रम करैछ। ओकरा हेतु सब समय समाने अछि। हाड़ हिलौनिहार जाड़ मे शोर करैत देरी रिक्शा लए ओ हाजिर होइछ। लू चैलत गर्मी मे पसीना सँ लथपथ भेल ओ सड़क पर सवारी नेने जाइत देखि पड़ैछ। पानि पड़ए अथवा पाथर खसए, रिक्शावाला अपन काज पर डटल देखि पड़ैछ।

परंच सब रिक्शावालाक स्वभाव एक रंगक नहि होइछ। अपन चिन्ता, थकान आ भूख कँ मेटएबाक हेतु कतेको मद्यपान करैछ। एहि स्थिति मे ओकर बुद्धि मे व्याधि भए जाइछ। ओ धनक संचय करबाक अपेक्षा अपव्यय करैछ। फलतः, ओकरा कहियो पूरा नहि पड़ैछ। किन्तु रिक्शवाला धूर्त्त आ कपटी होइछ। ओ अपटी खेत मे रिक्शा पर चढ़निहार व्यक्तिक सर्वस्वक हरण करैछ ओ ओकरा जान कँ गाहक बनि जाइछ। तैयो लोक आलसी भेल जाइछ। पैदल चलब बड़ कठिन बूझि पड़ैछ। फलतः धनक अपव्यय होइछ।

तथापि स्पष्ट देखि पड़ैछ जे रिक्शावाला समाज-सेवक थीक। रिक्शा रखनिहार व्यक्ति कँ आमदनी बढ़ि जाइछ। बेकारीक समस्या किछु दूर सोझराइछ। तैयो रिक्शा पर

चलबाक दिनानुदिन बढ़निहार आवश्यकता कैँ कम करब थीक। श्रमक महत्त्व बूझि गरीब रिक्शावाला कैँ उचित भाड़ा देबक चाही। परञ्च सावधान रहक चाही जाहि सँ असम्भावित दुर्घटना नहि घटए। पशु–सदृश खटनिहार रिक्शावालाक प्रति सहानुभूति होअए आ ओकरा संग उचित व्यवहार होअए।

14. (ग) **देशाटन**

मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी अछि। ओ सदतिकाल अपन बुद्धिक विकासक हेतु इच्छुक रहैछ। अपन समीपस्थ वस्तुजातक ज्ञान प्राप्त कए ओ दूरस्थ वस्तुपर्यन्तक जानकारी हासिल करए चाहैत अछि। ओकर जिज्ञासा वृत्ति सर्वदा सजग रहैछ। कोनहु वस्तुविशेषक कारणक अनुसंधान करब, छानबीन करब आ पूर्णरूपेण ताकब ओकर स्वाभाविक प्रवृत्ति होइछ। थैह कारण थीक जे ओ अज्ञात, अगम आ अथाह स्थानक परिचय पएबाक हेतु उद्यत रहैछ। ओ अपन ज्ञान पिपासा कैँ शान्त करए हेतु पुस्तकक आश्रय ग्रहण करैछ परंच ओकर ज्ञान अपूर्ण रहैछ। अनुभित ज्ञान सँ वस्तुक साक्षात्कार नहि होइछ आ ने ओकर ठोस रूपे देखि पड़ैछ। एहि हेतु ओ भ्रमण कए विभिन्न स्थान मे स्थित सामानक सौन्दर्यविलोकन करैछ। यैह भ्रमण थीक देशाटन।

यद्यपि प्राचीन काल मे लोक देशाटन करैत छलाह तथापि हुनका लोकनिक देशाटन मुख्यतया तीर्थाटन होइत छल। भौगोलिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि स्थितिक जानकारी प्राप्त करबाक ओ ततेक इच्छुक नहि रहैत छलाह। आजुक युग वैज्ञानिक अछि तथा अन्वेषण आ अनुसंधान सँ ई अणुप्राणित अछि। एहि समय मे मानव अप्रत्यक्ष सँ अधिक प्रत्यक्ष कैँ महत्त्व दैछ। यैह कारण अछि जे ओ देशाटन–प्रेमी भए गेल अछि।

देशाटनक समय अछि शरद आ वसन्त ऋतु। मुदा छात्रक हेतु परीक्षोपरान्तक समय अधिक उपयोगी होइछ। भ्रमणकारी समवयस्क संगी होथि तँ उत्तम मुदा आचरणक पवित्रता, मिताहार, सत्यवादिता, सज्जनता, स्नेहशीलता, मधुरभाषिता आ स्वावलम्बनप्रियता आदि गुण अपेक्षित अछि।

देशाटन बड़ लाभप्रद होइछ। विविध विषयक जानकारी प्राप्त कएला सँ ज्ञानवृद्धि होइछ। देश–विदेशक प्रत्यक्ष ज्ञान सँ कूपमण्डूकताक विनाश होइछ आ उदारता उत्पन्न होइछ। स्वास्थ्यप्रद स्थान मे भ्रमण कएने स्वास्थ्यलाभ होइछ। यैह कारण अछि जे शिमला, मसूरी, राँची आदि स्थान मे लोक भ्रमण करैछ। राजनीतिक ज्ञानक उपार्जन होइछ। वाणिज्य–व्यवसाय मे उन्नति होइछ। तर्क–वितर्क सँ काज लेला पर बुद्धि मे कुशाग्रता अबैछ। सभ्यता आ संस्कृतिक आदान–प्रदान होइछ।

एतेक लाभप्रद देशाटन सँ मुँह मोड़ब उचित नहि। परंच आर्थिक संकट, पारिवारिक झंझटि, आलस्य एवं अन्धविश्वास एखन धरि देशवासी कँ देशाटन दिस सँ नजरि फेर देने छनि। आजुक उन्नतिशाली देश सर्वदा देशाटनक प्रिय रहल अछि। तँ अन्य देशक संग चलए हेतु देशाटन सँ लाभ उठाएब उचित अछि।

अतः ध्यान देबए पड़त जे देशाटन सँ लाभ उठाएब सबहक कर्त्तव्य थीक। सरकार देशाटन मे सुविधा देबए हेतु साकांक्ष भए रहल अछि। अवसर पाबिकए देशाटन सँ लाभ उठाकए अपन, समाज, देश आ राष्ट्रक उन्नति करब प्रत्येक देशवासीक कर्त्तव्य थीक।

15. शीर्षक : **<u>गृहस्थ सन्त लक्ष्मीनाथ</u>**

सन्त लेल गृहविहीन होएबाक विधान छैक मुदा सन्त लक्ष्मीनाथ परिवार आ समाजक बीच रहि काव्य-सृजन कयलनि। यद्यपि राम ओ कृष्णक लीला-वर्णन हुनक काव्यक मुख्य विषय छल परञ्च रीति-रिवाज आ आस्थाक समावेश सेहो हुनक पद मे भेटैत अछि।

प्रदत्त शब्द संख्या-80

संक्षिप्त शब्द संख्या-27

16. सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक,

न्यू हाई स्कूल, पटना।

विषय : वर्ग मे अनुपस्थिति रहला सँ सम्बद्ध।

महाशय,

सविनय निवेदन अछि जे हमर घर मे 11 दिसम्बर, 2016 ई. कँ गृहप्रवेशक आयोजन कएल गेल छल। तँ उक्त तिथि कँ हम अपन वर्ग मे उपस्थित नहि भए सकलहुँ।

अतः श्रीमान् सँ विनम्र निवेदन अछि जे ओहि दिनक अनुपस्थिति-दण्ड माफ करबाक कृपा कएल जाए। एहि लेल हम सदति अपनेक कृतज्ञ रहब।

पटना — अपनेक आज्ञाकारी

12/12/2016 — छात्र

सुरेन्द्र

एकादश वर्ग

क्रमांक- 10

17. प्रस्तुत गद्यांश 'राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा' शीर्षक निबन्ध सँ लेल गेल अछि। एकर लेखक थिकाह बाबू भोलालाल दास।

त्रिभाषा सिद्धान्तक प्रयोजन देशवासी मे वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न करब छल। एहि सिद्धान्तक अर्थ छल मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आ विश्वभाषाक अनिवार्यता एवं तीनूक सामंजस्य। प्रत्येक राज्य अपन-अपन मातृभाषा मे अपन-अपन खास सरकारी काज वा शिक्षाक विकास करौ। मुदा एहि लेल नेना लोकनि कैँ मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षा देब उचित। हँ उक्त मातृभाषा मे किछु साहित्य अवश्य रहक चाही। संगहि ओहि मे साहित्य सर्जनाक समार्थ्यो विद्यमान रहैक।

अथवा

प्रस्तुत गद्यांश 'मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा' नामक निबन्ध सँ लेल गेल अछि। एकर लेखक आचार्य रामलोचनशरण थिकाह।

मिथिलाक संस्कृति वेद-सम्मत छल। एहिठाम विदेह एवं लिच्छवी दुइ राज्य छल- पूब मे विदेहक आ पश्चिम मे लिच्छवीक। ई दूनू राज्य गणतंत्र रहैक। लिच्छवीक राजधानी वैशाली छल। एही वैशाली मे जैनक अन्तिम तीर्थङ्.कर महावीर स्वामी उत्पन्न भेल छलाह। महात्मा बुद्ध सेहो एहिठाम बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार कएलनि। एहि तरहैँ जैन एवं बौद्ध धर्म मिथिलाक पश्चिमीय भाग मे प्रबल भए रहल छल। मिथिलांचलक वैदिक संस्कृति सँ एहि दुनू धर्मक संस्कृति भिन्न छल। पश्चिमी भाग मे मिथिलाक संस्कृति लुप्तप्राय भए गेल। दोसर दिस प्राचीने काल सँ मिथिला आ बंगालक नीक संबंध रहलैक अछि। पूर्णियाँ जिला कैँ पार करैत दिनाजपुर जिलाक पश्चिम भाग मे मिथिलाक पंचांग चलैत छल। बंगालक बहुत रास हिस्सा मिथिलाक उपनिवेशक रूप मे जानल जाइत छल। एहि प्रकारैँ मिथिला पश्चिम सँ जतेक गमाए देलक, पूब मे ओतेक पाबियो लेलक।

18. अवशिष्ट - भोजक अवशिष्ट वस्तु नष्ट भए गेल।

प्रवास - मनीष दू बरख लेल जर्मन प्रवास मे छथि।

उन्मूलन- राजा राममोहन राय सती प्रथाक उन्मूलन कएलनि।

महती - लालूजीक सभा मे महती भीड़ रहैक।

अबरजात - मोदीजी ओतए बेसीकाल हमर अबरजात रहैए।

19. सर्वनाम — विशेषण

सर्वनाम	विशेषण
अहाँ	अहाँसन
ओ	ओहि
एहि	एहने
ताँ	तोहरासन
हम	हमरासन

20. जखन एक प्रकारक (तत्सम, तद्भव अथवा देशज)) अनेक पद अपन विभक्तिक चिन्ह छोड़ि मिलिकए एक पद बनि जाइत अछि तखन ओ नवीन पद समस्त पद कहबैत अछि तथा ओहि पदक मेल भेल समास। यथा- राजमंत्री, पीताम्बर आदि।

समासक छओ भेद होइत अछि-

(क) अव्ययीभाव समास - जाहि समस्त पद मे साधारणतः पूर्वपद प्रधान होअए, ताहि समस्त पद मे अव्ययीभाव समास होएत। उदाहरणार्थ - यथाशक्ति, दुर्भिक्ष आदि।

(ख) तत्पुरुष समास - जाहि समस्त पद मे अन्तिम पद प्रधान होअए, ताहि समस्त पद मे तत्पुरुष समास होएत। यथा- पाठशाला, पनिवट आदि।

(ग) कर्मधारय समास - जाहि समस्त पद मे उत्तरपद विशेष्य हो आ पूर्वपद विशेषण, उपमान, उपमित आदि होअए से थीक कर्मधारय समास। यथा-पीताम्बर, कमलनयन आदि।

(घ) द्विगु समास- जाहि कर्मधारय समासक पूर्व पद संख्यावाचक होअए से द्विगु समास कहाओत। यथा-त्रिभुवन, त्रिलोकी आदि।

(ङ) द्वन्द्व समास - जाहि समस्त पद मे दुनू पद प्रधान होअए, से थीक द्वन्द्व समास। उदाहरणार्थ-लोटाडोरी, पोथीपतड़ा आदि।

(च) बहुब्रीहि समास - जाहि समास मे समस्त पदक कोनो खण्ड प्रधान नहि होइत अछि, प्रत्युत अन्य पद प्रधान होइछ आ समस्त पद विशेषण होइछ, से कहबैछ बहुब्रीहि समास। यथा - एकमुहा, कनकट्टा आदि।

21. निरर्थक - निः + अर्थक

दुष्कर - दुः + कर

दिगम्बर - दिक् + अम्बर

अहंकार - अहम् + कार

महौषधि - महत् + औषधि

22. राम – 𑒩𑒰𑒧
नगर – 𑒢𑒑𑒩
पीयर – 𑒣𑒲𑒨𑒩
तकिया – 𑒞𑒏𑒱𑒨𑒰
ओद्यान – 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒰𑒢

23. वन अर्थात् गाछ–वृक्ष पर्यावरण कँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि। पूर्व मे लोक गाछ–वृक्ष आ वनक महत्त्व खूब जनैत छल। तँ घर तथा गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दसटा गाछ लगाएब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देला सँ दस पुत्र होएबाक पुण्य होइत छलैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगाएब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपण कँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल। वृक्ष कार्बनडायऑक्साइड लैत अछि आ ऑक्सीजन छोड़ैत अछि। मनुष्य साँस मे ऑक्सीजन लैत अछि। अभिप्राय जे गाछ–वृक्षक अभाव मे मनुष्यक जीवने संकट मे आबि जाएत।

गाछ–वृक्षक उपयोग मानव जीवन मे डेग–डेग पर अछि। चकला–बेलना सँ लए क लाठी–भाला धरि मे लकड़ीक व्यवहार होइछ। केबाड़–खिड़की, चौकी–सन्दूक, खुरपी–हांसू, कोदारि–हर–पालो आदि मे लकड़ीक उपयोग होइते अछि। संगहि संग जारनिक काज मे सेहो लकड़ीक प्रयोग होइछ। जरलाक बाद लकड़ी कोइलाक रूप मे काज अबैछ। सिम्मरक लकड़ी सँ दियासलाइक काठी बनैछ, तँ देवदारूक लकड़ी सँ पेंसिल।

24. बौद्ध धर्मक प्रति अम्बेदकरक बड़ बेसी आस्था छलनि। ओ सामाजिक रूढ़िवादिताक विरोध मे दलित बौद्ध आंदोलनक शुरूआत कएलनि। एहि क्रम मे ओ 1950 मे श्रीलंका (तत्कालीन सिलौन) मे आयोजित बौद्ध विद्वान एवं संत सभक सम्मेलन मे सम्मिलित भेलाह। बौद्ध धर्म मे परिवर्तनक एकटा योजना बनौलनि, तकरा लेल अंबेदकर 1954 मे दू बेर बर्मा गेलाह। रंगून मे आयोजित तृतीय विश्व फेलोशिप बौद्ध सम्मेलन मे भाग लेलनि आ 1955 मे भारतीय बौद्ध महासभाक गठन कएलनि, जकरा ओ 14 अक्टूबर, 1956 मे भारतीय बौद्ध सोसाइटी मे परिवर्तित कएलनि। हुनक पत्नी जे जन्म सँ ब्राह्मण छलीह बौद्ध धर्म स्वीकार कए लेने रहथि। अंबेदकरक मृत्यु भेला पर हुनक दाह–संस्कार बौद्ध रीति–रिवाज सँ भेलनि। एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे हुनका पर बौद्ध धर्मक बड़ गहीर प्रभाव पड़ल।

25. टेम्पो पर सवार महिला पूर्णयौवना छलि। ओकर मुँहक काट–छाँट सुरेबगर छलैक। वर्ण गहुमियाँ उज्जर रहैक। बाँहि सोटल आ गस्सल। देहक कांइत सेहो सुरेबगर, कतहु सँ मौस नहि बहार भेल। सिंउथ सिन्दूर सँ भरल, सौन्दर्यक महिमा–गरिमा कँ शिखर पर पहुँचाए रहल छल।

26. महात्मा गाँधीक प्रवेश सँ स्वतंत्रता आन्दोलन कँ एकटा नव दिशा भेटल। गाँधीजी चम्पारण आन्दोलन सँ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मे व्यापक स्तर पर भाग लेब शुरू कएलनि। चम्पारणक किसान पर अंग्रेजक अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छल। राजकुमार शुक्ल गाँधीजी कँ चम्पारण अएबाक लेल बाध्य कए देलनि। गाँधीजी 'तिनकठिया' पद्धतिक विरोध मे काज करब शुरू कए देलनि आ अन्ततः चम्पारण सँ अंग्रेज बगान मालिक कँ भगएबा मे सफल भेलाह। तकर बाद ओ गुजरातक अहमदाबाद तथा खेड़ा मे आंदोलन शुरू कएलनि। हुनक कार्यपद्धति प्रभावी सिद्ध भेल। तँ 1920 ई. मे कांग्रेस असहयोग आंदोलन कँ स्वीकार कए लेलक। गाँधीजी असहयोग आंदोलनक मुख्य पुरोधा छलाह। अंग्रेजक संग असहयोग आ विदेशी वस्तुक बहिष्कार -ई कार्यक्रम सम्पूर्ण देश मे चलए लागल एवं राष्ट्रीय आंदोलन कँ एहि सँ वेश बल भेटलैक।

27. महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्यक एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। मैथिल समाजक विभिन्न समस्या पर लिखल हिनक नाटक कँ अभूतपूर्व मंचीय सफलता भेटल। हिनक 'ओकर आँगनक बारहमासा', जुआएल कनकनी, गाम नै सुतैयै, काठक लोक, राजा सहलेस, कमला कातक राम-लक्ष्मण आ सीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोर मे, पूष जाड़ की माघ जाड़, खिच्चड़ि आदि प्रसिद्ध नाटय अछि। मंलंगिया जीक अनेकानेक एकांकी, नुक्कर नाटक ओ रेडियो नाटक लोकप्रिय भेल अछि। मैथिली नाटक आ एकांकी कँ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करौनिहार ओ एक सफल सम्पादक छथि।

28. मिथिलाक संस्कृति मे लोक संस्कृतिक सभ सँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता बाबा मे कुटि-कुटि कए भरल छलनि। ओ सभ कँ एक समान दृष्टि सँ देखैत छलाह। ककरो छोट नही बुझैत छलाह। ककरो पैघत्वक कारणँ मोजर देब ओ नहि जनैत छलाह। बड़का-बड़काक घमण्ड तोड़ै लेल बाबा मारूक कविता सभ लिखैत छलाह। हुनका ककरो सँ डर नहि छलनि। कियो होथि, नेता, धनिक, अफसर, पण्डित सभ कँ समाजक दिस सँ चेतौनी दैत छलाह। समाजक लेल, गरीबक लेल ओ ककरो सँ भीड़ि सकैत छलाह। ओ गरीब आ विपन्नक मित्र छलाह, समाड. छलाह।

बाबा कँ गाछ-वृक्ष बड़ पसिन रहनि। मेघ देखि कए ओ उमंग मे नाचए लागथि। अगहन मास हुनका प्रिय रहनि। पोखरि, माछ, मखान हुनका बड़ नीक लगनि। असल मे ओ नहि बिसरथि। सभठाम, सभ भाषा मे ओ अपन समाजक, अपन मिथिलाक बात राखथि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-३)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

((ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. 'संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेदकर'क रचयिता छथि
   (क) अशोक (ख) उमाकान्त
   (ग) तारानन्द वियोगी (घ) भाग्यनारायण झा

2. उमाकान्तक रचना अछि
   (क) भोजन (ख) क्रैक (ग) चन्द्रमुखी (घ) पर्यावरण

3. सिपाही विद्रोह भेल छल
   (क) 1944 (ख) 1856 (ग) 1857 (घ) 1861

4. बंग-भंग आंदोलन भेल छल
   (क) 1905 (ख) 1906 (ग) 1907 (घ) 1908

5. चाहक पाइ देलनि
   (क) ग्रामीण एक (ख) मास्टर साहेब (ग) ग्रामीण पाँच (घ) ग्रामीण दू

6. अशोकक रचना छनि
   (क) बाबाक आत्मीयता (ख) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा
   (ग) पर्यावरण (घ) चन्द्रमुखी

Cont. ....

7. 'भरि छीपा भात'क रचयिता छथि
   (क) लिली रे (ख) उषाकिरण छथि
   (ग) विभा रानी (ग) शेफालिका वर्मा
8. बतहियाक पति छल
   (क) बुढ़बा (ख) युवक (ग) किशोर (घ) अधवयसू
9. 'बाबाक आत्मीयता'क रचयिता छथि
   (क) रतनेश्वर मिश्र (ख) अशोक
   (ग) जयकान्त मिश्र (घ) तारानन्द वियोगी
10. जैन धर्मक प्रवर्त्तक छलाह
   (क) महावीर स्वामी (ख) महात्मा बुद्ध
   (ग) भीमराव अंबेदकर (घ) एहि मे सँ कोनो नहि
11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) सिपाही विद्रोह	(क) दिसम्बर 1885
(ii) असहयोग आंदोलन	(ख) 1942
(iii) भारत छोड़ो आंदोलन	(ग) 1920
(iv) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	(घ) 1857

12. निम्नलिखित खाली स्थान कैँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3
   (क) ताहि भूमिक अर्चना सँ श्रेष्ठ ....धर्म की? (दोसर/तेसर)
   (ख) मातृभूमिक वन्दना सँ श्रेष्ठ पावन ....की? (धर्म/अधर्म)
   (ग) मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ ....दुलार की? (आर/दोसर)
13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3
   (i) चन्द्रमुखी दाइ दू कट्ठा जमीन कीनलनि।
   (ii) चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च बढ़ा लेलनि।
   (iii) गाँधीजीक मातृभाषा हिन्दी छलनि।
14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10
   (क) पुस्तकालय (ख) समाचार-पत्र (ग) रेडिओ (घ) सहकारी खेती
15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

चन्दा झा बहुआयामी व्यक्तित्त्वक लोक छलाह। मैथिली भाषा आ साहित्यक विकासक लेल ई कतेक प्रकारक काज कयलनि। पहिल काज छल मैथिलीक प्राचीन

साहित्यक खोज करब। मिथिलाक गामे-गाम घूमि कय ओ जे अनुसन्धान कयलनि ताहि मे प्रमुख अछि विद्यापतिक गीत। बंगाली विद्वान शारदाचरण मिश्र तथा विमान बिहारी मजुमदारक संग विद्यापति गीतक खोज तँ करबे कयलनि, विद्यापतिक हाथक लिखल 'भागवत' सेहो उपलब्ध कयलनि। यैह कृति देखि कय बंगाली सभ मानि गेलाह जे विद्यापति मैथिल छलाह। विद्यापतिक 'लिखनावली' एवं 'कीर्त्तिलता' नामक पोथी तकबाक श्रेय चन्दा झा कँ छनि। गोविन्ददासक गीतक जे संग्रह चन्दा झा कयलनि से बाद मे 'श्रृंगारभजन' नाम सँ छपल। एहि प्रकारक अनुसन्धान-कार्यक अतिरिक्त चन्दा झा अनेक मौलिक पोथीक रचना सेहो कयने छथि। ताहि मे मुख्य अछि 'मिथिलाभाषा रामायण'क लेखन तथा विद्यापति लिखित 'पुरुषपरीक्षा'क अनुवाद। मैथिली मे रामकथा पर महाकाव्य सभ सँ पहिने चन्दे झा लिखलनि। सीता आ रामक जीवन-चरित्र कँ विषय बनायब, हुनका सभक महत्त्वक प्रतिपादन करब सम्पूर्ण भारतक साहित्यकारक लेल आकर्षणक वस्तु छल। मैथिली मे एकर श्रीगणेश चन्दा झा कयलनि। साहित्यमे एकटा बड़ पैघ अभावक पूर्ति भेल। एतबे नहि, चन्दा झा तेहन सरल, सरस आ सुन्दर भाषा मे राम-कथा लिखलनि जे ओ मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय पोथी बनि गेल। तहिना पुरुषपरीक्षाक अनुवाद सँ मैथिली मे कथा-लेखनक मार्ग प्रशस्त भेल। ई दुनू कृति चन्दा झाक कालजयी अवदान अछि।

16. शुल्क माफ करबा सँ सम्बद्ध एकटा पत्र प्रधानाध्यापक कँ लिखू। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
केहन कठोर भेल भैआ केर छतिया
दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा
भौजिओक हृदय पखान हे

अथवा

सुनिते साइकिल-घंटी, पाँखि बिनु अँखिया
दौड़य सड़क दिशि, कते बेर सखिया
सुरूज डुबैत भैआकेर ताकि बटिआ
बहि गेल कमला-बलान हे

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

चहकैत, पुरखा, पर्यावरण, बिलटि, अछिंजल

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

निन्दा, साहित्य, क्षमा, रंग, फल

20. सन्धि सँ अहाँ की बुझैत छी? एकर भेदक उल्लेख करू। 5

21. निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य मे प्रयोग करू : 5
रंग उड़ब, सात घाटक पानि पीब, स्वाहा करब, हवाई किला, लोहा मानब

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5
गाम, शहर, बाबी, नेना, नोन

23. जनक राजवंशक प्रमुख राजा सभक परिचय दिअ। 4

24. याज्ञवल्क्यक परिचय दिअ। 4

25. माँगन खबास कोन-कोन राजदरबार सँ सम्बद्ध रहलाह। उल्लेख करू। 4

26. 'हाथ' कविताक वर्णन करू। 4

27. भारतीय संविधानक विशेषताक वर्णन संक्षेप मे करू। 5

28. गरम दल आ नरम दलक की तात्पर्य अछि? 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-३)

1. (घ) भाग्यनारायण झा
2. (ख) क्रैक
3. (ग) 1857
4. (क) 1905
5. (ख) मास्टर साहेब
6. (क) बाबाक आत्मीयता
7. (ग) विभा रानी
8. (क) बुढ़बा
9. (ख) अशोक
10. (क) महावीर स्वामी
11.

	स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i)	सिपाही विद्रोह	(घ) 1857
(ii)	असहयोग आंदोलन	(ग) 1920
(iii)	भारत छोड़ो आंदोलन	(ख) 1942
(iv)	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	(क) दिसम्बर 1885

12. (क) दोसर
    (ख) धर्म
    (ग) आर
13. (i) शुद्ध
    (ii) अशुद्ध
    (iii) अशुद्ध

14. **(क) पुस्तकालय**

पुस्तकालय शब्दक अर्थ होइत अछि–पुस्तक–आलय। साधारणतः एहि मे रंग–विरंगक पोथी संग्रहीत रहैछ। मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक आदि पत्रिका सभ सेहो मंगाओल जाइत अछि। संगहि दैनिक पत्र सेहो उपलब्ध रहैत अछि। एहि मे सर्वसाधारण लोक अपन जाति–धर्म भेदभाव सँ दूर रहि पुस्तक आ पत्र–पत्रिका पढ़ि विविध तरहक ज्ञानोपार्जन करैत छथि।

एहि सँ सर्वसाधारण लोक कँ बड़ लाभ होइत छैक। सामाजिक उत्थानक लेल ई बड़ उपयोगी सिद्ध होइछ। एहि विद्या–मंदिर मे अएनिहार विद्यार्थी लोकनि सब तरहक पोथी पढ़ि विद्यादायिनीक विमल वरदान पाबि विद्यावान बनैत छथि। सभ्यता ओ संस्कृतिक संचित ज्ञानकोषक अध्ययन, मनन आ चिन्तन मे ई साहित्य–सदन सर्वदा सभक लेल उपकारी होइछ। ज्ञानार्जन लेल जिज्ञासु मस्तिष्क कँ एतए सम्यक् समाधानक साधन उपलब्ध होइत छैक।

समय–समय पर एहिठाम संगीत, नृत्य, वाद्य आदि कलाक संग प्रवचन, भाषण आ कविता पाठ, निबन्ध प्रतियोगिता। आदिक क्रियाकलाप सँ एहि छोटछीन संस्था सँ गागर मे सागरक अनुभव कराए लोक कँ लाभान्वित करबैत अछि। एहिठाम सदतिकाल आगन्तुक लेल ज्ञानक आलोक पसरल रहैत छैक। गणतन्त्र देश मे सब देशवासीक उत्थानक मार्ग प्रशस्त करबा मे पुस्तकालयक भूमिका अहम् होइत छैक। एतए लोक कँ साहित्य–साधना आ संगीत–साधनाक अवसर सामान्य रूप सँ भेटैत छैक। पुस्तकावलोकन सँ आत्मपरिचय भेटैत छैक।

अतएव पुस्तकालय आत्मविकासक कार्य मे अवर्णनीय सहायक सिद्ध भेल अछि। प्राचीन तथ अर्वाचीन साहित्यकार लोकनि सँ साहित्यक माध्यम सँ संगति होइत छैक। एहि सँ लोक उन्नतिक पथ पर अग्रसर होइछ। सभ्यता आ सांस्कृतिक जागरण समाज कँ नवल रूप प्रदान करैछ। पढ़ल–लिखल लोक एहि ज्ञानसागर मे महान नेता आ पथ प्रदर्शकक साहित्यक सामीप्य पाबि कृत्य–कृत्य होइत छथि। पुस्तकालय लोक मे समभाव उत्पन्न कए एकताक सूत्र मे बान्हि समाज कँ सुदृढ़ बनएबा मे वरदान सिद्ध होइछ। निरक्षरता निवारण मे सेहो ई बड़ सहायक सिद्ध होइछ।

अतः मनुष्य लेल जाहि रूपँ अन्न, जल, वायु अत्यावश्यक मानल जाइत अछि, ओही तरहँ समाजक लेल पुस्तकालय अति आवश्यक अछि।

(ख) समाचार-पत्र

समाचार-पत्र विभिन्न स्थानक, विभिन्न वस्तु कँ संकलित कए एकठाम समाचार पहुँचेनहार पत्र कँ कहल जाइछ। एकर अवलोकन सँ पाठक लोकनि कँ संसार तथा देशक विविध विषयवस्तुक ज्ञान सहजता सँ घर बैसल प्राप्त होइत अछि।

एहि पत्रक कइएकटा श्रेणी बनाओल अछि, यथा-वार्षिक, अर्धवार्षिक, त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक आ दैनिक। एहि सब श्रेणी मध्य दैनिक समाचार-पत्र मे नित्यप्रतिक घटना समूहक उल्लेख मुख्य रूप सँ रहेत छैक आ स्थायी विषयक उल्लेख है। गौन रूप सँ अबैत अछि। मुदा अन्य समाचार-पत्र मे समाचार गौन रहैत छैक आ स्थायी लेख मुख्य रूप सँ देल जाइत छैक।

एकर उत्पत्ति सोलहम शताब्दी मे भेल। ई सर्वप्रथम इटलीक वेनिस नगर मे भेल छल। बहुत दिनक बाद 1724ई. मे भारत आएल। एकरा एहिठाम अननिहार छलाह इसाई धर्मक प्रचारक। सब सँ पहिल पत्र जे बहार भेल तकर नाम राखल गेल 'इण्डियन गजट'। तकरा बाद छापाखानाक वृद्धि होमए लागल, संगहि कागजक उत्पादन बढ़ए लागल। शिक्षाक प्रचार-प्रसार विकासोन्मुख भेल। लोकक मोन मे ज्ञान पिपासा आ जिज्ञासा जागृत भेल। समाचार-पत्रक चलती हुअए लागल। वैज्ञानिक विकास सँ एकर प्रकाशन आ प्रचार मे बड़ सहायता भेटल।

एहि पत्र सँ लोक कँ बड़ लाभ बुझवा मे आबए लगलैक। आजुक बेकारीक युग मे लोकक दृष्टि सब सँ पहिने विज्ञापनक जीविका निश्चित करबा मे सफलता पाबए लागल। व्यापारीगण भिन्न-भिन्न वस्तुक भावक ज्ञान पाबि क्रय-विक्रय कए लाभ कमाए लागल। सरकार आ जनताक सम्बन्धक उल्लेख सँ राष्ट्रीय चेतना जागृत भेलैक। शिक्षा-विषयक उल्लेख सँ शिक्षाक विकास मे सहायता भेटैत अछि। विभिन्न विषय सभक ज्ञान सँ सामाजिक आ राजनीतिक स्तरक उन्नति होइ छैक। जिज्ञासा वृत्तिक विकास भेलैक आ ज्ञानपिपासाक तुष्टि भेलैक।

समाचार-पत्र सँ जँ लाभ बड़ छैक तँ हानियो होइत छैक। जँ असत्य समाचार भए गेल तँ जनता भ्रम मे पड़ि पैघो गलती कए सकैछ जाहि सँ ओकरा कष्टो उठाबए पड़ि सकैछ। निकृष्ट विज्ञापन सँ जनताक अभिरूचि पर घातक असरि पड़ि सकैत अछि। अश्लील चित्रक प्रकाशन सँ जनता पर कुप्रभाव पड़ि सकैछ। धर्म तथा सम्प्रदाय सम्बन्धी उटपटांग लेख सँ धार्मिक एवं साम्प्रदायिक विद्वेष पसरि सकैछ।

एहि तरहेँ नियंत्रित रूप सँ प्रकाशित समाचार लोकजीवन कँ मंगलमय बनाए दैत अछि। ई ओहने कार्य करैत अछि जेहन मनुष्यक शरीर मे अंग करैत अछि। एहि हेतु समाचार-पत्र लोक कँ आँखिक काज करैत अछि।

●●

(ग) रेडिओ

आजुक युग मे विज्ञानक विकास दिनानुदिन आगाँ बढ़ि रहल अछि। एहि सँ असम्भवो कार्य सम्भव देखि पड़ैछ। केओ नहि अनुमान कए सकैत छल जे घरहि बैसल-बैसल कोसक दूरी पर गाओल गीत आ देल भाषण तत्कालहि अक्षरशः सुनिकए ज्ञान आ आनन्द प्राप्त कए सकत। मुदा आइ ओ सुगम रीति सँ सानन्द सुनल जाइछ। एहि आश्चर्यजनक घटनाचक्रक आधार अछि रेडियो।

एकर जन्मदाता भेलाह इटलीक मारकोनी साहेब। हुनके द्वारा एकर आविष्कार सन् 1921 ई. मे भेल। एकर सर्वप्रथम प्रचार इंगलैंड मे भेल। प्रचार दिनानुदिन बढ़ए लागल। आइ-काल्हि ई गाम-घर मे पसरि गेल अछि।

एकर सिद्धान्त विचित्रे अछि। बेतारक तार एकर आधार अछि। जखन केओ व्यक्ति बजैछ तखन ओहि व्यक्ति द्वारा उच्चरित शब्द सँ वायुमंडल मे कम्पन होइछ ओ कम्पन द्रुतगति सँ भ्रमण करैछ। यंत्र ओकरा धारण करैछ। ओहि सँ ध्वनि उत्पन्न होइछ। ओएह ध्वनि लोक सुनैछ। शब्द आ ध्वनिक स्थान कँ जोड़ए हेतु तारक आवश्यकता नहि होइछ।

एकर मुख्य अंग थीक ब्रॉडकास्टिंक। एहि लेल स्थान नियत रहैछ। ओतए सँ समाचार प्रेषित कएल जाइछ। एहि कार्यक लेल एक स्टेशन रहैछ जे ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन कहबैछ। समाचार वायुपूर्ण घर मे एक यंत्रक आगाँ कहल जाइछ। ओहि यंत्रक नाम अछि 'माइक्रोफोन'। वायु द्वारा ओहि समाचारक शब्दकंपन दूर देश तक लए गेल जाइछ। ओहि दूरस्थ स्थान पर लोक रेडियोसेट रखैछ। जहि स्टेशनक विषय ज्ञात करबाक इच्छा होइछ ताहि स्टेशनक स्थान पर लोक रेडिओक तार स्थिर कए दैछ। समाचार एहि तरहेँ सुनबा मे अबैछ जेना केओ व्यक्ति निकट स्थान मे बैसिकए बाजि रहल होअए।

एहि सँ अनेको लाभ होइछ। देश-विदेशक वार्त्ता भटैछ। कलापूर्ण कविता, कमनीय कथा, नूतन नाटक, अभिनव आलेख आदिक स्पष्ट पाठ लोक घरहि बैसल सुनैछ। ई शिक्षाप्रचारक क्षेत्र मे क्रांति उत्पन्न कएलक अछि। पैघ-पैघ विद्वान्क भाषण

सुनि लोक महान् लाभ प्राप्त करैछ। रेडियो सँ हानि बड़ थोड़ होइछ। धनी आ विलासी व्यक्ति धनक मोह छोड़ि दैछ। ओ समयक मूल्य बिसरि जाइछ। कोनहु वस्तुविशेष संबंधी भाषणक द्वारा जनता कँ उभाड़ल जाए सकैछ जे महाघातक सिद्ध होइछ।

रेडिओ सर्वहितकारी अछि। हानिकारक अंशक बहिष्कार सँ सोना मे सुगन्धि आबि जाइछ। एकर बाढ़ि सँ विश्व कँ एक सूत्र मे बान्हिकए ज्ञानक प्रत्येक क्षेत्र मे विकास प्राप्त कएल जाए सकैछ।

(घ) सहकारी खेती

जँ अनेक व्यक्ति साझी भए मिलिजुलि कए एकठाम खेती करथि तँ ओ खेती सहकारी खेती कहाओत। आजुक युग मे एहि तरहक खेतीक उपयोगिता स्पष्ट देखि पड़ैछ, कारण कृषकक अवस्था गेल-गुजरल अछि ओ हुनका जमीन आ खेतीक साधन अपर्याप्त छनि। एहि लेल सहकारी खेतीक पद्धति चलल अछि।

शहर मे सहकारी व्यवसाय चलैछ। दस ठाम दस स्थान मे कार्य कएनिहार व्यक्ति सहकारी रूपेँ भोजन-व्यवस्था चलबैछ। एहि मे बरोबरि-बरोबरि पूँजी लगबैछ। एहि सँ बरोबरि लाभ होइछ। यैह व्यवस्था अछि सहकारी खेती मे। मुदा जँ केओ व्यक्ति अधिक श्रम करत तँ ओकरा अतिरिक्त पारिश्रमिक भेटतैक।

देशक अधिकांश भाग मे साझी परिवारक व्यवस्था आजुक समय मे छिन्न-भिन्न भए रहल अछि। फलतः, जमीन छोट छीन कोला मे बाँटिकए राइछित्ती भए रहल अछि। एहि सँ कृषि मे खर्च अधिक, लाभक स्थान मे मूरहु मे हानि, आ कुव्यवस्था सब कँ अस्त व्यस्त बनौने रहैछ। एहि हेतु घटल आदमी सब दिन घाटा मे रहैछ। एहि स्थिति मे सहकारी कृषि पद्धति लेल आवश्यक देखि पड़ैछ।

एहि पद्धति सँ अनेक लाभ अछि। ई देशक हेतु उपयुक्त अछि। छोट-छोट कृषक पैघ पैमानक कृषि सँ लाभ उठाए सकताह। खेत, पूँजी तथा श्रम एकत्र कए समुचित उपयोग मे लगाओल जाइछ। फलतः, भूमिक विभाजनक समस्या नहि उठि सकैछ। एहि सँ कृषिक विकास सम्भव भए जाइछ। एहि सँ लाभ उठौनिहार जनताक गरीबी दूर होइछ।

एहि पद्धतिक प्रयोग कैक राज्य मे भए रहल अछि। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब मे सहकारी फार्म व्यवस्था चलि रहल अछि। अपनहुँ बिहार राज्य मे कइएक वर्ष सँ सहकारी कुसियार समिति चलि रहल अछि।

सहकारी कृषि-पद्धति वस्तुत: देशक लेल महाउपकारी अछि। सम्मिलित कुटुम्ब कँ कात करबाक मुख्य कारण होइछ भूमि, मुदा एहि पद्धति कँ अपनौला सँ भूमिक उपविभाजन तथा उपखण्डनक प्रश्ने नहि उठैछ। फलत: कृषिक विकास मे सहायता भेटैछ, उपज मे वृद्धि होइछ, खाद्यान्नक समस्याक बहुत किछु समाधान होइछ, निर्धनताक पलायन होइछ आ देशक महान् उपकार होइछ। एहि कार्य लेल सरकार ओ जनताक सुन्दर सहयोग अपेक्षित अछि। एकर सफलता पर समाज आ राष्ट्रक उन्नति निर्भर करैछ। अतएव प्रत्येक देश हितैषीक कर्त्तव्य होइछ एहि उपकारी कार्य मे सहायता प्रदान करब।

15. शीर्षक : अन्वेषक, अनुवादक ओ लेखक

कवीश्वर चन्दा झाक व्यक्तित्व आ कृतित्त्व दुनू बहुआयामी छलनि। ओ एक जुझारू अन्वेषक, सफल अनुवादक एवं मौलिक लेखक छलाह। गामे-गाम घूमि विद्यापतिक गीतक खोज कएलनि, हुनक लिखल 'भागवत' उपरौलनि। गोविन्ददासक पद कँ ताकि बहार कएलनि। विद्यापतिक लिखल 'पुरुषपरीक्षा'क मैथिली अनुवाद कए कथा-लेखनक मार्ग प्रशस्त कएल, संगहिँ अनुवाद-कलाक प्रारम्भ सेहो कएलनि। मैथिली मे 'मिथिलाभाषा रामायण'क रचना कए मौलिक लेखन कएलनि। चन्दा झा अत्यन्त सरल, सरस आ सुन्दर भाषा मे रामकथाक सृजन कएल।

प्रदत्त शब्द संख्या-214

संक्षिप्त शब्द संख्या-71

16. सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक,

पटना कॉलेजिएट स्कूल,

दरियापुर गोला, पटना।

विषय : शुल्क माफ करबा सँ सम्बद्ध।

महाशय,

सविनय निवेदन अछि जे हम अपनेक विद्यालय मे कक्षा दशम (क) केर एक निर्धन विद्यार्थी थिकहुँ। हमर पिताजीक आय बड़ कम छनि। ओ एक प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक छथि। हमरा अतिरिक्त, हमर चारि भाए-बहिनक पढ़ाइक भार पिताजी कँ छनि। एहन स्थिति मे हमर पढ़ाइक खर्च उठाएब हुनका लेल सम्भव नहि छनि।

अत: एहन दशा मे जँ अपने कृपा कए हमर शुल्क माफ करबा दिऐक, तँ हम अपनेक सदति अनुगृहीत रहब।

अपनेक आज्ञाकारी छात्र

दिनांक -11.12.2016 **प्रशान्त कुमार**

कथा-दशम (क)

क्रमांक -४

17. प्रस्तुत पाँती 'भावि भरदुतिया विधान हे' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। एकर रचयिता छथि कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'।

भरदुतिया दिन छैक। बहिन भरदुतिया पावनिक सबटा ओरिआओन कए लेने अछि। घर-आँगन आ दुआरि कँ नीपि कए चकाचक कएने अछि। अरिपन दए पीढ़ी राखि देने छै। भाए सँ नोत लेबा लेल बहिन बाट निहारि रहल अछि। मुदा भाए नहि अबैत छैक। मनक समग्र मनोरथ मनहि मे रहि जाइत छै। बहिन कँ होइत छै जे भाएक छाती केहन कठोर भए गेलैक। फेर ओ भाएक दोष नहि दैत अछि। मायक मरि गेला पर नैहर सुन्न भए जाइछ। भाउजक हृदय पाथर होइत छै। ठीके ने, भाउज कतौ मायक स्थान लेत।

भरदुतिया मे भाएक नहि आएब बहिनक लेल कतेक पीड़ादायक होइत अछि, तकर अभिव्यक्ति विवेच्य पाँती मे भेल अछि।

अथवा

प्रस्तुत पाँति 'भावि भरदुतिया विधान है' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। एकर रचयिता थिकाह कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'।

भरदुतियाक दिन छैक। बहिन भरदुतिया पावनिक सबटा ओरिआओन कए लेने अछि। घर-आँगन आ दुआरि कँ नीपि कए चकाचक कएने अछि। अरिपन दए पीढ़ी राखि देने छै। भाए सँ नोत लेबा लेल बहिन बाट जोहि रहल अछि। साइकिलक घंटी सुनि बहिनक पाँखिविहीन आँखि सड़क दिस दौगि जाइत अछि। कतेक बेर सखीगण सूर्यक डूबैत काल धरि भैयाकेर बाट देखैछ मुदा ओ नहि अबैत छै। एहन कारुणिक दशा सँ पीड़ित बहिनक कमला-बलान रूपी दुनू आँखि सँ अश्रुकणक प्रवाह होमए लगैत अछि।

भरदुतिया मे भाएक नहि आएब बहिनक लेल कतेक पीड़ादायक होइत अछि, तकर अभिव्यक्ति विवेच्य पाँती मे भेल अछि।

18. चहैकत – सलोनी घर मे पुद्दी जकाँ चहकैत रहैए।

पुरखा – हमर पुरखा दरभंगा महाराज सँ संबद्ध छलाह।

पर्यावरण – पर्यावरणक प्रति सभ कँ सजग रहबाक चाही।

बिलटि – माय बिनु बच्चा बिलटि जाइछ।

अछिंजल – देवी पूजा अछिंजल सँ कएल जाइछ।

19. संज्ञा विशेषण

निन्दा निन्दनीय

साहित्य साहित्यिक

क्षमा क्षम्य

रंग रंगीन

फल फलित

20. जखन एक भाषाक दू शब्द एक-दोसरक अत्यन्त निकट आबि जाइत अछि, तखन उच्चारण मे सुविधाक हेतु पहिल शब्दक अन्तिम वर्ण आ दोसर शब्दक पहिल वर्ण मिलि जाइत अछि जाहि सँ विकार उत्पन्न होइछ अर्थात् दुनू वर्णक मेल सँ एक नवीन रूपक निर्माण होइत अछि। वर्णक यैह मेल थीक संधि। यथा- नव+अन्न = नवान्न।

संधि तीन प्रकारक होइत अछि-

(क) स्वर संधि – स्वरक संग स्वरक मेल थीक स्वर संधि। यथा- विद्या + आलय = विद्यालय।

(ख) व्यंजन संधि – व्यंजनक संग स्वर अथवा व्यंजनक मेल थीक व्यंजन संधि। यथा- दिक् + गज = दिग्गज।

(ग) विसर्ग संधि – विसर्गक संग स्वर वा व्यंजनक मेल थीक विसर्ग संधि। उदाहरणार्थ- दुः + गति = दुर्गति।

21. रंग उड़ब (फीका पड़ब) – एहि चित्रक रंग उड़ि गेल।

सात घाटक पानि पीब (अनुभवी होएब) – रमणक पार पाएब महाकठिन अछि, कारण ओ तँ सात घाटक पानि पीबि चुकल अछि।

स्वाहा करब (नष्ट करब) – पिताक मृत्यु होइतहि कामेश्वर अपन सब सम्पत्ति स्वाहा कएल।

हवाइ किला (कपोल कल्पना) - रमेश सदति हवाइ किला बनबैत रहै छथि।

लोहा मानब (अधीनता स्वीकार करब) - महाराणा प्रताप मुगलक लोहा कहियो नहि मानल।

22. 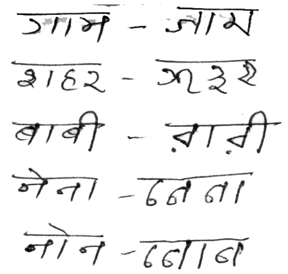

23. जनक राजवंशक प्रमुख राजा भेलाह-निमि जनक, राजा मिथि आ सरीध्वज जनक। जनक राजवंशक संस्थापक भेलाह निमि जनक। ई ब्रह्माक पाँच पीढ़ी नीचाँ छलाह। निमिक मृत देह कँ मथि कए राजा मिथिक प्रादुर्भाव भेल। हिनके नाम पर जनक राजवंश द्वारा शासित प्रदेश कँ मिथिला कहल गेलैक। राजा निमि वीर योद्धा छलाह। ई हिमालयक तराइ क्षेत्र मे बसल पहाड़ी जनजाति कँ युद्ध मे पराजित कए ओकरा सभक उपद्रव कँ शान्त कएलनि आ हिमालय पहाड़ लग एक नदीक किनार मे अपन राजधानी बनौलनि। जनक राजवंशक ई राजधानी जनकपुर कहौलक।

जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह रामायण कालीन सीरध्वज जनक। सीता हिनके पुत्री छलथिन जनिक विवाह अयोध्याक राजा दशरथक पुत्र श्रीरामक संग भेलनि। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ओ जनकसुता सीताक कथा आइयो भारतीय संस्कृतिक अभिन्न अंग बनल अछि।

24. याज्ञवल्क्य मिथिलाक प्राचीनतम राजनीतिक चिन्तक, दार्शनिक ओ विधिकर्त्ता छलाह। ई मिथिलाक प्रसिद्ध दार्शनिक राजा कृति जनकक समय मे भेल छलाह। याज्ञवल्क्य संहिताक घोषणा अछि- 'मिथिलास्थ: स योगीन्द्र: क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीन्मुनीन्' अर्थात् योगी याज्ञवल्क्य मिथिला मे रहैत छलाह आ क्षण मात्र मे ध्यान लगौला उत्तर मुनि भए गेलाह। हिनक पिताक नाम देवरात छलनि। हिनक पिता अन्नदान करबा मे प्रसिद्ध भेलाह। तँ हनुक एकगोट नाम वाजसनि सेहो छलनि। पिताक नामधार पर याज्ञवलक्य कँ वाजसनेय सेहो कहल जाइत छनि। ई वेद, वेदान्त, दर्शन ओ योगविद्या मे पारंगत विद्वान् छलाह। हिनका मे गुरु लोकनिक प्रति अपार भक्ति छलनि। ई अपन योगबल सँ सूर्यक आवाहन कएलनि। सूर्य हिनका यजुर्वेदक शिक्षा देलथिन। यजुर्वेदक ई नवीन शाखा शुक्ल यजुर्वेद वा वाजसनेयि संहिताक रूप मे वर्त्तमान अछि।

याज्ञवल्क्य अपन विद्याक बलेँ प्रचूर धनार्जन कएलनि आ ओहि सम्पत्ति सँ दीन: दु:खीक बीच दानो खूब कएलनि। हिनक साधु स्वभाव, सरलता, संवेदनशीलता ओ दानशीलता अनेक कथा लोक मे प्रचलित अछि। एक बेर जखन हिमालय तराइ क्षेत्र मे अकाल पड़ि गेलैक तँ ई अपन पत्नीक समस्त स्वर्णाभूषण बेचि लोकसेवा मे लगाए देलनि। याज्ञवल्क्य जाहि विदेहराज जनकक समकालीन छलाह, हुनक सभा मे समय-समय पर जाइत छलाह। याज्ञवल्क्यक ब्रह्मज्ञान सँ संतुष्ट भए जनक हिनका अपन कुलगुरु आ पुरोहित बनाए लेने छलथिन।

25. माँगन खवासक जीवनक अधिकांश समय रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहक दरबार मे बीतल। रायबहादुर स्वयं उच्चकोटिक संगीतज्ञ छलाह। संगीत सम्मेलन ओ सभा मे रायबहादुर निश्चित रूप सँ गेल करथि आ माँगन सेहो संग जाथिन। बाद मे ओ पटना मे गयाक जमीन्दार अलखनारायण सिंहक संगीतालय मे 1931 सँ 1933 धरि रहि दरभंगा महाराजक दरबार मे कुमार साहेब विश्वेश्वर सिंहक आश्रय मे अएलाह। कुमार साहेब स्वयं साज बजाबथि आ माँगन गाबथि। कालान्तर मे माँगन खबास बनैलीक कुमार श्यामानन्द सिंहक सानिध्य मे अएलाह। मृत्यु सँ पहिने ओ कुमार श्यामानन्द सिंहक ओहिठाम बनैली मे छलाह।

26. 'हाथ' मेहनतिया मजदूरक कविता थिक। एहि कविताक रचयिता थिकाह सुकान्त सोम। एहि रचना मे श्रमिक आ श्रम-शक्तिक अनेक रूप अछि। माटि कोड़ि अन्न उपजा कए जीवनाधार दैत किसान सँ सारिल केँ दू फाँक करैत मजदूर धरिक उदाहरण द्वारा कवि एहि वर्गक लोकक उपयोगिता एवं अनिवार्यता केँ देखार कएलनि अछि।

हाथक बड़ महत्ता छैक। बिनु हाथेँ लोक कोनो काज नहि कए सकैछ। ताहू मे मजदूर आ कृषक वर्गक तँ गप्पे नहि हुअए। ओकर तँ हथियारे थिक हाथ। कतुक्का माटि कतेक उर्वर छैक, से हाथे जनैत अछि। ठाम-ठामक पानि मे की अन्तर छैक से हाथे सँ बूझल होइत छैक। पानि निकलबा लेल पहिने माटिकेँ कोड़ल जेतैक आ से करतैक हाथ। तहिना गाछ-वृक्ष केँ कटैत काल, पड.ैत काल वा गाछक टोन केँ बरोबरि हिस्सा मे कटैत काल हाथेक प्रयोजन पड़ैत छैक। कुरहड़ि आ हाथक सम्बन्ध हाथे जनैत छै। यैह हाथ सारिल सँ टकराइत छैक। धाम ओ श्रमक सम्बन्ध हाथे स्थापित करैत छैक।

27. 26 जनवरी, 1950 सँ लागू भारतीय संविधान विश्वक प्राय: सर्वाधिक मानवीय एवं उदात्त संविधान अछि। वस्तुत: एहि संवधिानक निर्मातागण सतर्क रहथि जे भारत सन

विशाल आ विविधतापूर्ण देशक संविधान एहन होमक चाही जे तात्कालिक समस्या सभक समाधान मात्र नहि, अपितु स्थायी दिशा निर्देश प्रस्तुत करबा मे समर्थ होइक। राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहरि आ विभिन्न देशक अनुभवक सन्तुलित समन्वय कएले सँ एहन संविधानक निर्माण सम्भव छल। 395 अनुच्छेद आ 10 अनुसूचीवला लगभग 22 खण्ड मे विभक्ता 400 पृष्ठक भारतीय संविधान एहने अछि।

एक दिस भारतीय संविधान ब्रिटीश काल मे भारतीय शासन लेल पारित विभिन्न अधिनियमक ऋणी अछि तँ दोसर दिस ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड आदि देशक संविधानक कतिपय विशिष्ट तथ्य कँ एहि मे स्थान देल गेलैक। चारूकात उपलब्ध नीक बातक समायोजन सँ जे विशाल बनल ताहि मे ब्रिटिश संसदीय सर्वोच्चता, अमेरिकी संघात्मक व्यवस्था आ स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायालय तथा न्यायिक पुनर्निरीक्षणक सिद्धान्त, कनाडाक आदर्श पर संघ आ राज्यक बीच शक्तिक विभाजन, ऑस्ट्रेलियाक देखादेखी संघ आ राज्य दुनूक अधिकार क्षेत्रवला समवर्त्ती सूची ओ आयरलैंडक अनुसरण करैत राज्य नीतिक निर्देशक सिद्धान्तक व्यवस्था कएल गेल।

निर्मित, लिखित आ सर्वाधिक व्यापक भारतीय संविधान व्यस्क मताधिकार तथा एकल नागरिक्तायुक्त लोकप्रिय प्रभुसत्ताक सिद्धान्त पर आधारित एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न लोकतांत्रिक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष गणराज्यक स्थापना करैछ, जाहि मे अल्पसंख्यक तथा पिछड़ल वर्ग सहित सभक लेल मौलिक, अधिकार आ सामाजिक आदर्श प्रस्तुत कएल गेल अछि। भारतीय संविधानक एहि समस्त विशिष्टताक उल्लेख अन्तिम रूप सँ स्वीकृत संविधानक प्रस्तावना मे भेल अछि।

28. 1907 में कांग्रेसक सूरत अधिवेशन मे पार्टीक दू फाँक भए गेल। एक हिस्सा नरम दल आ दोसर गरम दल। गरमपंथी लोकनि व्यापक जनान्दोलनक पक्षधर छलाह। राजनीतिक स्वतंत्रताक प्राप्ति हुनक लक्ष्य छलनि आ एहि लेल बहिष्कार आन्दोलन कँ ओ सभ असहयोग आन्दोलन मे परिणत करए चाहैत छलाह। परञ्च नरमपंथी एहि पक्ष मे नहि छलाह। अन्य अनेक बिन्दु पर सेहो मतभेद छल।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-४)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. चन्दा झाक प्रमुख रचना अछि-
   (क) मिथिलाभाषा रामायण (ख) रचनावली
   (ग) वचनावली (घ) गीतावली
2. विद्यापतिक संगतुरिया रहथिन-
   (क) भव सिंह (ख) शिव सिंह
   (ग) कीर्त्ति सिंह (घ) ख आ ग दुनू
3. डॉ. सुभद्र झाक जन्म भेल छलनि-
   (क) 1909 ई. मे (ख) 1901 ई. मे
   (ग) 1919 ई. मे (घ) 1911 ई. मे
4. लक्ष्मण झाक आदर्श पुरुष छलथिन-
   (क) लोहियाजी (ख) गाँधीजी
   (ग) कर्पूरीजी (घ) तीनू मे सँ केओ नहि
5. माँगन खबास लोकप्रिय भेलाह-
   (क) संगीत मे (ख) नृत्य मे
   (ग) चित्रकला मे (घ) बासुरी वादन मे

6. गोदवरी दत्तक उल्लेखनीय योगदान अछि–

(क) लोकचित्र कला मे (ख) संगीत मे

(ग) नाट्य मे (घ) नृत्य मे

7. जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह–

(क) सीरध्वज जनक (ख) मिथि

(ग) इक्ष्वाकु (घ) तीनू मे सँ केओ नहि

8. अवहट्ठ मे विद्यापतिक दूटा पुस्तक अछि–

(क) पुरुषपरीक्षा (ख) कीर्तिलता

(ग) कीर्त्तिपताका (घ) ख आ ग दुनू

9. चन्दा झाक निधन भेलनि–

(क) 2007 ई. मे (ख) 1907 ई. मे

(ग) 1901 ई. मे (घ) 1891 ई. मे

10. 'माँ' केर रचयिता छथि–

(क) तारानन्द वियोगी (ख) बुद्धिनाथ मिश्र

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) विद्यानाथ झा	(क) विनोद
(ii) दीनानाथ पाठक	(ख) यात्री
(iii) वैद्यनाथ मिश्र	(ग) बन्धु
(iv) उदयचन्द्र झा	(घ) विदित

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

(क) बाबा कँ बहुत रास .... पसिन नहि छलनि। (बात/काज)

(ख) बाबा .... बिरीछ बड़ पसिन रहनि। (गाछ/पात)

(ग) पण्डित सभ कतेक तरहक चसमा .... हुनक देखलनि। (लगा कय/चढ़ा कय)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध–अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

(i) गाछ–वृक्षक लेल हाइड्रोजन गैस आवश्यक अछि।

(ii) वातावरण कँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर–घर मे होम करबाक परिपाटी छल।

(iii) गाछ–वृक्ष कार्बन डायआक्साइड लैत अछि।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : 10

(लगभग 200 शब्द मे)

(क) अनुशासन

(ख) वसंत ऋतु

(ग) गणतंत्र दिवस

(घ) रिक्सावला

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

डॉ. सुभद्र झाक कृतित्त्व जतेक महत्त्वपूर्ण अछि ताहि सँ कनेको कम उल्लेखनीय हुनक व्यक्तित्त्व नहि छनि। हुनक भेष-भूषा, चालि-ढ़ालि, पहिरब-ओढ़ब, बाजब-बतिआयब सभटा नितान्त साधारण छलनि। हुनका देखि कऽ हुनक विद्वताक अनुमान करब कठिन छल। ओ एकदम साधारण मैथिल जकाँ रहैत छलाह। हुनका देश-विदेश घूमल छलनि तकर दम्भ नहि छलनि। ओ सदिखन ठेठ मैथिली, गाम-घरक मैथिली बजैत छलाह। गप्पक बीच मे हिन्दी-अंग्रेजी-संस्कृत बाजब अथवा विदेश प्रवासक उल्लेख करब- ई सभ हल्लुकपन हुनका नहि छलनि। अपन प्रभाव जमेबाक कोनो प्रयास ओ कहियो नहि कयलनि।

16. अपन पिता कँ एकटा पत्र लिखू जाहि मे अपन विद्यालयक वार्षिक पुरस्कार-वितरणक विर्णन होअए। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि ने करैए। ककरो सँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए, ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

अथवा

संघर्षरत जीवनक नारा होइछ
बुढ़ापाक सहारा होइछ
जीवन-धाराक कूल-प्रकृतिक वनफूल
सृष्टिक अनुकूल होइछ बच्चा
ओ ढ़हलेल छथि जे एकरा
बूझथि जानक जपाल
ओ कंगाल छथि।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

बकलेल, संधान, पावन, अर्चना, घी

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5
जल, छल, जाति, कुल, चित्र
20. विशेषण ककरा कहबैक? एकर भेद सोदाहरण लिखू। 5
21. निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य मे प्रयोग करू : 5
बहत्तरि हाथक अँतरी, पित्ते माहुर, डबडबायल आँखि, खाक छानब, छान तोड़ब
22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5
काकी, मामी, नानी, घर, मकान
23. रौदी आ दाही सँ गाम तबाह अछि, एहि पर निबंध लिखू। 4
24. 'कर्मवीर' पाठ मे नेताक लक्षण निरूपित कयल गेल अछि। स्पष्ट करू। 4
25. एड्सक प्रसारक कारणक उल्लेख करू। 4
26. एड्सक बचावक उपाय बताउ। 4
27. चन्दा झाक जीवनी संक्षेप मे लिखू। 5
28. विद्यापतिक रचना सँ परिचित कराउ। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-४)

1. (क) मिथिलाभाषा रामायण
2. (घ) ख आ ग दुनू
3. (क) 1909 ई. मे
4. (ख) गाँधीजी
5. (क) संगीत मे
6. (क) लोकचित्र कला मे
7. (ख) मिथि
8. (घ) ख आ ग दुनू
9. (ख) 1907 ई. मे
10. (क) तारानन्द वियोगी
11.

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) विद्यानाथ झा	(घ) विदित
(ii) दीनानाथ पाठक	(ग) बन्धु
(iii) वैद्यनाथ मिश्र	(ख) यात्री
(iv) उदयचन्द्र झा	(क) विनोद

12. (क) बात
    (ख) गाछ
    (ग) लगा कय
13. (i) अशुद्ध
    (ii) शुद्ध
    (iii) शुद्ध
14. क) **अनुशासन**

स्वभावतः मनुष्य निर्बन्ध रहए चाहैछ। छोट सँ छोट बंधन ओकरा खटकैछ। ओ ओहि बंधन कँ तोड़िकए विचरण करबाक हेतु सतत लालायित रहैछ मुदा से असम्भव।

कारण, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक। समाजक मध्य रहबाक हेतु पारिवारिक आ सामाजिक शिष्टता एवं मर्यादाक बंधन बीचहि रहिकए लोक समाजक अनुकूल रहि सकैछ। जँ समाज मे कोनो नियम पालन नहि होअए तँ समाज उच्छृंखल भए जाएत आ अराजकता पसरि जाएत। अतएव, समाजक हेतु नियमबद्धता गुण थीक। यैह नियमबद्धता थीक अनुशासन।

जाहि समाज मे आचार आ रहन-सहनक जतेक सुन्दर नियमक पालन होएत से समाज ततेक शिष्ट आ सभ्य होएत। तैँ हेतु अनुशासन सभ्यताक प्रथम सोपान थीक। एकर अवलम्बन कएनिहार समाजक क्रमिक विकास होइछ। यैह कारण अछि जे परिवार आ व्यक्ति अपना सँ श्रेष्ठ व्यक्तिक प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करैछ एवं श्रेष्ठ अपना सँ छोट कँ स्नेह सँ देखैछ। एहि प्रकारक शिष्टाचार समाजक व्यक्ति कँ एक अपूर्व बंधन मे बान्हि दैछ जे सभ्यताक द्योतक होइछ।

एहन अमूल्य अनुशासन सँ अनेको लाभ होइछ। अनुशासित व्यक्ति नम्र होइछ। नम्रता व्यक्तित्व कँ ऊपर उठबैछ। समाज मे भ्रातृभावनाक संचार होइछ। सब अपनापनक भाव सँ आबद्ध भए एकताक पाया के सबल बनबैछ। अुनशासन व्यक्ति कँ प्रेरित करैछ जे ओ माता-पिता आ श्रेष्ठ व्यक्तिक पूजा करए आ हुनक योग्य पुजेगरी प्रमाणित होएबाक हेतु इच्छुक रहए। फलतः आइ जे पुजेगरी अछि से काल्हि पूज्य बनत। अतएव सामाजिक उन्नतिक हेतु अनुशासन परमावश्यक अछि।

आजुक युग मे अनुशासनक बन्धन ढ़ील भए गेल अछि। विद्यालय आ परिवारक मध्य एक महान् अभाव अखड़निहार भए गेल अछि। सदाचार ओ सद्‌विचारक अन्त देखि पड़ैछ। स्वतंत्रताक अर्थ व्यक्तिगत स्वच्छन्दता देखि पड़ैछ।

आजुक युग मे पसरल अनुशासनहीनताक कारण स्पष्ट देखि पड़ैछ। अंग्रेजी सरकारक विरोधी आंदोलनक 'भारत छोड़ो'क नारा सामाजिक जीवन कँ अनुशासन भंग करबाक प्रेरणा देलक। नेताक उच्छृंखल जीवन साधारण व्यक्ति हेतु अनुकरणीय भए गेल अछि। चोर-बाजारी, भ्रष्टाचार, पक्षपात, स्वार्थान्धता, पारिवारिक कलह, अंग्रेजी विद्याक संग अंग्रेजी सभ्यता आ संस्कृति भारतवासी कँ अभारतीय बनएबा मे बड़ पैघ हाथ रखैछ। ताहि पर निर्धनता समाज कँ शिष्टताक नियम तोड़ि कए आंदोलन करबाक हेतु आह्वान करैछ। जीवन मे प्रगति हेतु लिप्सा, असन्तोष आ अविवेक अनुशासनक अंश कँ घोटि जाइछ। फलतः अनुशासन-हीनताक साम्राज्य स्थापित होइछ।

अतएव, सबहि व्यक्तिक प्रगति हेतु अनुशासन आवश्यक थीक। एकर ढ़िलाइ सँ महान क्षति होइछ। अपनहि प्रतिष्ठा रखने सब कँ मान होइछ। तँ सब व्यक्तिक कर्त्तव्य होइछ जे सभ्यताक सोपान अनुशासनक रक्षा हेतु ओ सदा सावधान रहथि।

14. (ख) **वसन्त ऋतु**

यद्यपि, विश्वभरि मे भौगोलिक आधार पर ऋतु चारि मानल जाइछ तथापि भारतवर्ष मे ओ छओ अछि - ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, हेमन्त आ वसन्त। जेठ सँ प्रारम्भ भए वैशाख तक सब ऋतुक चक्र पूरा भए जाइछ। ऋतुराज वसन्त चैत्र या वैशाख मे सुन्दर साज-सज्जा धारण कए अपन दलबलक संग विराजमान रहै छथि।

एहि ऋतुक आगमन सँ पूर्व सी-सी करैत शिशिर सब कँ शिथिल कए दैछ। धनिक-गरीब सबहक हाड़ कँ हिलौनिहार, धीयापुताक स्वच्छन्द क्रीड़ा मे बाधा देनिहार जाड़ जीवजन्तु कँ ताहि तरहँ जकड़ि लैछ जे ओकर अन्त असम्भव देखि पड़ैछ। परञ्च परिवर्त्तनशील जगत मे स्थायी रहनिहार के? काल हिनकहु हँसा-खेलाकए गालतर दाबि लैछ।

प्रकृत अपन उजड़ल आ उखड़ल स्वरूपक परित्याग कए नवल वसन धारण करैछ। कोमल किसलय, मृदु मंजरिक हेमहार, रंगबिरंगक प्रफुल्लित पुष्प, शीतल मंद-सुगंध समीर, भ्रमरक गुंजन, कोकिलाक तान, ऋतुराजक आगमनक सूचना दैछ।

एहि ऋतु मे प्रकृति सुन्दर स्वरूप धारण कए उपस्थित होइछ। एहि समय मे गाछ-वृक्ष मे नवपल्लव लगैछ। आमक गाछ मे मंजुल मंजरि देखि पड़ैछ। सरिसक पीअर-पीअर, तीसीक नील आ कुसुमक लाल-लाल फूल उद्यानक विभिन्न रंगक पुष्पक संग अवनीक आँचर कँ अनुपम आभा प्रदान करैछ। स्वच्छ सरोवरक अमृत सदृश निर्मल जल मे क्रीड़ा कमलक कमनीय कली कुटील कटाक्ष सँ दर्शकक मन कँ आकृष्ट कए अपूर्व आह्लादकता उत्पन्न करैछ। फलतः, उत्फुल्ल उर मे उल्लास आ उमंग उमड़ि पड़ैछ। उद्यान मे उपस्थित उत्फुल्ल लवङ्‌गलता, खलखल हँसैत जूही, चमचम करैत चम्पा, चमेली, बेली आ कचनार वायुमंडल कँ आमोदित कएने रहैछ। वस्तुतः, उद्यानक छवि-छटा देखि सब मुग्ध भए जाइछ।

मानवक हेतु ई ऋतु आनन्द आ उल्लास सँ पूर्ण रहैछ। सबहक हृदय मे उत्फुल्ल उमंग उमड़ि पड़ैछ। शरीर मे सुन्दर स्फूर्ति समाए जाइछ आ मन मे मनोरम मस्ती लक्षित होइछ। मधुर मलयानिल, सुन्दर सुगन्धि, मधुपक मनमोहक गुंजन, कोकिल कोमल एवं मर्मस्पर्शी आलाप, प्रकृतिक वासन्ती छटा कखन ककर मोन नहि मोहि लैछ। मुग्ध

मानवक हृदय मे नव कल्पनाक कमनीयता माधुर्य मे शराबोर भए भव्य भावना जागए दैछ। जीवनलता अनुपम आभा सँ आभूषित भए उन्मुक्त वातावरणमे लहलठा उठैछ। हास-विलास आ आमोद-प्रमोद मानव जीवन कँ मधुमय मनोहरता प्रदान करैछ। वसंतपचमी आ फगुआ अगुआ बनि मानवमन मे अनिर्वचनीय आनंदक सृजन करैछ। मन्मथक वाण सँ विद्ध मानसमन मस्त देखि पड़ैछ। सबहि व्यक्तिक मुखमण्डल पर अनुपम आभाक आभास भेटैछ। फलतः, सरसता निस्सार जीवन कँ सरस बनाकए अवनी कँ स्वर्गहु सँ सुन्दर स्थल मे परिवर्तित कए दैछ।

15. शीर्षक : गाम-घरक प्रतीक पुरूष

वस्तुतः डॉ. सुभद्र झा गाम-घरक प्रतीक पुरूष छलाह। कृत्रिमता सँ कोसो दूर रहनिहार व्यक्ति रहथि। देश-विदेशक अनुभवक अछैत व्यवहार-बात मे गमैया प्रवृत्तिक लोक छलाह। ओ एक सहज मैथिल छलाह।

प्रदत्त शब्द सख्ंया-90

संक्षिप्त शब्द संख्या-30

16. पूज्य बाबूजी — पटना

सादर प्रणाम्। — 15/12/2016

अहाँ कँ ई जानि प्रसन्नता होएत जे हमर विद्यालयक वार्षिक पुरस्कार-वितरण समारोह काल्हि सम्पन्न भेल आ ओहि मे हमरा दूटा पुरस्कार भेटल। सप्ताह दिन पूर्वे सँ एकल तैआरी चलि रहल छलैक। समारोह-स्थल कँ नीक जकाँ सजाओल गेल छल। बिहारक राज्यपाल एहि अवसर पर उपस्थित छलाह।

राज्यपाल महोदय निश्चित समय पर आबि गेलाह। दुआरि पर प्रधानाध्यापक आ शिक्षकगण हुनक स्वागत कएलथिन। कार्यक्रमक प्रारम्भ दुइ छात्रक स्वागत-गान सँ भेल। ओ लोकनि राज्यपाल कँ माला पहिरौलनि। ओकर बाद प्रधानाध्यापक एकटा रिपोर्ट पढ़लनि जाहि मे विद्यालयक इतिहास एवं एकर प्रगतिक चर्चा कएल गेल। तत्पश्चात् संगीत, नृत्य एवं आन-आन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल। तकरा बाद पुरस्कार-वितरण आरम्भ भेल। पुरस्कार पौनिहार छात्र सँ राज्यपाल हाथ मिलबैत छलाह। हमरो दूटा पुरस्कार भेटल। अन्त मे अध्यक्ष महोदय एक छोटसन मुदा शिक्षाप्रद भाषण देलनि। ओ अपन भाषण मे हमरा लोकनि कँ अनुशासन मे रहबाक विचार देलनि। ओकर बाद प्रधानाध्यापक राज्यपाल एवं आगन्तुक लोकनिक धन्यवाद ज्ञापित कएलनि। 'जन-गण-मन'क सामूहिक गानक संग सभाक कार्यवाही समाप्त भेल।

माँ कँ हमर प्रणाम् कहबनि।

श्री गौरीकान्त मिश्र — अहाँक

ग्रा.–धनेरामपुर, पो.–लोहना रोड — अप्पू

जिला–दरभंगा (847407)

17. प्रस्तुत गद्यांश 'क्रैक' कथा सँ उद्धृत कएल गेल अछि। एकर कथाकार थिकाह उमाकान्त।

विवेच्य पाँती एक टेम्पो चालकक प्रसंग कहल गेल अछि। टेम्पो चालकक नाम छैक क्रैक। ओ अपन व्यवहार सँ सवारी सभहिक मोन मोहने रहैए। आन टेम्पो सँ जल्दी क्रैकक टेम्पो भरि जाइत छैक। ई देखि आन टेम्पोवाला सब सवारी कँ भड़कबैत छैक जे क्रैकक टेम्पो मे नहि चढ़ू। ओ कतहु एक्सीडेन्ट कराए देत। परञ्च क्रैक कँ ओहि सँ कोनो प्रभाव नहि पड़ैत छैक। ओ ककरो परवाहि नहि करैए। अपन काज मे मस्त रहैत। ककरो सँ ओकरा कुन्नह नहि छैक। सदिखन खिलखिलाइत प्रसन्न चित्त सँ टेम्पो हँकैत रहैए।

अथवा

प्रस्तुत पाँती उदयचन्द्र झा 'विनोद' रचित कविता 'बच्चा' सँ लेल गेल अछि।

विवेच्य पाँती मे बच्चाक महत्त्व कँ देखाओल गेल अछि। बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूप मे माय–बापे कँ नहि, सामूहिक रूप मे सम्पूर्ण सृष्टि कँ विकसित होएबाक, फुलएबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा एनि रहत तँ मनुक्ख नहि रहत, सृष्टि नहि रहत। बच्चा संघर्षशील बनबैत अछि। बुढ़ारीक लाठी होइछ बच्चा। जीबाक लेल स्नेह–रागक भावना भरैत अछि। तँ नेनाक महत्त्व बुझबाक चाही। ओकर विकास लेल सतत सचेष्ट रहक चाही। ओ व्यक्ति ढ़हलेल छथि, कंगाल छथि जे बच्चा कँ जानक जपाल बुझैत छथि। जीवन आ जगतक स्थायित्व एवं विकासक मूलमन्त्र अछि बच्चा।

18. बकलेल – रामक बेटा बकलेल छै।

संधान – ओ संधानक क्रम मे दिल्ली गेल छलाह।

पावन – माय-बापक सेवा पावन कर्त्तव्य बूझल जाइछ।

अर्चना – अर्चना बी. ए. मे पढ़ैत अछि।

धी–धी बेटी – लोकनि विवाह मे गेल छथि।

19. संज्ञा विशेषण

संज्ञा	विशेषण
जल	जलीय
छल	छलिया
जाति	जातीय
कुल	कुलीन
चित्र	चित्रित

20. विशेषण ओ शब्द थीक जे संज्ञाक विशेषताक बोध कराबए। यथा – लाल रंग आकर्षक लगैछ। एतए 'लाल' शब्द 'रंग'क विशेषताक बोधक होएबाक कारणेँ विशेषण थीक।

विशेषण छओ प्रकारक होइत अछि –

क) गुणवाचक विशेषण – एहि सँ संज्ञा वा सर्वनामक रंग, गुण, आकार, स्थान, काल आदिक बोध होइछ। यथा–बूढ़सन गाय, पटना, नायक, नगर आदि।

ख) संख्यावावक विशेषण – एहि सँ गणना, क्रम, गुणा, आवृत्ति आ समूह इत्यादिक बोध होइछ। उदाहरणार्थ –सात व्यक्ति, चारि गुणा आदि।

ग) निश्चयवाचक विशेषण – एहि सँ निश्चित पदार्थक बोध होइछ। यथा– एहन वर, ओहने रूप आदि।

घ) अनिश्चयवाचक विशेषण – एहि सँ अनिश्चित पदार्थक बोध होइछ। यथा–किछु व्यक्ति, थोड़ जल आदि।

ड़) परिमाणवाचक विशेषण – एहि सँ परिमाण अथवा मात्राक बोध होइछ। यथा–तीन सेर अन्न।

च) सार्वनामिक विशेषण – अनेको सर्वनाम संज्ञापदक पूर्व आबिकए ओकर विशेषताक बोध करबैत अछि। एहि तरहक विशेषण सार्वनामिक विशेषण कहबैछ। उदाहरणार्थ – कओन व्यक्ति, ककर पोथी आदि।

21. बहत्तरि हाथक अँतरी (धूर्त) – विश्वनाथक थाह के पाओत, कारण हुनका बहत्तरि हाथक अँतरी छनि।

पित्ते माहुर (तमसाएब) –रामक करनी पर हुनक पिता पित्ते माहुर भए गेलथिन।

डबडबायल आँखि (आँखि मे नोर भरब) –माँक मृत्युक खबरि पानि अर्चनाक आँखि डबडबा गेलनि।

खाक छानब (भटकब) –नोकरीक हेतु मनोहर देश–विदेशक खाक छनलक।

छान तोड़ब (अत्यधिक उत्सुक होएब) – रविकान्त! छान तोड़ने किछु नहि होएतह कारण भोज समये पर होएतैक।

22. काकी — काकी
मामी — मामी
नानी — नानी
घर — घर
मकान — मकान

23. मिथिलाक गाम आ गामक लोक प्रकृतिक मारि सँ हरान रहैछ। कखनो रौदी तँ कखनो दाही, एतुक्का खेतिहर समाजक डाँड़ तोड़ि दैत अछि। मिथिला मे उद्योग-धन्धाक नाम पर किछु नहि अछि। तखन तँ बाँचल खेती। खेतियो लेल उचित पटौनीक सुविधा नहि अछि। कृषक वर्ग पटौनी लेल इन्द्र भगवानक कृपा पर आश्रित रहैत छथि। इन्द्र समय पर अपन कृपा नहि देखबैत छथिन। जखन कृषक जजाति कारबा लेल ओरिआओन मे लागल रहैत छथि तखने बाढ़िक विभीषिका विकराल रूप धारण कएने उपस्थित भए जाइछ। खेत-पथारक अतिरिक्त हुनका लोकनिक घर-दुआरि सेहो ओहि मे भसिआए जाइछ। एहिना रौदी मे किसान लोकनिक धानक बीया झरकि जाइत अछि। तखन आनठाम सँ बीज आनि धनरोपनी करैत छथि आ भेल धान बाढ़ि बहाए लय जाइछ।

मिथिला मे बाढ़ि अबैछ, रौदी होइछ, नाना प्रकारक विपत्ति पड़ैछ, मुदा एहिठामक लोक ओकरा लिखलाहा मानि बैसल रहैत अछि। एतबे नहि, अपन अतीतक दोहाइ दैत रहब एतुक्का लोकक आदति बनि गेल छैक।

24. नेता ओ थिक जे समाजक दुखमय शोषण-पीड़नक जाल कँ गोवर्द्धन पर्वत सदृश अपन आँगुर पर तत्काल उठाए लेथि। अर्थात् जनताक दुख-कष्ट कँ दूर करबा लेल सदति तत्पर रहथि। विषक घट कँ स्वयं पीबि अमृत सदृश सुधा रस जे एहि संसार मे बाँटि सकैछ सैह मर्त्यलोक सँ देवलोक धरि नेता कहबैत अछि। विष-ज्वाला सँ परिपूर्ण नागक फन पर चढ़ि जे नाचि सकैछ सैह समाज, धर्म आ राष्ट्रक जननेता कहबैत अछि। राष्ट्रक घोर संकट कँ टारि अपन बलिदान देमए सैह नेताक गरिमा कँ पुष्ट करैछ। कहबाक अभिप्राय जे नेता कँ अपन जनताक कष्ट, शोषण आ उत्पीड़न कँ देखि तुरंत ओकर समाधान तकबाक चाही।

25. एड्सक प्रसारक कारण मे मुख्य अछि अवैध शारीरिक संबंध तथा रक्तक दान करबा काल ओहि मे संक्रमणक होएब। परदेश मे रहनिहार लोक एक सँ अधिक महिलाक संग दैहिक संबंध स्थापित कए लैत छथि, तै सँ एड्स नामक रोग जन्म लैछ। एहिना रक्त मे संक्रमण भेला सँ सेहो ई रोग भए जाइत अछि।

26. एड्स सँ बचाव लेल पहिल उपाय अछि जे एक सँ अधिक महिलाक संग यौन संबंध स्थापित नहि करी। जँ स्थापित करी तँ निरोध (कंडोम)क व्यवहार करी। सुइ लेबा काल ध्यान राखी जे सिरींज नव रहए, सुइ नव रहैक।

27. चन्दा झा मैथिलीक आधुनिक युगक रचनाकार छथि। मैथिली साहित्यक आधुनिक काल हिनके रचना सँ गुरू होइछ। ई युग-प्रवर्त्तक रचनाकार छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक पिण्डारूच गाम मे 20 जनवरी, 1831 ई. कँ भेलनि। बाद मे ई मधुबनी जिलाक ठाढ़ी गाम मे बसि गेलाह। हिनक शिक्षा-दीक्षा भेलनि मातृक मे-सहरसा जिलाक बड़गाम मे। गन्धवारि आ नरहन ड्योढ़ी मे पण्डित-शिक्षकक रूप मे काज कएलाक बाद दरभंगा राज-दरबार मे आबि गेलाह। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह आ रामेश्वर सिंहक समय मे ई ओहिठामक सभा-पंडित छलाह। 14 दिसंबर, 1907 ई. कँ हिनक निधन भेलनि।

चन्दा झा बहुआयामी व्यक्तित्वक लोक छलाह। मैथिली भाषा आ साहित्यक विकासक लेल ई कतेक प्रकारक काज कएलनि। पहिल काज छल मैथिलीक प्राचीन साहित्यक खोज करब। मिथिलाक गामे-गाम घूमि कए ओ जे अनुसन्धान एकलनि ताहि मे प्रमुख अछि विद्यापतिक गीत। विद्यापतिक लिखल 'पुरुषपरीक्षा'क अनुवाद कएलनि। बहुत रास भक्तिक गीत सृजन सेहो कएलनि। हिनक मुक्तक कविताक दूटा संग्रह उल्लेखनीय अछि- 'चन्द्रपद्यावली' तथा 'चन्द्र रचनावली'। दुनू पोथी चन्दा झाक मृत्यु बाद प्रकाशित भेल। एहि मे भक्ति-गीत सँ देशदशा विषयक गीत धरि संगृहीत अछि। जीवन आ जगतक प्रति चन्दा झाक दृष्टिकोण, वैचारिकता एवं भावुकता हिनक मुक्तक कविता मे मुखर भेल अछि। ओ अपन समयक आँखि आ मुँह दुनू छलाह।

28. विद्यापति तीन भाषा मे अपन रचना कएलनि- संस्कृत, अवहट्ट आ मैथिली। संस्कृत में हुनक प्रमुख कृति अछि-पुरूषपरीक्षा, लिखनावली, विभागसार आदि। अवहट्ट मे कीर्तिलता आ कीर्तिपताका नामक दूटा पुस्तक अछि। ई सभ पोथी तत्कालीन स्थितिक दस्तावेज थिक। 'पुरुषपरीक्षा' मे छोट-छोट कथाक माध्यम सँ किशोर वएसक शिक्षार्थी कँ जीवन आ जगत सँ परिचित कराओल गेल अछि। मैथिली मे विद्यापति मात्र गीत लिखलनि। हुनक गीत कँ मोटामोटी तीन भाग मे बाँटल जाए सकैछ- राधा-कृष्ण सँ सम्बन्धित गीत, गौरी महादेव विषयक गीत आ सामान्य व्यवहारक गीत। राधा-कृष्ण विषयक गीत प्रेमगीत थिक। नारी आ पुरुषक प्रेमगीत। शिव-पार्वतीक गीत दू प्रकारक अछि- महेशवानी आ नचारी। महेशबानी मे गौरी आ महादेवक दाम्पत्य जीवनक प्रसंग सभ अछि। नचारी एक प्रकारक भक्ति-गीत अछि। एहि दुनू प्रकारक गीतक अतिरिक्त अछि- व्यवहारगीत। मिथिलाक सामाजिक रीति-रेवाज, पावनि-तिहारक अवसर पर गएबाक लेल जे किछु गीत विद्यापति लिखलनि से एहि कोटिक गीत थीक। छटिहार, बिआह, पूजा-पाठ, धर्म-कर्म आदि काज मे स्त्रीगण सभ यैह गीत गबैत छथि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-५)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. तारानन्द वियोगीक रचना अछि
   (क) माँ (ख) हाथ (ग) रौदी अछि (घ) वन्दना

2. 'हाथ' कविताक रचयिता छथि
   (क) सुकान्त सोम (ख) विद्यानाथ झा 'विदित'
   (ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) बुद्धिनाथ मिश्र

3. 'यात्री' उपनाम छनि
   (क) सुरेन्द्र झाक (ख) वैद्यनाथ मिश्रक
   (ग) अशोकक (घ) काशीकान्त मिश्रक

4. 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक कवि थिकाह
   (क) चन्दा झा (ख) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
   (ग) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (घ) सुस्मिता पाठक

5. जनक राजवंशक राजधानी कहौलक
   (क) काठामांडू (ख) जनकपुर (ग) सिरहा (घ) दरभंगा

6. 'कवीश्वर' नाम सँ प्रसिद्ध छथि
   (क) विद्यापति (ख) हर्षनाथ (ग) चन्दा झा (घ) अमृतकर

Cont. ....

7. 'चन्द्र-रचनावली' पोथीक सम्पादक छथि

(क) विश्वेश्वर मिश्र (ख) भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'

(ग) रामदेव झा (घ) दुर्गानाथ झा 'श्रीश'

8. विभारानीक कथा-संग्रह अछि

(क) धरती माता (ख) खोह सँ निकसइत

(ग) गाम सुनगैत (घ) चितकाबर

9. डॉ. सुभद्र झाक निधन भेलनि

(क) 13 मई, 2000 मे (ख) 14 जून, 2001 मे

(ग) 5 मार्च, 1995 मे (घ) 6 अगस्त, 2005 मे

10. लक्ष्मण झा कँ पी-एच.डी. क उपाधि भेटलनि

(क) 1949 ई. मे (ख) 1947 ई. मे

(ग) 1937 ई. मे (घ) 1950 ई. मे

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) राजमोहन झा	(क) माँ
(ii) भोलालाल दास	(ख) भोजन
(iii) रामलोचनशरण	(ग) राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा
(iv) तारानन्द वियोगी	(घ) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

(क) भारत छोड़ो आंदोलन ....ई. मे भेल। (1942/1941)

(ख) भारतीय संविधान मे......................अनुच्छेद अछि। (395/399)

(ग) भारतक संविधान ....अछि। (लिखित/अलिखित)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

(i) अंबेदकरक वंशज दीर्घ अवधि धरि ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनीक सेना मे कार्यरत रहथि।

(ii) अंबेदकर कँ 1916 ई. मे पी. एच. डी. उपाधि भेटलनि।

(iii) 1952 क लोक सभा चुनाव मे अंबेदकर विजयी भेलाह।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

(क) स्वदेश-प्रेम (ख) देशाटन (ग) परोपकार (घ) स्वावलम्बन

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

मिथिलाक लोकचित्रकला पर मुख्यत: महिले लोकनिक एकाधिपत्य अछि। ओ एहि क्षेत्रक कलाविभूति पद्मश्री गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी आ महासुन्दरी देवी

सँ विशेष प्रभावित छथि। एहि पारम्परिक लोकचित्रकलाक शिक्षण-प्रशिक्षणक कोनो औपचारिक व्यवस्था नहि छैक। एहिठामक स्त्री लोकनि कँ चित्रकलाक ज्ञान पारिवारिक अथवा कौटुम्बिक परिवेशे सँ भेटैत छनि। मुदा गोदावरी दत्त प्रति वर्ष दसटा शिष्या कँ प्रशिक्षण दैत आबि रहल छथि। हिनक, छोट बहिन शशिकला एकटा चर्चित चित्रकर्मी बनि गेल छथि, जे हुनक शिष्या सेहो छलथिन।

16. अपन संगी कँ एकटा पत्र लिखू जाहि मे ई बुझाउ जे अहाँ गर्मीक छुट्टी कोना बितौलहुँ। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

अपन समान सभ कँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्व मे कतहु आनठाम नहि अछि। एहने लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छलाह।

अथवा

मिथिलाक संस्कृति मे लोक संस्कृतिक सभ सँ महत्वपूर्ण अवदान आत्मीयता हमरा लोकनि कँ बाबा सँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृति सँ सिखबाक चाही।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

मीता, विभीषिका, उमडाम, बाध-बोन, सिहकी

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

पाँक, राष्ट्र, यश, भारत, ठक

20. लिंग सँ अहाँ की बुझैत छी? एकर भेद सोदाहरण लिखू। 5

21. निम्न शब्दक पर्यायवाची लिखू : 5

जल, वृक्ष, वन, घर, नदी

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

काका, बाबा, मामा, नाना, पापा

23. पूर्व में वृक्षारोपणक कोन उद्देश्य छलैक? 4

24. प्राचीन आ आधुनिक भोजनक प्रसंग लेखकक विचार स्पष्ट करू। 4

25. चन्द्रमुखीक चरित्र-चित्रण करू। 4

26. मैथिलीक पक्ष मे दोसर भाषाक विद्वान द्वारा प्रकट कयल गेल विचारक उल्लेख करू।

27. भैयाक नहि अयला पर बहिनक स्थितिक वर्णन करू। 5

28. वर्षा भेलाक उपरान्त प्रकृतिक की रूप होयत? 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-५)

1. (क) माँ
2. (क) सुकान्त सोम
3. (ख) वैद्यनाथ मिश्रक
4. (ख) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
5. (ख) जनकपुर
6. (ग) चन्दा झा
7. (क) विश्वेश्वर मिश्र
8. (ख) खोह सँ निकसइत
9. (क) 13 मई, 2000मे
10. (क) 1949 ई. मे
11.

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i)	राजमोहन झा	(ख) भोजन
(ii)	भोलालाल दास	(ग) राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा
(iii)	रामलोचनशरण	(घ) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा
(iv)	तारानन्द वियोगी	(क) माँ

12. (क) 1942
    (ख) 395
    (ग) लिखित
13. (i) शुद्ध
    (ii) शुद्ध
    (iii) अशुद्ध

14. (ख) **देशाटन**

मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी अछि। ओ सदतिकाल अपन बुद्धिक विकासक हेतु इच्छुक रहैछ। अपन समीपस्थ वस्तुजातक ज्ञान प्राप्त कए ओ दूरस्थ वस्तुपर्यन्तक जानकारी हासिल करए चाहैत अछि। ओकर जिज्ञासा वृत्ति सर्वदा सजग रहैछ। कोनहु वस्तुविशेषक कारणक अनुसंधान करब, छानबीन करब आ पूर्णरूपेण ताकब ओकर स्वाभाविक प्रवृत्ति होइछ। थैह कारण थीक जे ओ अज्ञात, अगम आ अथाह स्थानक परिचय पएबाक हेतु उद्यत रहैछ। ओ अपन ज्ञान पिपासा कँ शान्त करए हेतु पुस्तकक आश्रय ग्रहण करैछ परंच ओकर ज्ञान अपूर्ण रहैछ। अनुमित ज्ञान सँ वस्तुक साक्षात्कार नहि होइछ आ ने ओकर ठोस रूपे देखि पड़ैछ। एहि हेतु ओ भ्रमण कए विभिन्न स्थान मे स्थित सामानक सौन्दर्यविलोकन करैछ। यैह भ्रमण थीक देशाटन।

यद्यपि प्राचीन काल मे लोक देशाटन करैत छलाह तथापि हुनका लोकनिक देशाटन मुख्यतया तीर्थाटन होइत छल। भौगोलिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि स्थितिक जानकारी प्राप्त करबाक ओ ततेक इच्छुक नहि रहैत छलाह। आजुक युग वैज्ञानिक अछि तथा अन्वेषण आ अनुसंधान सँ ई अणुप्राणित अछि। एहि समय मे मानव अप्रत्यक्ष सँ अधिक प्रत्यक्ष कँ महत्त्व दैछ। यैह कारण अछि जे ओ देशाटन-प्रेमी भए गेल अछि।

देशाटनक समय अछि शरद आ वसन्त ऋतु। मुदा छात्रक हेतु परीक्षोपरान्तक समय अधिक उपयोगी होइछ। भ्रमणकारी समवयस्क संगी होथि तँ उत्तम मुदा आचरणक पवित्रता, मिताहार, सत्यवादिता, सज्जनता, स्नेहशीलता, मधुरभाषिता आ स्वावलम्बनप्रियता आदि गुण अपेक्षित अछि।

देशाटन बड़ लाभप्रद होइछ। विविध विषयक जानकारी प्राप्त कएला सँ ज्ञानवृद्धि होइछ। देश-विदेशक प्रत्यक्ष ज्ञान सँ कूपमण्डूकताक विनाश होइछ आ उदारता उत्पन्न होइछ। स्वास्थ्यप्रद स्थान मे भ्रमण कएने स्वास्थ्यलाभ होइछ। यैह कारण अछि जे शिमला, मसूरी, राँची आदि स्थान मे लोक भ्रमण करैछ। राजनीतिक ज्ञानक उपार्जन होइछ। वाणिज्य-व्यवसाय मे उन्नति होइछ। तर्क-वितर्क सँ काज लेला पर बुद्धि मे कुशाग्रता अबैछ। सभ्यता आ संस्कृतिक आदान-प्रदान होइछ।

एतेक लाभप्रद देशाटन सँ मुँह मोड़ब उचित नहि। परंच आर्थिक संकट, पारिवारिक झंझटि, आलस्य एवं अन्धविश्वास एखन धरि देशवासी कँ देशाटन दिस सँ नजरि फेर देने छनि। आजुक उन्नतिशाली देश सर्वदा देशाटनक प्रिय रहल अछि। तँ अन्य देशक संग चलए हेतु देशाटन सँ लाभ उठाएब उचित अछि।

अतः ध्यान देबए पड़त जे देशाटन सँ लाभ उठाएब सबहक कर्त्तव्य थीक। सरकार देशाटन मे सुविधा देबए हेतु साकांक्ष भए रहल अछि। अवसर पाबिकए देशाटन सँ लाभ उठाकए अपन, समाज, देश आ राष्ट्रक उन्नति करब प्रत्येक देशवासीक कर्त्तव्य थीक।

14. **(घ) स्वावलम्बन**

मनुष्य मात्र अपन भाग्यक विधाता अपने अछि। मुदा प्रश्न ई अछि जे कोन मनुष्य एहि तरहक अछि जे अपन भाग्यक निर्माण स्वयं करैत अछि। तखन अहाँ कँ मानए पड़त जे एहि श्रेणीक लोक अपन पएर पर ठाढ़ रहि अपने भरोसे चलैछ। अपन गुणक विकासक संग बढ़ैत अछि। आगू बढ़ि अपन जीवन-पथ पर बाधा-विध्न कँ दूर हटबैत उन्नतिक शिखर पर बढ़ैत अपना पएर पर अवलंबित रहनिहार होइत छथि। स्वावलम्बन कँ मनुष्यक उन्नतिक सोपान मानल गेल अछि।

स्वावलम्बनक महत्त्व मानव जीवन मे बड़ पैघ मानल गेल अछि। ओ अपन गुण, ज्ञान, शक्ति एवं स्थितिक अनुसार सब कार्य करैत छथि। एहि सँ हुनक साहस बढ़ैत छनि, संग-संग गुणक विकास सेहो होइत रहैत छनि। एहन व्यक्ति कँ पाबि समाज उन्नतिक दिस अग्रसर होइछ। परावलम्बी भेल मनुष्यक जीवन शक्तिहीन, शिथिल आ असहाय बनि जाइछ। हुनका लोक हेय दृष्टि सँ देखैत छनि। स्वावलम्बी कँ देखि समाज आत्मगौरव अनुभव करैछ।

मनुष्य कँ स्वावलम्बी होएब परमावश्यक अछि। बढ़ियाँ सँ बढ़ियाँ नियम-कानू आ उत्तम सँ उत्तम संस्था मनुष्यक उन्नति लेल सहायक नहि भए सकैछ। ओहि सँ मात्र कार्य करबाक स्वतंत्रता भेटैत छैक। मुदा सुस्त कँ उद्यमी, फिजुलखर्ची के मितव्ययी आ मद्यपान केनिहार कँ संयमी बनेबाक शक्ति छैक स्वावलम्बी पुरुषक अभ्यास आ आचरण मे। वास्तव मे स्वावलम्बन मानव जीवन लेल अमृतक समान अछि। जे स्वावलम्बी नहि बनैछ ओ देशक लेल बोझ रहैछ। ओ सतत परमुखापेक्षी बनल रहैछ। अपना लेल अपने किछु ने कए सकैछ आ ने सोचि सकैछ।

स्वावलम्बनक उदाहरण संसार मे अनेकानेक भरल पड़ल अछि। एकर मात्र अनुकरण कएला सँ व्यक्ति अपनहुँ आगू बढ़ल आ समाज देश कँ सेहो प्रगतिक पथ पर आगू बढ़ौलक। स्वावलम्बी पुरुष छलाह अब्राहम लिंकन, हिटलर, मुसोलिनी, राजेन्द्र प्रसाद, राम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, कबीर दास, तुलसीदास, शंकराचार्य इत्यादि कतोक उदाहरण गनाओल जाए।

जे कोनो व्यक्ति संसार मे आगू बढ़ल सब स्वावलम्बनेक बल पर। अत: हमरा लोकनि स्वावलम्बी बनी, तखनहि हमर समाज आ देशक कल्याण होएत।

15. शीर्षक : गोदावरी दत्त: एक कुशल प्रशिक्षिका

गोदावरी दत्त एक कुशल लोकचित्रकला प्रशिक्षिका छलीह। एहि कलाक प्रशिक्षणक कोनो समुचित व्यवस्था नहि छैक। मुदा गोदावरी दत्तजी प्रतिवर्ष दसटा शिष्या कें प्रशिक्षित करैत रहलीह।

प्रदत्त शब्द संख्या-77

संक्षिप्त शब्द संख्या-25

16. प्रिय सुमन — पटना

नमस्कार। — 15.12.2016

तोहर पत्र भेटल। ई जानि प्रसन्न भेलहुँ जे तों पछिला गर्मीक अवकाश मे अपन काका ओतए गेल छलें। हमहूँ गर्मीक छुट्टी मे गाम पर नहि छलहुँ। हम तोरा एहि चिट्ठी मे कहि रहल छियौ जे हम ई छुट्टी कोना बितौलहुँ।

जँ कि हमर विद्यालय बंद भेल, हम घर चलि गेलहुँ। हमर माँ हमरा देखि बड़ प्रसन्न भेलि। प्राय: एक सप्ताह धरि हम घर पर रहलहुँ। तकरा बाद हम राँची चलि गेलहुँ। ओतए हमर मामाजी रहैत छथि। शेष छुट्टी हम राँचीमे बितौलहुँ। राँची बड़ रमणीय स्थान अछि। ओहिठाम देखबा लेल बहुत रास वस्तु अछि। हम सबटा प्रमुख स्थानक दर्शन कएलहुँ। ओतुक्का जलवायु सेहो उत्तम अछि। छुट्टी समाप्त होअए सँ दू दिन पूर्व हम पटना आबि गेलहुँ।

आशा अछि, तोँहू प्रसन्न हेबेँ।

सुशांत कुमार चौधरी — तोहर अभिन्न मित्र

डी. ए. वी. स्कूल — प्रशान्त

कक्षा-7, क्रमांक-6

दरभंगा

17. प्रस्तुत गद्यांश अशोकक 'बबाक आत्मीयता' शीर्षक निबन्ध सँ लेल गेल अछि। एतए बाबाक समदर्शी व्यक्तित्व सँ परिचय कराओल गेल अछि।

सौंसे भारत मे बाबाक हजारो परिवार रहनि। हजारो परिवार मे बाबा (वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री') अपन यात्रा मे रहल छलाह। परिवारक हरेक सदस्यक, ओ बाबा रहथि।

स्त्रीगण आ नेना सभक तँ ओ खास लोक छलाह। एकदम अप्पन लोक। जकरा ओ अपन सुख-दुख कहि सकैत अछि। बाबा सभ कँ नीक बात सिखबैत रहथिन। बच्चा सभक संग ओ संगतुरिया बनि कए खेलाइत छलाह। लोक हुनकर बात कँ ध्यानपूर्वक सुनए। आइ-कालिह जखन लोक अपने मे जीबए चाहैए। आन परिवार मे रहबा मे असुविधाक अनुभव करैए। अपने ओछाओन नीक लगै छै। अपने तकिया पर नींद होइ छै। खएबा-पीबाक अपन खास रंग-ढ़ंग भए गेल छैक। तखन बाबा कोना एतेक-एतेक भिन्न-भिन्न परिवार मे रहि जाइत छलाह। बाबा कँ ई सामर्थ्य अपन संस्कृति सँ भेटनि। ओ सभ कँ समान दृष्टि सँ देखैत छलाह। एहने व्यक्ति सँ संरक्षकक प्रतिष्ठा बढ़ैत अछि।

अथवा

प्रस्तुत गद्यांश अशोकक 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक सँ लेल गेल अछि। एतए मिथिलाक संस्कृतिक वैशिष्ट आत्मीयता पर प्रकाश देल गेल अछि।

बाबा अर्थात् वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' कँ मिथिलाक प्रत्येक वस्तु सँ आत्मीयता छलनि। एतुक्का लोक-वेद, बाध-बोन, खेत-पथार सभ वस्तु सँ अद्‌भुत आत्मीयता रहनि। ओ ककरो छोट नहि बुझैत छलाह। ओ अपन समाने सभ कँ बुझैत छलाह। एकोस्ती अहं हुनका बरदास्त नहि छलनि। समाजक लेल गरीबक लेल ओ ककरो सँ भीड़ि सकैत छलाह। पोखरि, माछ, मखान, कोदारि, खुरपी, हर, खेती मे काज आबएवला औजार सभ हुनका बड़ प्रिय लागनि। आचार आ विचार मे बाबा कनेको अन्तर नहि रखैत छलाह।

वस्तुत: जँ ककरो आत्मीयता सिखबाक होइक तँ बाबा उर्फ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' एकटा आदर्श पुरूष छथि, मैथिल संस्कृति मे पूर्णरूपेण निमज्जित।

18. मीता - हमर लंगोटिया मीता गाम सँ चलि गेल।

विभीषिका -नेपाल मे आएल भूकम्पक विभीषिका सँ लोक डराएल अछि।

उमडाम - कमला नदी बाढ़िक पानि सँ उमडाम अछि।

बाध-बोन- बाढ़िक पानि बाध-बोन सौँसे घुसि गेल।

सिहकी - पछबाक सिहकी सँ लोक ठिठुरि रहल छैक।

19.

संज्ञा	विशेषण
पाँक	पाँकी

राष्ट्र राष्ट्रीय
यश यशस्वी
भारत भारतीय
ठक ठकी

20. कोनो संज्ञा अथवा विशेषण शब्दक लिंग सँ बोध होइछ जे ओ पद कोन जातिक थीक। यथा–पुरुष, स्त्री वा नपुंसक जातिक। लिंग तीन प्रकार होइत अछि–

(क) पुल्लिंग – एहि सँ पुरुष जातिक बोध होइत अछि। उदाहरणार्थ– पुरुष, हाथी आदि।

(ख) स्त्रीलिंग – एहि सँ स्त्री जातिक बोध होइत अछि। यथा–स्त्री, हथिनी आदि।

(ग) उभय लिंग – एहि सँ पुल्लिंग आ स्त्रीलिंग दुनूक बोध भए सकैछ। यथा– लोक, पशु आदि।

21. जल – पानी
वृक्ष – पेड़
वन – जंगल
घर – मकान
नदी – सरिता

22. काका - 𑒏𑒰𑒏𑒰
बाबा – 𑒥𑒰𑒥𑒰
मामा - 𑒧𑒰𑒧𑒰
नाना - 𑒢𑒰𑒢𑒰
पापा - 𑒣𑒰𑒣𑒰

23. पूर्व मे वृक्षारोपणक उद्देश्य धार्मिक भावना आ सांस्कृतिक चेतनाक संग छल। पहिने लोक गाछ–वृक्ष तथा वनक महत्त्व खूब जनैत छल। तँ घर आ गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दस गाछ लगाएब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देला सँ दस पुत्र होएबाक पुण्य होइत छनैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगाएब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपण कँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल। गाछ–वृक्ष आ वन कँ धार्मिक भावनाक संगहिँ सांस्कृतिक चेतनाक संग जोड़ि देल गेल अछि। हजारों साल पहिले लोक जंगल मे रहैत छल। लोकक संख्या बढ़ैत गेलैक आ लोकक ज्ञान मे वृद्धि होइत गेलैक। लोक गाछ–वृक्ष कँ काटि–काटि

गृह-निर्माणक काज करए लागल। तकरा बाद चास मे सेहो ओकर उपयोग करए लागल। जंगलक किछु भाग एहि तरहेँ चास-वास मे परिणत भए गेल। जंगली लोक जखन किसान बनल तखन देखलक जे जंगलक प्रभावे वर्षा होइछ आ ओहि सँ उपजा मे वृद्धि होइछ। गाछ केँ ओ सब देवता जकाँ पूजा करए लागल। एखनहुँ गाछ-वृक्षक पूजा करब सामान्य बात थिक। एतबे नहि, एहि तरहेँ गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ सांस्कृतिक जीवनक अंग बनि गेल।

24. प्राचीन आ आधुनिक भोजनक प्रसंग लेखकक विचार छनि जे भोजन करबाक शैली मे बदलाव आबि गेल अछि। पहिने लोक भोजन केँ भोजन जकाँ करैत छल मुदा आबक लोक भोजन एकटा काज जकाँ करैत छथि। जेना कोनो यांत्रिक काज होइत छैक तादृशे आइ लोक भोजन करैछ। पहिलुक भोजन मे आकर्षण छलैक। पहिने घरक पुरुष अपन पत्नी सँ जिज्ञासा करैत छलथिन जे आइ भोजन मे की विन्यास हेतैक? पुरुष केँ कहला पर भोजनक सामग्रीक सूची बनैत छल। दोसर दिस आबक समय मे भोजनक व्यञ्जनक निर्णय पति-पत्नीक हाथ सँ बहराए नोकरक हाथ मे आबि गेलैक अछि। ओकरे द्वारा बनाओल गेल भोजन लेबा लेल लोक विवश अछि। पूर्व मे घरवाली पतिक खएबा काल बीयनि लए आगू मे बैसल रहैत छलथिन मुदा आबक पत्नी पति सँ पूर्व खाकए उठि जएबा मे कनेको संकोच नहि करैत छथि।

25. चन्द्रमुखी बड़ मेहनतिया माउग थिक। स्वाभिमान आ स्वावलम्बन ओकर वैशिष्ट्य छैक। ओ टोल, पड़ोस, दुरस्थ संबंधीक वर्ग सब दिस ताक लगोने रहैछ। जखन जकरा कतए कोनो काज-प्रयोजनक भीड़ होइ जाकए खटि आबए। जे पारिश्रमिक भेटैक से लए लिअए। ओकरा मात्र एकटा बेटा रहैक -'फूल'। ओकरा नीक जकाँ पढ़ाएब चन्द्रमुखीक एकमात्र ध्येय रहैक। ओ फूल केँ पढ़ा-लिखा ओकील बनाए लैछ। बेटा कमाए लगैछ मुदा तैँ चन्द्रमुखी अपन खर्च बढ़बैत नहि अछि। ओ दू कट्ठा जमीन कीनलक। फूल माय केँ मधुबनी लए जाए चाहैछ मुदा माय नहि जाइछ। ओ फूलक विवाह कराबए चाहैत अछि परञ्च बेटा-पुतोहुक स्वच्छन्दता मे बाधा नहि बनए चाहैए।

26. ओडिशाक डॉ. हरेकृष्ण महताब मैथिलीक पक्ष मे बजलाह जे मैथिली प्रति देश मे न्याय होएबाक चाही।

मुल्कराज आनन्द प्रस्ताव कएलनि जे एकटा राष्ट्रीय मैथिलीक कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक मान्यता केँ जाँच करए।

27. भरदुतिया दिन बहिन, भाइक प्रतीक्षा करैत रहैए। घर–दुआरि नीपि चकाचक कएने रहैछ। अरिपन दए बीच आँगन मे पीढ़ी राखि दैछ। बिगजी मे मखान आदिक ओरिआओन कएने रहैत अछि। भोजन मे भट्टा आ तिलकोड़क तड़ुआ, गोटा दूधक पोड़ल दहीक व्यवस्था रखने अछि। भरि दिन भाइक बाट देखैत अछि। साइकिलक घंटी सुनि कतेक बेर दुआरि पर अबैछ। सूर्यास्त भए गेलैक, भाइ नहि अबैत छैक। बहिनक दुनू आँखि कमला–बलान भए जाइछ। ओकरा कने काल लेल भाइ पर तामस उठैत छै मुदा दोसरे क्षण ध्यान अबैत छै जे माय बिनु नैहरक की औचित्य? भाउजक तँ हृदय पाथरे होइत अछि।

वस्तुतः भरदुतिया मे भाइक नहि आएब बहिन लेल अत्यधिक पीड़ादायक होइत छैक।

28. वर्षा भेलाक उपरान्त प्रकृतिक कण–कण सजीव भए उठैछ। गर्मी सँ परेशान लोक, पशु, गाछ–वृक्ष सभ वर्षा भेला सँ नवजीवन पाबि उमंग मे नाचि उठैत अछि। सूर्य जे मेघ सँ झाँपल रहैत छथि, पानि भेलाक बाद अपन प्रखर रश्मि अवनी पर पसारैत छथि। बाँध–बोन मे हरीतिमा आबि जाइछ। कदम्बक गाछ पीयर फूदनावला झालरि सँ अपना कँ झाँपि लैत अछि। पोखरि सभ उमडाम भरि जाइछ आ ओहि मे ललका कुमुदिनीक पात शोभायमान रहैत छैक। दिन–दिन भरि भीजि कए लोक खेत रोपत, आरि पर बैसि मझनी खाएत।

वस्तुतः वर्षा भेला पर प्रकृतिक सौन्दर्य मे चारि चान लागि जाइत अछि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-६)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. दरभंगा मे पुस्तक भंडार नामक संस्था खोललनि
   (क) रामलोचनशरण (ख) गंगापति सिंह
   (ग) हरिमोहन झा (घ) गंगानन्द सिंह

2. 'प्रवेशिका मैथिली साहित्य'क सम्पादक छथि
   (क) गंगापति सिंह (ख) हरिमोहन झा
   (ग) आरसी प्रसाद सिंह (घ) क एवं ख दुनू

3. तारानन्द वियोगीक कविता-संग्रह छनि
   (क) प्रतीक (ख) परोक्ष (ग) सतंजा (घ) हस्तक्षेप

4. 'निज संवाददाता द्वारा' पोथी अछि
   (क) सुकान्त सोमक (ख) उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क
   (ग) गंगेश गुञ्जनक (घ) प्रभास कुमार चौधरीक

5. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' क जन्म भेलनि
   (क) 1911 ईमे (ख) 1912 ई. मे
   (ग) 1910 ई. मे (घ) 1909 ई. मे

Cont. ....

6. 'भावि भरदुतिया विधान हे' केर रचयिता छथि

   (क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) चन्द्रभानु सिंह

   (ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (घ) उदयचन्द्र झा विनोद

7. 'संधान' पत्रिकाक सम्पादक छलाह

   (क) अशोक (ख) शैलेन्द्र आनन्द

   (ग) अजीत आजाद (घ) रामभरत शाह

8. कांग्रेसक सूरत अधिवेशन भेल

   (क) 1907 ई. मे (ख) 1908 ई. मे

   (ग) 1909 ई. मे (घ) 1905 ई. मे

9. 'अपन बात' निबन्ध-संग्रह अछि

   (क) उमाकान्तक (ख) भीमनाथ झाक (ग) रमण झाक (घ) वीरेन्द्र झाक

10. 'क्रैक' कथा थिक

    (क) टेम्पो चालकक (ख) बस चालकक (ग) ट्रक चालकक (घ) ट्रेन चालकक

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

    (i) हऽ आब भेल वर्षा (क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

    (ii) एड्सक कालनाग (ख) दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

    (iii) कर्मवीर (ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

    (iv) जय जवान, जय किसान (घ) चन्द्रभानु सिंह

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

    (क) हम कटोरा उठा एके साँस मे बचल सभटा ....पीबि गेहहुँ। (दूध/पानि)

    (ख) हम ....तोड़ि दाँत तर देलहुँ। (पापड़/तड़ुआ)

    (ग) ममता...............कँ पापड़ आनय कहलकैक। (रमुआ/मूसबा)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

    (i) बाबा कँ अगहन मास प्रिय नहि रहनि।

    (ii) बाबा अपन मिथिला सँ बड़ प्रेम करैत छलाह।

    (iii) एड्स एटम बम सँ विशेष खतरनाक अछि।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

    (क) दुर्गापूजा (ख) मातृभाषाक महत्त्व (ग) समाचार-पत्र (घ) स्वावलम्बन

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

    परोपकार भावना केवल मनुष्येटा मे नहि अछि। एकर पवित्र भाव प्रकृति पर सब

Cont. ....

सँ स्पष्ट अछि। रत्नगर्भा धरती सर्वसहा छथि; वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल आ डारि सब किछु अनेक लेल त्यागेछ; जल सब जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भय जीवन कहबैछ। पशु भार वहन कय परोपकार करैत अछि। पाथर खण्ड-खण्ड भइयो कय अपन परोपकारी भाव कँ नहि छोड़ैत अछि; सूर्य दिन-राति चलैत छथि, आलोक पसारैत रहैत छथि। चन्द्रमा संसार भरिक व्यथा कँ दूर करए हेतु आरामक समय उपस्थित भय पीयूषवर्षा कय सब कँ हरल-भरल बनौने रहैत छथि; मेघ जलक भाफ सँ जल लय जलराशि कँ धारण कय अवनीक समीप आबि जलवर्षा कय सब कँ सानन्द बनबैत अछि। नदी जलक भण्डार कँ सुरक्षित राखि जीव-जन्तुक पालन-पोषण मे सहायक होइछ; पर्वत अन्यदेशीय उपद्रव सँ रक्षा कय विविध भाँतिक कन्द-मूल-फल, जड़ी-बूटी आदि सामग्रीक उपहार लय परोपकारिता कँ प्रकट करैत छथि। अतएव प्रकृतिक सब साधन मे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

16. मित्रक पिताक मृत्यु पर सान्त्वना पत्र लिखू। 7

17. निम्नलिखित गद्य-खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

अच्छा, अहाँ कँ एना नहि लगैत अछि से, हमर मतलब अछि भोजन जे हम सभ करैत छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी, माने, अपन आन सभ काज जकाँ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।

अथवा

यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ गाछ कटैत सारिल सँ टकराइत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
पाँखुरक ताकति आ कुरहड़िक चोट
सारिल कँ कतेक ठाम सँ तोड़ैत छै
यैह हाथ कुरहड़ि आ हाथक सम्बन्ध जनैत अछि
यैह हाथ काज करैत अछि।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

सुरभि, प्रदक्षिणा, पुस्त, पालक, सरनागत

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

डर, भ्रम, वायु, स्थान, थाह

20. वचन सँ अहाँ की बुझैत छी? एकर भेद सोदाहरण लिखू। 5

21. निम्न शब्दक विपरीतार्थक लिखू : 5

सर्द, हँसैत, इजोत, धरती, ग्रामीण

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

माता, पिता, जंगल, बहीन, कारी

23. वनक उपयोगिता पर अपन विचार प्रस्तुत करू। 4

24. नदी ओ पोखरिक महत्त्वक वर्णन करू। 4

25. डॉ. भीमराव अंबेदकरक प्रतिभाक संबंध मे अपन विचार व्यक्त करू। 4

26. 'बच्चा' शीर्षक कविताक भाव लिखू। 4

27. लक्ष्मण झाक जीवनी संक्षेप में लिखू। 5

28. सुभद्र झाक प्रमुख पोथीक संक्षिप्त परिचय लिखू। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-६)

1. (क) रामलोचनशरण
2. (ख) क एवं ख दुनू
3. (घ) हस्तक्षेप
4. (क) सुकान्त सोमक
5. (क) 1911 ई. मे
6. (क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'
7. (क) अशोक
8. (क) 1907 ई. मे
9. (क) उमाकान्तक
10. (क) टेम्पो चालकक
11.

स्तम्भ 'क'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) हऽ आब भेल वर्षा	(ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
(ii) एड्सक फालनाका	(घ) चन्द्रभानु सिंह
(iii) कर्मवीर	(ख) दीनानाथ पाठक 'बन्धु'
(iv) जय जवान, जय किसान	(क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

12. (क) दूध
    (ख) पापड़
    (ग) रमुआ
13. (i) अशुद्ध
    (ii) शुद्ध
    (iii) शुद्ध

Cont. ....

14. (क) **दुर्गापूजा**

भारतवर्ष मे अनेक पर्व-त्योहार मनाओल जाइछ। ओहि मे दुर्गापूजा कँ विशेष महत्त्वपूर्ण पर्व मानल गेल अछि। देशक सब ठाम ई पर्व मनाओल जाइछ। एहि मे माता दुर्गाक पूजा अत्यन्त भक्ति भावना सँ कएल जाइत अछि।

दुर्गा पूजनोत्सव दू समय मे मनाओल जाइत अछि। एक शारदीय तथा दोसर वासन्ती। मुदा शारदीय पूजाकँ विशेष महत्त्व देल जाइत छैक। ई पूजा आसिन मासक शुक्ल पक्ष मे होइत छैक। परीब कँ कलशक स्थापना होइत छैक। शक्तिक प्रतीक दुर्गाक आराधना अत्यन्त निष्ठा सँ कएल जाइत छैक। एहि अवसरपर विद्यालय, महाविद्यालयक सब सरकारी कार्यालय बन्द रहैत छैक।

भारतवर्ष मे जतेक पर्व-त्योहार मनाओल जाइत छैक तकरा पाछाँ कोनो ने कोनो तथ्य अवश्य रहैत छैक। दुर्गापूजाक विषय मे दू गोट पौराणिक कथाक उल्लेख अछि। महिषासुर नामक असुरक अत्याचार सँ देवलोक प्रकम्पित भए उठल। सब देवता महाशक्तिक आराधना कएलनि। देवी प्रसन्न भए प्रकट भेलीह आ महिषासुर, शुम्भ, निशुम्भ आदि राक्षसक वध कए संसारक परित्राण कएलनि। दोसर रामक लंका विजय सँ संबंधित अछि। राम दुर्गाक आराधना कए रावण पर विजय पौलनि। तँ एहि पर्व कँ विजयादशमी सेहो कहल जाइछ।

दुर्गापूजा हमर राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक पर्व थिक। ठाम-ठाम एहि अवसर पर मेला सेहो लगैत अछि। बंगाल मे दुर्गापूजाक उत्सव बड़ प्रसिद्ध अछि। बिहार मे सेहो ई पर्व उमंग ओ उत्साह सँ मनाओल जाइत अछि।

लोक धियापूता आ परिवारक अन्य सदस्य कँ एहि अवसर पर नव वस्त्र दैत अछि। दुर्गापूजाक विशेष छटा शहर सभ मे देखबा मे अबैत अछि। सप्तमी सँ दशमी धरि चारूकात विशेष चहलपहल मचि जाइत छैक।

दुर्गापूजा असत्य पर सत्यक विजयक प्रतीक अछि। एक सन्देश अछि अनेकत्व मे एकत्व आ पाप पर पुण्यक विजय। हमरा लोकनि कँ एकरा नीक जकाँ मनएबाक चाही।

एहि अवसर पर यत्र-तत्र बलिदानक परिपाटी अछि से बलिप्रदान बन्द होअए। हमरा लोकनि कँ एहि अवसर पर राष्ट्रीय एकताक व्रत लेबाक चाही।

14. **(ख) मातृभाषाक महत्त्व**

एस. एन. अग्रवालक पोथी 'शिक्षाक माध्यम' केर भूमिका मे महात्मा गाँधीक कथन छनि – ''मातृभाषा मानवक विकास हेतु ओतबे स्वाभाविक अछि जतेक शिशुक शारीरिक विकासक लेल माइक दूध।''

जे भाषा बाल्यावस्था मे माइक कोरहि सँ शिशु बिनु आयासहिँ सिखैत अछि सैह भेल मातृभाषा। शिशुक संगहिँ मानव प्राणी मात्र मातृभाषाक माध्यम सँ जतेक शीघ्र कोनो विचार कँ बूझि जाइछ ततेक आन भाषा द्वारा नहि। यैह कारण अछि जे बिहारक शिक्षा समिति एहि प्रस्ताव कँ स्वीकृत कए लेने अछि जे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यम सँ होएबाक चाही। मातृभाषा आन सब भाषा सँ मीठ लगैछ। तँ महाकवि विद्यापति 'कीर्त्तिलता' पोथीक प्रथम पल्लव मे कहने छथि –

देसिल बअना सब जन मिट्टा।
तँ   तैसन जम्पञो अवहट्टा।।

आइ पाश्चात्य शिक्षाक रंग मे रमल लोक मातृभाषाक कोन कथा, राष्ट्रभाषा पर्यन्त कँ छोड़ि विदेशी भाषा अर्थात् अंग्रेजीक माध्यम सँ अपन शिशु कँ प्रारंभिक शिक्षा दैछ। मातृभाषा मे पढ़ब ओ पढ़ाएब अपने ठेसी उतरब बुझैत छथि। विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करबा मे अबोध शिशुक मस्तिष्क पर जे बोझ राखल जाइछ से भारीक संग-संग अत्यन्त कष्टप्रद होइछ। नेनहि सँ माता-पिता कँ मम्मी-डैडी कहला सँ माय-बापक यथार्थ मर्म कँ ओ की बुझि सकैत अछि? जे शब्दे निरर्थक अछि, जकर उत्पत्तिक कोनो मूल स्रोते नहि छैक तकरा सिखला सँ संस्कार पर की असरि पड़तैक। एहने टेल्ह सब आगाँ चलि कए माय-बाप सँ पृथक् विचार राखए लगैत अछि। विदेश भाषाक भूत तेना भए कए कपार पर सवार भए जाइत छैक जे सामान्यो लोक सँ ओकर आचार-विचार भिन्न भए जाइत छैक। आइ जापान अति विकसित देश मे परिवर्तित भए अपन सर्वतोमुखी विकास कएलक अछि तकर मूल मे आन वस्तुक संगहि अपन मातृभाषाक द्वारा ओ जन-जागरण कएलक अछि। मातृभाषाक माध्यम सँ भाषा आ साहित्येटाक विकास नहि होइछ, संस्कृति ओ संस्कार पर सेहो एकर स्थायी प्रभाव पड़ैत छैक।

प्राथमिक शिक्षाक माध्यम ओ मातृभाषाक महत्त्व वस्तुत: एकेटा सिक्काक दू भाग थिक। शिशु कँ मानसिक रूप सँ कोन कथा शारीरिक रूप सँ स्वस्थ रखबा मे मातृभाषाक अहम् भूमिका अछि। यैह कारण अछि जे मनोवैज्ञानिक लोकनि सेहो मातृभाषाक माध्यम सँ प्राथमिक शिक्षाक अनिवार्यता कँ सहर्ष स्वीकार कएलनि अछि। लोकमान्य तिलक सेहो मातृभाषा द्वारा प्रारंभिक शिक्षा कँ उचित आ उपयोगी मानलनि अछि।

मातृभाषा बजबा मे जेना किछु गोटा कँ संकोच होइत छनि। एहन लोकक मनोवृत्ति मे सेहो परिवर्तन आनए पड़त। अन्त मे मातृभाषाक महत्त्वक प्रतिपादन हम निम्न पाँती द्वारा करब उचित बुझैत छी –

पढ़ि लिखि जे ने बजैछ हा निज मातृभाषा मैथिली।

मन होइछ झुटकी सँ तनिक हम कान दुनू ऐंठ ली।।

14. (ग) उत्तर पत्र (सेट-3) कँ देखू।

14. (घ) उत्तर पत्र (सेट-5) कँ देखू।

15. शीर्षक : **<u>परोपकारी प्रवृत्तिक प्रकृति</u>**

प्रकृतिक कण-कण मे परोपकारक भावना व्याप्त अछि। धरती, आकश दुनू उक्त भाव सँ उमडाम अछि। पृथ्वी तँ सर्वसहा छथि। तरूक प्रत्येक अंग लोकक काज अबैए। जल जीवमात्रक हेतु प्राणरक्षक तत्त्व थिक। सूर्य आ चन्द्रमा दुहू सँ मनुक्ख कँ कतेक ने उपकार होइत छैक। पर्वत पर अवस्थित कन्द-मूल फल आ जड़ी-बूटी सँ बहुत रास औषधि तैयार होइत अछि।

प्रदत्त शब्द संख्या-152

संक्षिप्त शब्द संख्या- 52

16. प्रिय मोहन, पटना

नमस्कार 12.12.2016

कुशल कुशलापेक्षी। काल्हि अहाँक पत्र पाबि उत्सुकता सँ पढ़ए लगलहुँ मुदा अहाँक पिताक अचानक मृत्युक समाचार पढ़ि गुम भए गेलहुँ। एहन दुखद शोक-समाचार सुनि घर भरिक लोक कँ अपार शोक भेलनि मुदा कएल की जाए! ईश्वरक लीलाक पार के पाओत? ई शरीर अनित्य अछि, कखन की भए जाएत केओ नहि कहि सकैत अछि। हुनक मृत्यु एक महान् वज्राघात थीक। परञ्च मृत्यु सँ बचौनिहार केओ नहि। जन्म आ मृत्यु दुनू अभिन्न संगी अछि।

अहाँक पिता सरलता, सज्जनता, शिष्टता तथा व्यवहार पटुताक साक्षात् मूर्ति छलाह। हुनक मधुर वाणी, अपनापनक भाव आ आदर-सत्कारक स्मरण होइत देरी आँखि डबडबा जाइछ, कण्ठ अवरूद्ध भए उठैत अछि। एहन महापुरूषक निधन पर हम अहाँक संग संवेदना प्रकट करैत छी आ भगवान सँ प्रार्थना करैत छिएनि जे ओ अहाँ कँ एहि दुःख कँ सहबाक शक्ति दए सान्त्वना प्रदान करथि एवं ओहि दिवंगत आत्मा कँ शान्ति भेटनि।

मोहन मिश्र अहाँक

ग्रा.-नरूआर गंगेश

पो.-लोहना रोड

जिला- मधुबनी

17. प्रस्तुत गाद्यांश 'भोजन' शीर्षक कथा सँ लेल गेल अछि। एकर कथाकार थिकाह राजमोहन झा।

कथाकारक कहबाक अभिप्राय छनि जे हमरा लोकनि आने काज जकाँ यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत भोजन सेहो कए लैत छी। कोनो काज बुझि भोजन करबाक नहि थीक। वस्तुतः आजुक व्यस्त जिनगी मे लोक स्वाद लेबा लेल खाइत नहि अछि। पहिलुक लोक आ एखुनका लोकक भोजन करबाक शैली मे बहुत बदलाव आबि गेल छैक। पहिने पति खेनाए खाए रहल छथि, पत्नी बियनि होंकैत रहैत छलीह। भोजन मे की व्यंजन बनए, ताहि पर चर्चा होइक। मुदा आब तँ पैघ-पैघ घर मे जिनगी एतेक तेज रफ्तार सँ दौगि रहल छैक जे भोजनक मेजन नोकरक हाथ मे आबि गेल छैक। परञ्च भोजन आकर्षणक वस्तु थिकैक, ओकरा ओही रूप मे लेबाक चाही।

अथवा

प्रस्तुत पाँती सुकान्त सोम रचित कविता 'हाथ' सँ लेल गेल अछि। एतए हाथक महत्ता प्रतिपादित कएल गेल अछि।

ओना तँ हाथक बिनु क्यो कोनो काज नहि कए सकैत अछि परञ्च मजदूर वर्ग लेल एकर महत्त्व आओरो बढ़ि जाइत छैक। यैह हाथ अछि जे गाछ कटैत काल सारिल सँ टकराइत छैक। सारिल कँ ठाम-टाम सँ तोड़ैत काल हाथे जनैत अछि जे पाँखुड़ मे कतेक तागति छैक आ कुरहड़िक चोट कतेक पड़लैक। कुरहड़ि ओ हाथक बीचक संबंध हाथे कँ बूझल होइत छैक।

18. सुरभि - अगरबत्तीक सुरभि चारूकात पसरि गेल।

प्रदक्षिणा-मंदिर गेला पर प्रदक्षिणा करब अनिवार्य होइत छैक।

पुस्त - मोहनक कैक पुस्त सेना मे काज कएलक अछि।

पालक - भगवान सबकि पालक छथिन।

सरनागत - सरनागत आएल व्यक्तिक मदति करबाक चाही।

19. संज्ञा विशेषण

डर - डरल

भ्रम - भ्रमाह

वायु - वायवीय

स्थान - स्थानीय

थाह - थाहल

20. वचनक अर्थ थीक संख्या। एहि सँ पता लागि जाइत अछि जे प्रयोग मे आएल शब्द एक अथवा एक सँ अधिक व्यक्ति अथवा वस्तुक बोधक अछि। यथा-बालक। एहि शब्द सँ एकहिटा बालकक बोध होइत अछि, मुदा 'बालक लोकनि' कहला सँ एक-सँ अधिक बालकक बोध होइछ।

वचन दू प्रकारक होइत अछि -

(क) एकवचन - एहि सँ व्यक्ति अथवा वस्तुक एक संख्याक बोध होइत अछि। यथा-पोथी, हाथी आदि।

(ख) बहुवचन - एहि सँ व्यक्ति वा वस्तुक एक संख्या सँ अधिकक बोध होइत अछि। यथा-पोथी सभ, हाथीझुण्ड आदि।

21. सर्द - गरम

हँसैत - कनैत

इजोत - अन्हार

धरती - आकाश

ग्रामीण - शहरी

22. माता - 𑒧𑒰𑒞𑒰

पिता — 𑒣𑒱𑒞𑒰

जंगल — 𑒖𑓀𑒑𑒪

बहिन — 𑒥𑒯𑒱𑒢

काशी — 𑒏𑒰𑒬𑒲

23. वन अर्थात् गाछ-वृक्ष पर्यावरण कँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि। पूर्व मे लोक गाछ-वृक्ष आ वनक महत्त्व खूब जनैत छल। तँ घर तथा गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दसटा गाछ लगाएब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देला सँ दस पुत्र होएबाक पुण्य होइत छलैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगाएब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपण कँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल। वृक्ष कार्बनडायऑक्साइड लैत अछि आ ऑक्सीजन छोड़ैत अछि। मनुष्य साँस मे ऑक्सीजन लैत अछि। अभिप्राय जे गाछ-वृक्षक अभाव मे मनुष्यक जीवने संकट मे आबि जाएत।

गाछ-वृक्षक उपयोग मानव जीवन मे डेग-डेग पर अछि। चकला-बेलना सँ लए कए लाठी-भाला धरि मे लकड़ीक व्यवहारक होइछ। केवाड़-खिड़की, चौकी-सन्दूक,

खुरपी-हांसू, कोदारि-हर-पालो आदि मे लकड़ीक उपयोग होइते अछि। संगहि संग जारनिक काज मे सेहो लकड़ीक प्रयोग होइछ। जरलाक बाद लकड़ी कोइलाक रूप मे काज अबैत छैक। सिम्मरक लकड़ी सँ दियासलाइक काठी बनैछ, तँ देवदारूक लकड़ी सँ पेंसिल।

24. जल कँ जीवन सेहो कहल जाइत छैक। प्रत्येक जीव-जन्तु आ गाछ-वृक्ष कँ जलक आवश्यकता अछि। पहिने नदीक जल शुद्ध रहैत छल। तँ नदी मे स्नान करब पवित्र काल मानल जाइत छल। मुदा आब से बात नहि अछि। अनेक प्रकारक गन्दगी नदीक पानि मे मिलैत अछि आ ओकरा दूषित कए दैछ। कल-कारखानाक गदौस बहिकए नदी मे खसैछ आ नदीक पानि कँ ओ विषाक्त कए दैछ। गंगा सन पवित्र ओ विशाल नदीक पानि सेहो प्रदूषित भए गेल अछि।

जलक महत्त्व कँ ध्यान मे राखि अपना सभक पुरखा लोकिन पोखरि खुनबैत छलाह। पोखरि-इनार खुनाएब प्रतिष्ठाक कार्य बूझल जाइत छल। मिथिला मे कतेक राजा तेहन-तेहन पोखरि खुनौने छथि, जाहि कारणँ हुनका लोकनिक नाम आइ धरि लोक लैत अछि। रजोखरि पोखरि नामी अछि। मिथिलांचल नदीमातृक प्रदेश थिक। तँ एहिठाम जलाशयक प्रचुरता अछि। एकर उपयोग गामक लोक करैछ।

25. डॉ. भीमराव अंबेदकर प्रतिभावान छात्र छलाह। ओ सरकारी उच्च विद्यालयक पहिल अस्पृश्य विद्यार्थी रहथि। 1907 मे अंबेदकर अपन अद्‌भुत प्रतिभाक परिचय देलनि आ बम्बई विश्वविद्यालय सँ मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। ओ पहिल अस्पृश्य युवक रहथि जे भारतक कॉलेज मे दाखिल भेलाह। 1908 मे ओ भीमराव एलफिंस्टन कॉलेज मे नाम लिखौलनि आ हुनका बड़ौदाक गायकवाड शासक सँ पच्चीस टाकाक छात्रवृत्ति प्रतिमाह भेटए लगलनि। प्रतिभावान अंबेदकर 1912 मे अर्थशास्त्र आ राजनीति मे डिग्री हासिल कएलनि। हुनका गायकवाड शासक प्रतिमाह साढ़े एगारह डालरक छात्रवृत्ति अमेरिकाक कोलंबिया विश्वविद्यालय मे पढ़बाक लेल मंजूरी देलनि। न्यूयार्क सिटी मे पहुँचला पर ओ राजनीति विज्ञान विभाग मे स्नातक अध्ययन कार्यक्रम मे दाखिला लेलनि। किछु दिन धरि 'डारमेटरी' मे रहलाह। 1916 मे पी-एच.डी.क उपाधि भेटलनि। 'डाक्टेरेट' डिग्री प्राप्त भेलाक उपरान्त, भीमराव लन्दन चलि गेलाह आ लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स मे लॉ पढ़ए लगलाह एवं अर्थशास्त्र विषय मे डाक्टेरेट हेतु तैयारी करए लगलाह। लन्दन सँ घुरला परओ बड़ौदा स्टेट मे सैनिक सचिवक पद पर कार्य करए लगलाह।

15 अगस्त, 1947 कँ जखन भारत स्वतंत्र भेल तँ डॉ. अंबेदकर कांग्रेसनीत सरकार

मे प्रथम कानून मंत्रीक कार्यभार ग्रहण कएलनि। 29 अगस्त कँ अंबेदकर भारतीय संविधान प्रारूप कमिटीक चेयरमैन नियुक्त भेलाह। 1952 मे राज्य सभाक सदस्य मनोनीत भेलाह। वरदपुत्र आ कुशाग्रबुद्धिक डॉ. अंबेदकर कँ 1990 मे मरणोपरांत, भारतक सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' सँ सम्मानित कएल गेलनि।

26. 'बच्चा' शीर्षक कविता मे बच्चाक महत्त्व कँ देखाओल गेल अछि। बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूप मे माय-बाप कँ नहि, सामूहिक रूप मे सम्पूर्ण सृष्टि कँ विकसित होएबाक, फुलएबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा नहि रहत तँ मनुक्ख नहि रहत, सृष्टि नहि रहत। बच्चा संघर्षशील बनबैत अछि। जीबाक लेल स्नेह-रागक भावना भरैत अछि। तँ बच्चाक महत्त्व बुझबाक चाही। ओकर विकास लेल सतत सचेष्ट रहक चाही। बच्चाक स्वास्थ्य पर पढ़ाइ-लिखाइ पर ध्यान देवाक चाही।

कवि एहि कविता मे उपदेश नहि, सन्देश दैत छथि जे अत्यन्त हृदयग्राही अछि। जीवन आ जगतक स्थायित्व तथा विकासक मूलमन्त्र बच्चा अछि। जे केओ बच्चा कँ व्यर्थ कहैत छथि से बकलेल छथि, कंगाल छथि। बच्चाक परम्पराक कड़ी होइछ। बच्चा जिनगीक मिठास होइत अछि।

27. अनेकानेक त्यागी, तपस्वी ओ मनीषीक जन्म मिथिलाक पावन भूमि पर भेल। ओही महान् विभूति मे एक रहथि डॉ. लक्ष्मण झा। हिनक जन्म 5 सितम्बर, 1916 मे दरभंगा जिलान्तर्गत रसियारी गाम मे भेल छलनि। हिनक पिता कारी झा तथा माय कीर्ति देवी रहथिन।

डॉ. झा समस्त मिथिलांचल मे लखनजीक नाम सँ जानल जाइत छथि। हिनक प्राथमिक शिक्षा गामेक स्कूल मे भेलनि। माध्यमिक आ उच्च विद्यालयक शिक्षाक लेल हिनक नामांकन मधेपुरक कोशेनेशन हाई स्कूल मे कराओल गेल। 1941 मे पटना कॉलेज सँ संस्कृत ऑनर्सक संग स्नातक प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान सँ उत्तीर्ण कएल।

लक्ष्मण झा छात्रावस्थहि सँ देशभक्त छलाह। सर्वप्रथम 12 दिसम्बर, 1928 कँ साइमन कमीशनक विरोध मे प्रदर्शन कार्यक्रम मे भाग लेबाक कारणँ ई पटना मे गिरफ्तार भेलाह। दोसर बेर सविनय अवज्ञा आंदोलन मे भाग लेबाक कारणँ 1931 मे जेल गेलाह। पुन: 1942 क 'भारत छोड़ो आंदोलन' मे हिनक सक्रिय सहभागिता रहल।

जीवन पद्धतिक लेल डॉ. झाक प्रेरक महात्मा गाँधी छलथिन। 23 जनवरी, 2000 ई. कँ अपन गाम रसियारी मे हिनक निधन भए गेलनि। ई बहुत रास पोथी सेहो लिखने छथि। मिथिला आ मैथिलीक प्रति हिनका अत्यधिक श्रद्धा आ लगाव छलनि।

28. सुभद्र झाक पोथी मे पहिल नाम अबैछ– ''दि फॉरमेशन ऑफ दि मैथिली लैंग्वेज'। ई पोथी हिनका भाषाशास्त्रीक रूप मे विश्वस्तर पर प्रसिद्धि दियौलकनि। दोसर प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि– 'स्टडीज इन दि पिप्पलाद संहिता ऑफ अथर्ववेद'। अंग्रेजी मे लिखल विद्यापति विषयक हिनक प्रमुख पोथी अछि– 'सांग्स ऑफ विद्यापति'। एहि पोथी मे विद्यापतिक गीतक अंग्रेजी मे अनुवाद अछि।

डॉ. सुभद्र झा द्वारा संस्कृत मे सम्पादित पोथी छनि– सर्वदेशवृत्तान्त संग्रह अथवा अकबरनामा धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रह, श्रीमदभगवद्गीताया भारती-प्रवेशिका।

मैथिली मे डॉ. झाक पोथी छनि– 'प्रवास जीवन', 'यात्रा-प्रकरण-शतक', 'नातिक पत्रक उत्तर', विद्यापति-गीत-संग्रह' आ' 'मैथिली व्याकरण मीमांसा'। एहि मे पहिल दुनू पोथी यात्रा वृत्तान्त थिक। डॉ. सुभद्र झा जखन उच्च शिक्षा लेल विदेश मे रहथि तँ ओ फ्रांस, इंगलैंड, जर्मनी, इटली आदि देश घुमलाह। एकरे वर्णन 1950 मे प्रकाशित 'प्रवास जीवन' मे अछि। डॉक्टर साहेबक 'मैथिली व्याकरण मीमांसा' 1983 मे छपल जे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगा मे देल गेल मैथिली भाषाक व्याकरण पर दूटा व्याख्यान थिक। एहि मे मैथिली व्याकरणक स्वतन्त्र ओ आदर्श रचना पद्धति पर विचार कएल गेल अछि। पत्रक शैली मे मैथिली मे लिखल हिनक 'नातिक पत्रक उत्तर' नामक पोथी प्रकाशित भेल। एही पोथी पर 1986 मे हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-७)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

<u>प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:</u>

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. भीमराव अंबेदकरक जन्म भेलनि-

(क) 1891 ई. मे (ख) 1890 ई. मे

(ग) 1889 ई. मे (घ) 1888 ई. मे

2. 'परदेश' नामक यात्रा-वृत्तांत छनि-

(क) भाग्यनारायण झाक (ख) दीनानाथ झाक

(ग) शरदिन्दु चौधरीक (घ) नरेश मोहन झाक

3. 'आरम्भ' पत्रिकाक सम्पादक छलाह

(क) राजमोहन झा (ख) अशोक

(ग) विभूति आनन्द (घ) अशोक कुमार झा

4. मिथिला-मंडल संस्थाक स्थापना कयलनि

(क) डॉ. लक्ष्मण झा (ख) डॉ. सुभद्र झा

(ग) रामदेव झा (घ) रत्नेश्वर मिश्र

Cont. ....

5. 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक' पोथीक लेखक थिकहा

(क) डॉ. लक्ष्मण झा (ख) जटाशंकर झा

(ग) उमेश मिश्र (घ) रमानाथ झा

6. प्रेमचन्दक 'बच्चा' कथाक अनुवादक थिकाह

(क) आशुतोष झा (ख) अनमोल झा

(ग) वीरेन्द्र झा (घ) इन्द्रकान्त झा

7. मिथिलाक चौड़ाई अछि

(क) 64 कोस (ख) 65 कोस

(ग) 66 कोस (घ) 67 कोस

8. 'आईने अकबरी' क रचयिता छलाह

(क) प्रेमचन्द (ख) जनार्दन झा

(ग) मोहन भारद्वाज (घ) एहि मे सँ कोनो नहि

9. जीवन लेल सभ सँ आवश्यक अछि

(क) हवा (ख) पानि

(ग) आगि (घ) अन्न

10. भीमराव अंबेदकर राज्यसभाक सदस्य मनोनीत भेलाह

(क) 1952 ई. मे (ख) 1953 ई. मे

(ग) 1954 ई. मे (ग) 1955 ई. मे

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) विद्यापति	(क) जवाहर: जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ
(ii) चन्दा झा	(ख) चन्द्रमुखी
(iii) लिली रे	(ग) शिवगीत
(iv) जयकान्त मिश्र	(घ) समय-साल

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू: 3

(क) फूल चन्द्रमुखी कँ .... शहर लय जाय चाहैत छल। (मधुबनी/पटना)

(ख) फूल ओकालति पास कयलाक बाद माय कँ प्रति मास .... टाका पठबय लगलनि। (दस/पन्द्रह)

(ग) 'रंगीन परदा' क लेखिका .... छथि। (लिली रे/वीणा ठाकुर)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू: 3

(i) बाढ़ि मे धान दहाय गेल।

(ii) राति दिन कोदारि धय छहरक निर्माण कयल गेल।

(iii) प्रदर्शनीक हेतु मात्र दस मिनटक समय निर्धारित कयने छलाह।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : 10

(क) महात्मा गाँधी (ख) अपन प्रिय पोथी (ग) विज्ञानक चमत्कार (घ) ग्रामोत्थान

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

डॉ. झा सँ जे केओ परिचित छलाह सबहुँ ई कथा मुक्त कंठे स्वीकार करताह जे हिनक उन्नतिक प्रधान साधन हिनक अलौकिक कार्यक्षमता एवं सुदृढ़ संकल्प छलनि। जे कोनो काज हो, जकरा ई आरम्भ करताह बिनु समाप्त कएने हिनका शांति नहि होइत छलनि। जे काज आइ कर्त्तव्य थीक अथवा कय सकैत छी तकरा काल्हुक हेतु राखब हिनका अबितहि नहि छलनि। आलस्यक तँ हिनका मे गन्धो नहि छलनि। समय केहन मूल्यवान वस्तु थीक ओ तकर सदुपयोग कोना करी, ई हिनक जीवनक आदर्श छल।

16. अपन मित्र केँ नाम सँ एकटा पत्र लिखू। 7

17. निम्नलिखित पाँतीक आशय लिखू : 5

जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ-भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा
ओ बकलेल छथि जे कहैत छथि
बच्चा कँ व्यर्थ।

अथवा

ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषा कँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार

नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ ने संसारक आने देश सँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपैँ आदान-प्रदान भय सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्र मे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

    समस्त, निधि, अधिपति, प्रशस्त, क्षुब्ध

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

    अर्थ, अन्त, ज्ञान, त्रिकाल, हर्ष

20. जातिक आधार पर संज्ञाक भेद सोदाहरण लिखू। 5

21. निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची लिखू। 5

    विश्व, पर्वत, स्वर्ण, गिरि, आँखि

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

    काल, बालक, राम, बजार, गाछ

23. मातृभाषाक सम्बन्ध मे महात्मा गाँधीक विचार स्पष्ट करू। 4

24. त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ स्पष्ट करू। 4

25. विद्यापति लिखित 'शिवगीत'क सारांश लिखू। 4

26. वर्षाक बाद लोक खुशी मे की सभ करत? 4

27. माँगन खबासक जीवनी संक्षेप मे लिखू। 5

28. देशक विकास मे जवान ओ किसानक योगदानक उल्लेख करू। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-७)

1. (क) 1891 ई. मे
2. (क) भाग्यनारायण झाक
3. (क) राजमोहन झा
4. (क) डॉ. लक्ष्मण झा
5. (क) डॉ. लक्ष्मण झा
6. (क) आशुतोष झा
7. (क) 64 कोस
8. (घ) एहि मे सँ कोनो नहि
9. (क) हवा
10. (क) 1952 ई. मे
11.

	स्तम्भ 'अ'		स्तम्भ 'ब'
(i)	विद्यापति	(ग)	शिवगीत
(ii)	चन्दा झा	(घ)	समय-साल
(iii)	लिली रे	(ख)	चन्द्रमुखी
(iv)	जयकान्त मिश्र	(क)	जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ

12. (क) मधुबनी

    (ख) दस

    (ग) लिली रे

13. (i) शुद्ध

    (ii) शुद्ध

    (iii) शुद्ध

14. **(ग) विज्ञानक चमत्कार**

आजुक युग विज्ञानक युग थीक। एकर चमत्कार विश्व कँ आश्चर्यित कए दैछ। एहन उन्नति विज्ञानक एहि सँ पूर्व नहि भेल छल। वस्तुतः ई युग विज्ञानक स्वर्णयुग

थीक। एखन विमान मे बैसिकए लोक आकाश मे विहार कए सकैछ। विदेश–यात्रा सुगम आ अल्प समयापेक्षी भए गेल अछि। शीतताप नियंत्रण लोक कँ अपूर्व आनन्द प्रदान करैछ। घर बैसल लोक विश्वक समाचारेटा नहि सुनैछ, अपितु संगीत सुनबाक संग संगीतज्ञक स्वरूपक अवलोकन कए आनन्दविभोर भए जाइछ। दूरस्थ मित्र सँ टेलीफोन वा मोबाइल पर सम्भाषण कए लोक सामीप्यक अनुभव करैछ। क्षरकिरणक आविष्कार आ रोगविनाशक औषाधिक अन्वेषण विज्ञानक चमत्कार कँ स्तुत्य बनाए देने अछि। पुस्तकक प्रकाशन मे सुविधा, चलचित्रक दर्शनजन्य मनोरंजन आ शिक्षाक प्रसार आ प्रचार वर्त्तमान समय मे विज्ञानक विशेषताक द्योतक थीक। एतबए नहि, एकर सहायता सँ चन्द्रलोकक यात्रा सम्भव भए गेल अछि।

एहि विज्ञानक चमत्कारक आधार अछि वाष्प, गैस, विद्युत आ ईथर। एहि आधार सँ सहायता पाबि मानव अपन ज्ञानक विकास हेतु उद्यत भेल अछि आ ओ प्रकृतिक वस्तु पर अधिकार प्राप्त कए चुकल अछि। एहि तरहक चमत्कारपूर्ण विज्ञानक मुख्य अंग अछि पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान आदि। एकर उन्नतिक श्रेय छनि वैज्ञानिक कँ जे बड़ कर्मठ, परिश्रमी आ जिज्ञासु होइ छथि। ओ प्रकृतिक सत्य कँ ताकि कए संसारक समक्ष समुपस्थित करब अपन कर्त्तव्य बुझैत छथि। विज्ञानक बलँ असम्भवो कार्य सम्भव भए जाइछ।

आजुक युग मे वैज्ञानिक आविष्कार सँ लोक दंग भए गेल अछि। रेल, मोटर, जहाज, वायुयान, रॉकेट, टेलीफोन, मोबाइल, रेडिओ, टेलीविजन, कम्प्यूटर, गैस, अणुबम आदि असंख्य आविष्कार विज्ञानक प्रगतिक प्रतिपादक थीक। एकर असरि राजनीति, व्यापार, विद्या, कला आदि सबहि क्षेत्र मे व्याप्त अछि।

एहि सँ लाभो अनेक अछि। अल्प अवधि मे लोक एक स्थान सँ दोसर स्थान सुविधा सँ जाए सकैछ। क्षणभरि मे विश्वक समाचार लोक घरहि पर रहिकए ज्ञात कए सकैछ। एहि तरहँ विज्ञान सँ मानवक बड़ उपकार भेल अछि।

विज्ञान सुखद आ दुखद दुनू अछि। एहि पर कोनहु देश आ समाजक उत्थान–पतन निर्भर करैछ। विश्वकल्याण आ मानवताक रक्षा लेल वैज्ञानिक नियंत्रण आवश्यक अछि। एकर उचित आ अनुचित प्रयोग उत्तरादायित्व मनुष्यहि पर निर्भर करैछ। मानवक दृष्टिकोण मे सुधार आवश्यक अछि। सदुपयोग भएने विज्ञान अपन अलौकिक चमत्कारक वरदाने रहत– अभिशाप नहि।

15. शीर्षक **: समयक मोल**

समय बड़ मूल्यवान होइत छैक। जे समयक मोल जनैछ से सदिखन सफल होइत छथि। डॉ. झा कोनो काज कँ काल्हि पर नहि छोड़ैत छलाह। आलस्यक तँ हिनका मे गन्धो नहि छलनि।

प्रदत्त शब्द संख्या–81

दिनांक –15.12.2016

संक्षिप्त शब्द संख्या–27

पटना 15.12.2016

16. प्रिय नरेन,

नमस्कार।

कुशल कुशलापेक्षी। आगाँ समाचार जे अहाँ पत्र देब एकदम सँ बिसरि गेल छी। किछु कारण बूझि पड़ैत अछि। पहिने तँ होइत छल जे अहाँ परीक्षा मे बाझल छलहुँ मुदा आब तँ ओहि सँ मुक्त भए गेलहुँ। एहि सँ निश्चित रूपेँ अनुमान होइत अछि जे अहाँ हमरा पर रुष्ट छी। नहि जानि जे अहाँ कहिया आ कोना पुनः पत्र लिखि कृतार्थ करब।

नरेन सिंह — अहाँक

होली क्रॉस स्कूल — सुमन

कक्षा–8, क्रमांक–4

दरभंगा

17. प्रस्तुत पाँती उदयचन्द्र झा 'विनोद' रचित 'बच्चा' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। एहि कवितांश मे बच्चाक महत्त्व पर प्रकाश देल गेल अछि।

वस्तुतः बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूप मे माय-बाप कँ नहि, सामूहिक रूप मे सम्पूर्ण सृष्टि कँ विकसित होएबाक, फुलएबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा बिनु सृष्टिक गतिए स्थिर भए जाएत। जखन लोक थाकि-हारि घर अबैत अछि तँ बच्चा संग खेलाए अपन थकनी कम करैत अछि। बच्चे पर संसारक वर्त्तमान आ भविष्य निर्भर करैत अछि। जीबाक लेल स्नेह-रागक भावना भरैत अछि बच्चा। ओ लोकनि जे नेना कँ व्यर्थ बुझैत छथि से बकलेल छथि। जीवन आ जगतक स्थायित्व तथा विकासक मूलमन्त्र बच्चा अछि।

अथवा

प्रस्तुत गद्यांश 'राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा' शीर्षक निबन्ध सँ लेल गेल अछि। निबन्धकार थिकाह बाबू भोलालाल दास।

1947 ई. पर्यन्त भारतवर्ष पराधीन छल। अंग्रेज एकर अधिपति छलाह। ओ अपन अंग्रेजी भाषा कँ भारतक राजभाषा बनौलनि आ शिक्षोक माध्यम मुख्यतः अंगरेजिए कँ रखलनि। मुदा स्वतंत्रताक आन्दोलन-क्रम मे नेता लोकनि सात समुद्र पारक एहि विदेशी भाषा कँ ने राजभाषा, ने राष्ट्रभाषा, ने लोक शिक्षाक माध्यमक लेल उपयुक्त बुझलनि। एही प्रसंग विवेच्य पाँती सभ कहल गेल अछि। महात्मा गाँधी एतुक्के कोनो भाषा कँ राष्ट्रभाषा बनेबाक आवश्यकता बुझलनि। शिक्षाक पद्धतियो मे हुनका केवल किरानी वा सरकारी अफसरक सेना तैयार करबाक नहि छलनि, प्रत्युत् सब क्षेत्र में वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न कराबक छलनि। तँ समस्त राष्ट्र लेल एकटा राष्ट्रभाषा बनाओल गेल।

18. समस्त-समस्त भारत पन्द्रह अगस्त कँ स्वतंत्रता दिवस मनबैत अछि।

निधि - भारतवर्षक बहुतो निधि मुगल शासक लए गेल।

अधिपति- राजा जनक मिथिलाक अधिपति छलाह।

प्रशस्त- ताजमहल भारतक प्रशस्त दर्शनीय स्थान अछि।

क्षुब्ध - रामनारायणक व्यवहार सँ हम क्षुब्ध छी।

19.

संज्ञा		विषेषण
अर्थ	-	अर्थवान्
अन्त	-	अन्तिम
ज्ञान	-	ज्ञानवान्
त्रिकाल	-	त्रैकालिक
हर्ष	-	हर्षित

20. जातिक आधार पर संज्ञाक पाँच भेद होइत अछि-

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा - एहि सँ कोनो एक विशिष्ट व्यक्ति अथवा वस्तुक बोध होइत अछि। उदाहरणार्थ- राम, हिमालय आदि।

(ख) जातिवाचक संज्ञा- एहि सँ जातिभरिक व्यक्तिक अथवा वस्तुक बोध होइत अछि। यथा- मनुष्य, जंगल आदि।

(ग) समूहवाचक संज्ञा - एहि सँ व्यक्ति अथवा वस्तुक जातिभरिक बोध नहि अपितु व्यक्ति वा वस्तुक समूहक बोध होइछ। यथा- झुण्ड, झाबा आदि।

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा - एहि सँ ओहि वस्तुक बोध होइछ जे नापल अथवा जोखल जाए। उदाहरणार्थ- सुपारी, चीनी आदि।

(ङ) भाववाचक संज्ञा - बहुत एहन संज्ञापद अछि जकरा देखब, स्पर्श करब अथवा सूँघब कहियो सम्भव नहि अछि, मुदा ओकर भावमात्रक बोध भेनिहार अछि। यथा- वीरता, नेनपन आदि।

21. विश्व - संसार
पर्वत - पहाड़
स्वर्ण - कंचन
गिरि - पर्वत
आँखि - नयन

22. काल — 𑒏𑒰𑒪
बालक — 𑒥𑒰𑒪𑒏
राम — 𑒩𑒰𑒧
बजार — 𑒥𑒖𑒰𑒩
गाछ — 𑒑𑒰𑒕

23. मातृभाषाक संबंध मे महात्मा गाँधीक स्पष्ट विचारधारा छलनि। हुनक कहब छल जे नेना लोकनि कँ मातृभाषा माध्यम सँ प्राथमिक शिक्षा देल जएबाक चाही। मातृभाषा मे बच्चा कोनो विषय कँ सहजहिँ बुझि सकैत अछि जे कि अन्य भाषाक माध्यमे दुरूह भए जएतैक।

24. 1947 ई. पर्यन्त भारतवर्ष पराधीन छल। अंग्रेज एकर अधिपति छलाह। अंग्रेजी भाषा कँ भारतक राजभाषा बनौलनि आ शिक्षोक माध्यम अंगरेजिए के रखलनि। मुदा स्वतंत्रता आंदोलनक क्रम मे नेता लोकनि सात समुद्र पारक एहि विदेशी भाषा कँ ने राजभाषा, ने राष्ट्रभाषा, ने लोक शिक्षाक माध्यमक लेल उपयुक्त बुझलनि। महात्मा गाँधी एतुक्के कोनो भाषा कँ राष्ट्रभाषा बनेबाक आवश्यकता बुझलनि। शिक्षाक पद्धतियो मे हुनका केवल किरानी वा सरकारी अफसरक सेना तैयार करबाक नहि छलनि, प्रत्युत् सब क्षेत्र मे वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न करबाक छलनि। तँ राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसेनक अध्यक्षता मे एक समितिक निर्माण करौलनि आ तकरा द्वारा भाषाक विषय मे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्धा योजना।

त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ अछि मातृभाषा राष्ट्रभाषा आ विश्व भाषाक अनिवार्यता एवं एहि तीनूक सामंजस्य वा क्षेत्र निर्णय। प्रत्येक राज्य अपना-अपना मातृभाषा मे अपन-अपन खास सरकारी काज वा शिक्षाक विकास करौ मुदा समस्त राष्ट्रक काज वा भिन्न-भिन्न राज्यक पारस्परिक काज एक राष्ट्रभाषा हिन्दीक द्वारा होअए। तदर्थ शिक्षा पद्धति मे अंग्रेजीक स्थान हिन्दी कँ देल जाए। एकर अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय काजक हेतु अर्थात् संसारक भिन्न-भिन्न राष्ट्र सँ अबरजात वा सम्बन्ध सरोकार रखबाक लेल अंग्रेजी वा आने कोनो व्यापक भाषा नवीन वा प्राचीन सेहो विद्यार्थी कँ अपना-अपना रुचि तथा आवश्यकताक अनुसार पढ़बाक सुविधा होअए। अंग्रेजी राष्ट्रभाषा जनु रहौ।

25. विद्यापति लिखित 'शिवगीत' महेशबानी थिक। एहि मे पार्वती शिव के सम्बोधित करैत छथि-हम अहाँ के बेर-बेर कहैत छी जे मोन लगाकए खेती करू। लाज छोड़िकए अहाँ भीख मंगैत फिरैत छी। एहि सँ अहाँक गुण-गौरव पर प्रभाव पड़ैत अछि। सब लोक निर्धन कहि अहाँक उपहास करैत अछि। केओ अहाँ कँ नीक दृष्टि सँ नहि देखैत अछि। यैह कारण थिक जे अहाँक पूजा आक ओ धतूर लए होइत अछि जखन कि विष्णुक पूजा चम्पाक फूल सँ। तँ हम कहैत छी जे अहाँ खटङ काटि कए हर बनाउ, त्रिशुल तोड़ि कए फार बनाउ आ बसहा लए कए खेत जोतू। गंगाक पानि सँ पटौनी करू। अहाँक सेवा हम एहने पुरुषक रूप मे करैत रहलहुँ अछि। मुदा अहाँ तँ भिखारि भए जीवनयापन करैत छी। एहि जन्म मे जे भेल से भेल, अगिलो जन्म नीक हो सैह कामना अछि।

26. वर्षाक बाद लोक खुशी मे बाध दिस जाएत। खेत मे भीजि-भीजि भरि-भरि दिन लोक धानक बीया उखाड़त, धान रोपत। खेतक आरिये पर बैसि दिनुका भोजन करत। पानि भेला पर किसान कँ धान रोपा जाएत तकर खुशी रहैत छैक। ओ सभ-आशाक मचकी पर झुलैत अछि। नीक जजाति होएबाक कल्पना कए लोक कल्पनाक स्वर्ग मे बुलैत अछि।

27. माँगन खबासक जन्म सहरसा जिलाक पचगछिया गामक धानुक जातिक घर मे सन् 1908 ई. मे भेल छलनि। हिनक माय पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहक परिवार मे खबासिन छलीह। खबासिनक बेटा भेने माँगन खबासक नाम सँ प्रसिद्ध भेलाह। गाम मे ओ सामान्य शिक्षा पौलनि।

माँगन बड़ परिश्रमी ओ लगनशील छलाह। आधुनिक शिक्षाक अभावो मे ओ संगीतक शिक्षा मे पारंगत भए गेलाह। ओ नीक जकाँ धूपद, धमार, दादरा, खयाल,

ठुमरी, विद्यापति गान आ लोकगीत गाबथि जाहि सँ श्रोता मंत्रमुग्ध भए जाथि। स्वर साधल ओ आस सम्हारल होइत छलनि। संगीत कलाक कोनो आयोजन-प्रदर्शन होअए, हिनक गायन, वाद्यवादन, भाव-भंगिमा आदि सँ श्रोता मंत्रमुग्ध भए जाइत छलाह।

माँगन खबासक जीवनक अधिकांश समय रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहक दरबार मे बीतल। एहिठाम ई बीस वर्ष रहलाह। बाद मे पटना मे गयाक जमीन्दार अलख नारायण सिंहक शारदा संगीतालय मे 1931 सँ 1933 धरि रहि ओहिठास सँ रायगढ़क नवावक ओहिठाम गेलाह। ओतए सँ माँगन दरभंगा महाराजक दरबार मे कुमार साहेब विश्वेश्वर सिंहक आश्रय मे गेलाह। कालान्तर मे ओ बनैलीक कुमार श्यामानन्द सिंहक सानिध्य मे अएलाह। मात्र पैंतीस वर्षक अवस्था मे 1943 ई. मे हिनक मृत्यु भए गेल।

28. कोनो देश सुरक्षित आ आत्मनिर्भर तखने रहि सकैछ जखन ओहि देशक किसान आ सैनिक अपन-अपन काज पूर्ण मनोयोग सँ करथि। सेना सीमा पर तैनात रहि राष्ट्र कँ बाहरी शत्रु सँ बचबैछ आ कृषक वर्ग खेत मे दिन-राति परिश्रम कए सैनिक आ देशवासी लेल अन्न उपजबैछ। किसान स्वयं कष्टित रहि अनकर पेट भरैछ। तहिना सैनिक अपन परिवार, धियापूता दूर रहि बाहरी शक्ति सँ राष्ट्रक रक्षा करैत छथि। दुनू गोटा कँ विभिन्न ऋतुक मारि सहए पड़ैछ। पर्वत सभ पर तैनात सेना ओ खेत मे कार्यरत किसान कँ सभ ऋतु में अपन-अपन काज करए पड़ैत छनि।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-८)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. कोशी सँ गण्डकी धरि मिथिलाक नमती अछि

   (क) बीस योजन (ख) चौबीस योजन

   (ग) पचास योजन (घ) चालीस योजन

2. 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' क लेखक छथि

   (क) जयकान्त मिश्र (ख) राधाकृष्ण चौधरी

   (ग) डॉ. ग्रियर्सन (घ) डॉ. अब्राहम लिंकन

3. भारत स्वतन्त्र भेल

   (क) 1954 ई. मे (ख) 1949 ई. मे

   (ग) 1960 ई. मे (घ) 1947 ई. मे

4. इतिहास प्रसिद्ध विद्वान् छलाह

   (क) डॉ. महेश्वरी प्रसाद (ख) डॉ. ईश्वरी प्रसाद

   (ग) डॉ. भैरवी प्रसाद (घ) डॉ. रामेश्वरी प्रसाद

Cont. ....

5. चन्द्रमुखी दाइक पुत्र अछि

(क) रामू (ख) देबू

(ग) फूल (घ) गुलाब

6. माछ खयला सँ बढ़ैत अछि

(क) बुद्धि (ख) लम्बाइ

(ग) सुन्दरता (घ) संस्कार

7. ममता करैत छलीह

(क) नोट तैयार (ख) कॉपी जाँच

(ग) पुस्तक पढ़ैत (घ) चिट्ठी लिखैत

8. ममता रमुआ कँ आनय कहलकैक

(क) केरा (ख) भात

(ग) दही (घ) पापड़

9. पर्यावरण कँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि

(क) पानि (ख) अन्न

(ग) मनुक्ख (घ) गाछ–वृक्ष

10. भाग्यनारायण झाक रचना अछि

(क) क्रैक (ख) भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी.आर. अंबेदकर

(ग) भोजन (घ) चन्द्रमुखी

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) 14 अप्रैल, 1891 ई.	(क) अम्बेदकर निधन
(ii) 14 अप्रैल, 1907 ई.	(ख) अम्बेदकर कँ पी.एच.डी. उपाधि
(iii) 14 अप्रैल, 1916 ई.	(ग) अम्बेदकर मैट्रिक उत्तीर्णता
(iv) 6 दिसम्बर, 1956 ई.	(घ) अम्बेदकरक जन्म

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू: 3

(क) मिथिलाक चौड़ाइ .... कोस अछि। (64/66)

(ख) मिथिला मे विदेह एवं .... दू गणराज्य छल। (लिच्छवी/बौद्ध)

(ग) मिथिलाक नमती .... कोस अछि। (96/88)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3

(i) सिफलाहा सब कोलकाता जा पाप कमाय घर अनैत अछि।

(ii) भरदुतिया पावनि मे घर-अङना नहि नीपल जाइत अछि।

(iii) भरदुतिया मे अरिपन दय पीढ़ी ढ़ौरि कय राखल जाइत अछि।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : 10

(लगभग 200 शब्द मे)

(क) समाचार-पत्र

(ख) अपन प्रिय कवि

(ग) रिक्सावला

(घ) सहशिक्षा

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

ह! गेल जाड़! हाथ-पएर थरथर कँपैत रहैत छल। ओढ़ना तर सँ कोनो काज करैक हेतु हाथ बाहरे नहि कयल होइत छल। साँझ-प्रात घूड़क लग बैसल-बैसल ओ राति कँ पोआर तर मे नुकाय कोनहुना दिन खेपल। मोट गद्दा पर उत्तम सीरक-तुराइ ओढ़ने पड़ल-पड़ल केहन आलसी भय गेल छलहुँ। दिन उठलहुँ मुदा जाड़क कारणेँ एक डूब स्नानो करब कठिन लगैत छल। तुराइ तर सँ बहार भय अँगरखा खोलि रातिक भोजन करब दुस्साहस बुझना जाइत छल। भोर मे पढ़बाक हेतु ओछाओन छोड़ब असम्भव भय गेल छल। भरोसे नहि छल जे ई गरीबक हाड़ कँ कँपौनिहार, धनिक कँ अकर्मण्य बनौनिहार, नेना-भुटकाक स्वच्छन्द क्रीड़ा मे बाधा देनिहार जाड़ कहियो जायत।

16. मित्रक पत्रोत्तर दैत एकटा पत्र लिखू। 7

17. निम्नलिखित गद्य-खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू: 5

ककरा छैक हमरा सन बेटा? लाख मे एक अछि। कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब। दू-चारि दिन पाहुन-पड़क जेकाँ रहब। बेटा-पुतोहु कँ स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभक नव वयस। यैह तँ वयस थिकैक खयबा-खेलबायक। ओहि मे बूढ़ लोकक मुड़ियारी देब महा अनर्थ।

अथवा

शब्द चूकि जाइत अछि

संग नहि द' पबैत अछि छन्द

अलंकारक कोनहुटा छटा

छुबि नहि पबैछ माँक चरण

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

उर्वर, नोनछराइन, कुरहड़ि, सारिल, विपदा

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ: 5

घर, जल, करूणा, कुल, चरित्र

20. सर्वनामक भेद सोदाहरण लिखू। 5

21. निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची लिखू। 5

सूर्य, निरधन, फूल, हरि, हर

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

कोयल, किसान, लड़का, तलवार, लोक

23. पं. जवाहर लाल नेहरूक भाषा-प्रेमक वर्णन करू। 4

24. साहित्य अकादेमी सँ पुरस्कृत पाँच पोथीक नाम लेखकक संग लिखू। 4

25. 'माँ' कविता मे कवि की कहय चाहैत छथि? 4

26. हाथक महत्ता पर प्रकाश दिअ। 4

27. गोदावरी दत्तक जीवनी संक्षेप में लिखू। 5

28. माँगन खबास कोन-कोन राजदरबार सँ सम्बद्ध रहलाह। उल्लेख करू। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-८)

1. (ख) चौबीस योजन
2. (ग) डॉ. गिय्रर्सन
3. (घ) 1947 ई. मे
4. (ख) डॉ. ईश्वरी प्रसाद
5. (ग) फूल
6. (क) बुद्धि
7. (ख) कॉपी जाँच
8. (घ) पापड़
9. (घ) गाछ–वृक्ष
10. (ख) भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेदकर
11.

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) 14 अप्रैल, 1891 ई.	(घ) अंबेदकरक जन्म
(ii) 1907 ई.	(ग) अंबेदकरक मैट्रिक उत्तीर्णता
(iii) 1916 ई.	(ख) अंबेदकर कँ पी–एच.डी. उपाधि
(iv) 6 दिसंबर, 1956 ई.	(क) अंबेदकरक निधन

12. (क) 64

    (ख) लिच्छवी

    (ग) 96
13. (i) अशुद्ध

    (ii) अशुद्ध

    (iii) शुद्ध
14. (क) उत्तर पत्र (सेट–3) कँ देखू।

    (ग) उत्तर पत्र (सेट –2) कँ देखू।

15. शीर्षक : **जाड़**

जाड़ मास गरीब आ अमीर दुनूक लेल कष्टकार होइत अछि। गरीब लोक साँझ-प्रात घूर लग बैसि कोनहुना दिन खेपैत छथि। धनीक लोक सीरक-तुराइ ओढ़ने अकर्मण्य बनल रहैत छथि आ नेना- भुटकाक स्वच्छन्द क्रीड़ा मे बाधा होइछ।

प्रदत्त शब्द संख्या- 109

संक्षिप्त शब्द संख्या-37

16. प्रिय हेमन्त, पटना

नमस्कार। 16.12.2016

हम कुशल छी आ अहाँक कुशलता भगवान सँ मनबैत छी। अहाँक पत्र पाबि परम प्रसन्न भेलहुँ। अहाँक उलहन अत्यधिक आनन्द आ अपार दु:खक कारण भए गेल अछि। आनन्द एहि हेतु भेल अछि जे अहाँ हमर कुशल जानबा लेल सदति उत्सुक रहैत छी। मुदा दु:ख एहि हेतु भेल अछि जे हमर स्तब्धता अहाँक कोमल हृदय कँ दु:ख पहुँचौलक अछि। हमरा आशा एवं विश्वास अछि जे कारण बूझि अहाँ हमरा अवश्ये क्षमा करब।

मित्र! गाम अबितहिँ हम परीक्षोपरान्त अस्वस्थ्य भए गेलहुँ। बाइसी भए गेल। अधिक काल बेहोश रहैत छलहुँ। बचबाक आशा नहि छल। अहाँ कँ सूचना देबए हेतु भाइजी कँ कहलिएनि। ओ पत्र पठाए देबाक सूचना देलनि मुदा पठौलनि नहि। हुनका पूर्ण विश्वास छलनि जे अहाँ हमर अस्वस्थताक सूचना पाबि परीक्षा छोड़ि दौगि पड़ब। आब हम पथ्य खएलहुँ। आशा अछि जे शीघ्र स्वस्थ भए जाएब। औषधि चलि-रहल अछि। आब जानक कोनो डर नहि। परिवारक सब गोटा कुशल छथि। अहाँ कँ देखए लेल सभ कँ मोन लागल छनि। अत: परीक्षा समाप्त भेला पर अहाँ वापस एहिठाम आएब। एक दिन रहलाक उपरान्त गाम चलि जाएब। हमरा आशा अछि जे आब अहाँ हमरा प्रति मन मे आन भावना नहि राखब। इति।

हेमन्द झा अहाँक

तिरहुत कॉलोनी उमेश

मधुबनी

17. प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रमुखी' कथा सँ लेल गेल अछि। कथाकार थिकीह लिली रे।

विवेच्य कथांश मे मायक त्याग ओ ममताक कारूणिक चित्र उपस्थित कएल गेल

अछि। भारत मे संतानक लेल माय ममताक मंजूषा, वात्सल्यक वाटिका ओ स्नेहक सुख–सदन मानल गेल अछि। चन्द्रमुखी स्वयं कष्ट कटैत बेटा फूल कँ पोसि पैघ करैत अछि। ओकरा पढ़बैत अछि। फूल ओकील बनि जाइछ। ओ माय कँ मधुबनी आनए चाहैत अछि। मुदा चन्द्रमुखी बेटा लग बेसी दिन लेल नहि जाए चाहैत छलि। ओकरा अपन बेटा पर नाज छै। ओ बेटा–पुतोहुक स्वच्छन्दा मे बाधा बनए नहि चाहैत अछि। प्रस्तुत गद्यांश मे अत्यन्त मार्मिक ढ़ंग सँ सन्तान–स्नेहक चित्र उकेरल गेल अछि।

अथवा

प्रस्तुत कवितांश तारानन्द वियोगी लिखित 'माँ' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि।

वस्तुत: माँ केर वर्णन सम्भवे नहि छैक। शब्द आ छन्द सेहो हुनक वर्णन करबाक क्रम मे चूकि जाइत अछि। अलंकारक कोनहुटा छटा माँक चरण स्पर्श नहि कए पबैछ।

18. उर्वर – हमर रही परहक खेत बड़ उर्वर अछि।

नोनछराइन – समुद्रक पानि नोनछराइन होइछ।

कुरहड़ि – कुरहड़ि सँ जारनि फाड़ल जाइत छैक।

सारिल – आम–गाछक टोन मे सारिल ढ़ंगर नहि छल।

विपदा – नेपाल मे एखन भूकम्पक विपदा आएल छैक।

19.

संज्ञा	**विशेषण**
घर	घरैया
जल	जलीय
करूणा	कारूणिक
कुल	कुलीन
चरित्र	चारित्रिक

20. जे शब्द संज्ञाक स्थान मे आबए से थीक सर्वनाम। यथा –रामचन्द्र राजा रहथि मुदा ओ प्रजाक हितचिन्तक रहलाह। एहिठाम 'ओ' शब्द रामचन्द्र संज्ञाक स्थान मे आएल अछि। अत: 'ओ' सर्वनाम थीक।

सर्वनाम छओ प्रकारक होइत अछि –

(क) पुरुषवाचक – जाहि सर्वनाम सँ पुरुषक बोध होअए, से थीक पुरुषवाचक सर्वनाम। यथा– हम, तोँ आदि।

(ख) प्रश्नवाचक –जाहि सर्वनाम सँ प्रश्नक बोध होअए, से होएत प्रश्नवाचक सर्वनाम। यथा – के गीत गाबि रहल अछि? एतए 'के' प्रश्नवाचक सर्वनाम भेल।

(ग) सम्बन्धवाचक – जाहि सर्वनाम सँ सम्बन्धक बोध होअए, से होएत सम्बन्ध वाचक सर्वनाम। यथा– जकरे धन तकरे जन। एहिठाम 'जकरे' आ 'तकरे' सम्बन्धचाचक सर्वनाम भेल।

(घ) निश्चयवाचक – जाहि सर्वनाम सँ निश्चयवाचक बोध होअए, से थीक निश्चयवाचक सर्वनाम। यथा– ई जकर होइक से लए जाओ। एतए 'ई' निश्चयवाचक सर्वनाम भेल।

(ङ) अनिश्चयवाचक –जाहि सर्वनाम सँ अनिश्चयताक बोध होअए, से थीक अनिश्चयवाचक सर्वनाम। यथा– जैह बचल सैह कमाओल। एतए 'जैह' आ 'सैह' अनिश्चयवाचक सर्वनाम भेल।

(च) निजवाचक – जाहि सर्वनाम सँ निज केर बोध होअए, से होएत निजवाचक सर्वनाम। यथा– ओ अपनहि कार्य कएलनि। एतए 'अपनहि' निजवाचक सर्वनाम भेल।

21. सूर्य – आदित्य

निरधन – गरीब

फूल – पुष्प

हरि – कृष्ण

हर – महादेव

22.

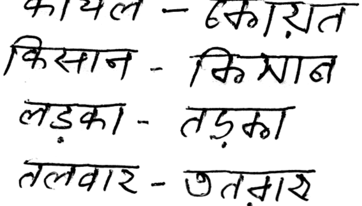

23. पं. जवाहर लाल नेहरू कँ सभ भाषा सँ एकरंग प्रेम छलनि। मैथिलीक सम्बन्ध मे नाना प्रकारक भ्रान्तिक प्रसंग ओ कहने रहथि – ''भाषा और सहित्य के बारे मे विवाद की क्या बात है? किसी को मैथिली या राजस्थानी से विवाद क्यों हो सकता है?'' जयकान्त मिश्र द्वारा आयोजित मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी देखए आएल छलाह नेहरूजी। प्रदर्शनीक बाद हुनक वक्तव्य जे आएल ताहि सँ भाषाक प्रति हुनक प्रेम स्पष्ट झलकैत अछि–

जनगणना मे कम मैथिली भाषी संख्या लिखैत अछि तँ तकर परबाहि नहि करू, मात्र 2 लाख संख्यक आइसलेण्डक भाषा-भाषी छथि, मुदा ओहू मे नीक पोथी पर नोबेल पुरस्कार भेटलैक अछि। दोसर, सरकार मानए तकर चिन्ता नहि कए, देखी जे विद्वान मानथि, विश्वविद्यालय मानए, लेखक मानथि- से जँ मैथिली कँ मानैत छथि, तँ सरकार कँ झक मारि कए (यदि ओ जनताक सरकार अछि तँ) मैथिली कँ मानए पड़तैक, आर जँ एतेक पैघ क्षेत्र मे मैथिली प्रचलित अछि, जे हम सभ कहैत छी, तँ ओकर सरकारी काज मे, राजकाज मे, कोर्ट-कचहरी मे सेहो उपयोग करबाक स्वीकृति देबहि पड़तैक।

पण्डित नेहरूक भाषे-प्रेम छल जे साहित्य अकादेमी मे मैथिली कँ स्थान भेटलैक।

24. मिथिला वैभव - यशोधर झा
    पत्रहीन नग्न गाछ - वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
    बाजि उठल मुरली - उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'
    संघर्ष ओ सेहन्ता - सुरेश्वर झा
    उचाट - आशा मिश्र

25. 'माँ' शीर्षक कविता तारानन्द वियोगीक रचना अछि। कविता सम्बोधित अछि दीदी कँ। दीदी पीसी आ जेठ बहिन दुनू कँ कहल जाइछ। मायक प्रति दीदीक भाव-सिक्त अभिव्यक्तिक सीमांकन करैत कवि प्रकारान्तर सँ अपन असीम श्रद्धा निवेदित करैत छथि। वस्तुतः ई मायक काव्य-तर्पण थिक।

    माँ पर कविता लिखब असम्भव अछि। शब्द चूकि जाइछ, छन्द संग नहि दए पबैछ आ अलंकारक कोनहुटा छटा माँक चरणस्पर्श नहि कए पबैत अछि। माँ एहन वृत्त थिकीह जकर प्रदक्षिणा कोनो तन्त्र नहि कए सकैछ। माँ एकटा देवता थिकीह जनिक निर्वचन लेल कोनो मन्त्र नहि रचल गेल।

26. हाथक बड़ महत्ता छैक। बिनु हाथेँ लोक कोनो काज नहि कए सकैछ। ताहू मे मजदूर आ कृषक वर्गतँ गप्पे नहि हुअए। ओकर तँ हथियार थिक हाथ। कतुक्का माटि कतेक उर्वर छैक, से हाथे जनैत अछि। ठाम-ठामक पानि मे की अन्तर छैक से हाथे सँ बूझल होइत छैक। पानि निकालबा लेल पहिने माटि कँ कोड़ल जेतैक आ से करतैक हाथ। तहिना गाछ-वृक्ष कँ कटैत काल, फाड़ैत काल वा गाछक टोन कँ बरोबरि हिस्सा मे कटैत काल हाथेक प्रयोजन पड़ैत छैक। कुरहड़ि आ हाथक सम्बन्ध हाथे जनैत

अछि। यैह हाथ सारिल सँ टकराइत छैक। घाम ओ श्रमक सम्बन्ध हाथे स्थापित करैत छैक।

27. मिथिलाक महान् चित्रकर्मी श्रीमती गोदावरी दत्तक जन्म 6 नवम्बर, 1930 ई. मे दरभंगा जिलाक बहादुरपुर गाम मे भेल छलनि। हुनक पिता रास बिहारी दासक छत्रछाया मात्र पाँच वर्ष धरि भेटलनि। पिताविहीन गोदावरीक शिक्षा प्राइवेट सँ मैट्रिक धरि छलनि। मिथिला लोकचित्रकलाक प्रेरणा माय छलथिन, मुदा प्रोत्साहन भेटलनि उड़ीसावासी निदेशक हरि प्रसाद मिश्र सँ।

मिथिला लोकचित्रकला पर मुख्यत: महिले लोकनिक एकाधिपत्य अछि। ओ एहि क्षेत्रक कलाविभूति पद्मश्री गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी आ महासुंदरी देवी सँ विशेष प्रभावित छथि। एहिठामक स्त्रीगण कँ चित्रकलाक ज्ञान पारिवारिक अथवा कौटुम्बिक परिवेश सँ भेटैत छनि। मुदा गोदावरी दत्त प्रतिवर्ष दसटा शिष्या कँ प्रशिक्षण दैत आबि रहल छथि।

गोदावरी दत्त कँ मिथिला लोकचित्रकला मे उल्लेखनीय योगदानक हेतु सर्वप्रथम 1973 ई. मे राज्य सम्मान ओ राष्ट्रपतिक हाथेँ श्रेष्ट एवं दक्ष शिल्पीक पुरस्कार 14 नवम्बर, 1980 ई. कँ देल गेल छलनि। पछाति हिनक कला साधना मे निरन्तर विकास कँ देखैत 1975 ई. मे चेतना समिति, पटना द्वारा ताम्रपत्र, 1977 ई. मे टी. ए. पाई द्वारा प्रशस्तिपत्र, 1980 मे प्रख्यात चित्रकार उपेन्द्र महारथी एवं 1983 मे मधुबनीक जिलाधीश द्वारा प्रशंसापत्र सेहो देल गेलनि।

गोदावरी दत्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक कलाक एकान्त साधिका छलीह, हिनका सँ मिथिलाक गौरव ओ गरिमा बढ़ल अछि।

28. माँगन खबासक जीवनक अधिकांश समय रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह दरबार मे बीतल। रायबहादुर स्वयं उच्चकोटिक संगीतज्ञ छलाह। संगीत सम्मेलन ओ सभा मे रायबहादुर निश्चित रूप सँ गेल करथि आ माँगन सेहो संग जाथिन। बाद मे ओ पटना मे गयाक जमीन्दार अलखनारायण सिंहक संगीतालय मे 1931 सँ 1399 धरि रहि ओहिठाम सँ रायगढ़क नवावक ओहिठाम गेलाह। ओतए सँ ओ दरभंगा महाराजक दरबारमे कुमार साहेब विश्वेश्वर सिंहक आश्रम मे अएलाह। कालान्तर मे माँगन खबास बनैलीक कुमार श्यामानन्द सिंहक सानिध्य मे अएलाह। मुत्यु सँ पहिने ओ कुमार श्यामानन्द सिंहक ओहिठाम बनैली मे छलाह।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-९)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. विद्यापतिक रचना छनि
   (क) शिवगीत (ख) समय साल (ग) वन्दना (घ) हऽ आब भेल वर्षा
2. 'मधुप' उपनाम छनि
   (क) काशीकान्त मिश्रक (ख) वैद्यनाथ मिश्रक
   (ग) मोहन भारद्वाजक (घ) चन्द्रनाथ मिश्रक
3. चन्द्रभानु सिंह कँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि
   (क) प्रतिपदा पर (ख) पारो पर
   (ग) शकुन्तला पर (घ) अभिन्न पर
4. 'एड्सक कालनाग' सँ रक्षाक लेल आवश्यकता अछि
   (क) धनक (ख) बलक (ग) चरित्रक (घ) बुद्धिक
5. दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क रचना छनि
   (क) वन्दना (ख) हाथ (ग) कर्मवीर (घ) रौदी अछि
6. सिपाही कतय लड़ैत अछि
   (क) खेत मे (ख) घर मे (ग) सीमा पर (घ) लड़ाइक मैदान मे
7. 'जय जवान जय किसान' कविताक रचनाकार छथि
   (क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

Cont. ....

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) तारानन्द वियोगी

8. जनक राजवंशक छलाह

(क) निमि जनक (ख) मरीचि (ग) कश्यप (घ) विश्वनाथ

9. विद्यापतिक जन्म-स्थान अछि

(क) बिस्फी (ख) सौराठ (ग) अन्धराठाढ़ी (घ) बड़गाम

10. चन्दा झाक जन्म भेल छलनि

(क) 1831 ई. मे (ख) 1931 ई. मे (ग) 1881 ई. मे (घ) 1891 ई. मे

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) काशीकान्त मिश्र	(क) आनन्द
(ii) दिनेश्वर लाल	(ख) मधुप
(iii) लिली रे	(ग) मैथिल आँखि
(iv) अशोक	(घ) उपसंहार

12. निम्नलिखित खाली स्थान कँ उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

(क) भदइ सुखायल धान ....। (दहायल/भसायल)

(ख) कोना दिन ....जिउत की खाय। (काटत/बीतत)

(ग) बाँधल ....ऊच कै आरि। (छहर/बाध)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

(i) राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसेनक अध्यक्षता मे एक समितिक निर्माण कयल गेल आ तकरा द्वारा भाषाक विषय मे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

(ii) रमुआ मालिक छल।

(iii) कथानायकक पत्नी ममता छलीह।

14. कोनो एक विषय पर निबन्ध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

(क) अनुशासन (ख) दहेज प्रथाक दुर्गुण

(ग) रिक्सावाला (घ) जवाहरलाल नेहरू

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

डॉ. सुभद्र झा विद्वाने नहि, खेतिहर सेहो छलाह। ओ जमि कय खेती करैत छलाह। सत्य तँ ई अछि जे ओ अपन परोपट्टाक उदाहरणीय प्रगतिशील किसान रहथि। नवीनतम प्रभेदक बीआ जतय भेटनि ततय सँ आनि कृषि-कार्य करथि। सीसो, आम, सागवान, बाँस आदि आधुनिक ढ़ंग सँ लगाबथि। नवीनतम कृषि तकनीक जनबाक आ

तकर उपयोग करबाक लेल ओ सदति सचेष्ट रहथि।

मानसिक श्रम सँ कनेको कम महत्त्व ओ शारीरिक श्रम कँ नहि देलनि। कोनो काज अपने हाथे करबा मे हुनका खुशी होइन। पैरे चलबा मे ओ नामी रहथि। सात्विक भोजन आ शारीरिक कार्य हुनक स्वस्थताक मूल कारण छल। कहबाक चाही जे ओ जीवनक अन्तिम समय धरि स्वस्थ रहलाह। दीर्घायु भेलाह।

16. अपन विद्यालयक कोनो विशेष घटनाक वर्णन करैत अपन मित्र के ँ पत्र लिखू। 7

17. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू : 5

सुरेबगर मुँहक काट-छाँट, गहमियाँ गोटाई, सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा, बीस-पचीस बर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिला-गरिमा कँ शिखर पर पहुँचबैत, बुझाइल छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह?

अथवा

कालकूट घट पीबि सुधा-रस जग मे बाँटि सकैछ
मर्त्य-लोक सँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ।।

18. निम्नलिखित शब्द कँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

कर्मवीर, फाँफर, मखान, पीढ़ी, भरदुतिया

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

दया, विनय, झगड़ा, त्याग, बुद्धि

20. निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य बनाउ : 5

सर्द होयब, सफेद झूठ, माछी मारब, छाती पीटब, कोंढ़ उनटब

21. निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची लिखू : 5

असुर, आकाश, पार्वती, पाथर, झण्डा

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू। 5

राति, चान, सोन, माय, मेला

23. गोदावरी दत्त कँ देल गेल पुरस्कार ओ सम्मानक उल्लेख करू। 4

24. माँगन खबास कोन-कोन प्रसिद्ध संगीत सम्मेलन मे भाग लेलनि आ सम्मानित भेलाह। वर्णन करू। 4

25. डॉ. सुभद्र झा कोन-कोन भाषा जनैत छलाह आ कोन-कोन भाषा मे रचना कयलनि?

26. विद्यापतिक भक्ति गीतक वर्णन करू। 4

27. चन्दा झा युग प्रवर्त्तक कवि छथि। कोना? 5

28. क्रैकक चरित्र चित्रण करू। 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-९)

1. (क) शिवगीत
2. (क) काशीकान्त मिश्र
3. (ग) शकुन्तला पर
4. (ग) चरित्रक
5. (ग) कर्मवीर
6. (ग) सीमा पर
7. (ख) रवीन्द्रनाथ ठाकुर
8. (क) निमि जनक
9. (क) विस्फी
10. (क) 1831 ई. मे
11.

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i)	काशीकान्त मिश्र	(ख) मधुप
(ii)	दिनेश्वर लाल	(क) आनन्द
(iii)	लिली रे	(घ) उपसंहार
(iv)	अशोक	(ग) मैथिल आँखि

12. (क) दहायल

    (ख) काटत

    (ग) छहर
13. (i) शुद्ध

    (ii) अशुद्ध

    (iii) शुद्ध
14. (क) उत्तर पत्र (सेट-4) कँ देखू।

    (ग) उत्तर पत्र (सेट -2) कँ देखू।

14. (घ) **जवाहरलाल नेहरू**

भारत महान् पुरूषक जन्मस्थली मानल गेल अछि। पण्डित जवाहरलाल नेहरू सेहो ओहि महान् लोक सब मे एक छलाह। हिनक जन्म 14 नवम्बर, 1889 मे प्रयाग मे भेल छलनि। हिनक जन्मदिन कँ हमरा देश मे बालदिवसक रूप मे मनाओल जाइत अछि। हिनक पिताक नाम मोतीलाल नेहरू छल। ओ एकटा नामी ओकील छलाह ओ हिनक पालन-पोषण पाश्चात्य ढ़ंग सँ कएलनि। प्रारंभिक शिक्षा घर पर प्राप्त कए उच्च शिक्षा इंगलैंडक हैरो पब्लिक स्कूल मे पौलनि। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय सँ बी. एस. सी. डिग्री प्राप्त कए 'इनर टेम्पल' सँ बैरिष्ट्री पास कएलनि।

1912 ई. मे उच्च शिक्षा प्राप्त कए वापस भारत अएलाह। एताए अएलाक बाद बैरिस्ट्री आरम्भ कएलनि। मुदा ओहि मे हुनका मोन नहि लगलनि। कारण हुनका छात्रावस्थे सँ राजनीति मे अभिरूचि छलनि। ई 'दासताक विरूद्ध संग्राम' शीर्षक पुस्तक बड़ चाव सँ पढ़ैत छलाह। हिनका कचहरीक वातावरण कटु लगनि। हिनक हृदय मे क्रांतिक आगि सुनगि रहल छल। तँ हिनका ओकालतक शांत जीवन निरस लगलनि। 1916 ई. मे हिनक विवाह कमला देवीक संग भेल। हिनका कांग्रेसक लखनऊ अधिवेशन मे गाँधीजी सँ भैंट भेलनि। तखन सँ ओ गाँधीजीक शिष्य बनि गेलाह। 1921 ई. मे प्रिन्स ऑफ वेल्थक विरूद्ध झंडा देखएबा मे जहल गेलाह। 1925 ई. मे अपन पत्नीक चिकित्साक लेल यूरोप गेलाह।

पिता आ पत्नीक भार सँ मुक्त भए राष्ट्रसेवा मे जुटि गेलाह। 1929 ई. मे लाहौर अधिवेशन मे ई कांग्रेसक सभापति चुनल गेलाह। ओहि अधिवेशन मे पूर्ण स्वतंत्रताक माँग घोषित कएल गेल। ई कांग्रेस कँ नव जीवन देलनि। 1942 ई. मे भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ भेल। तखन ई जेल गेलाह। जेलहि मे ई पुत्रीक नाम पिताक पत्र आ भारतक अन्वेषण आदि पोथीक रचना कएलनि। जेल सँ मुक्त भेला पर आंदोलनक समस्त भार अपना ऊपर लेलनि। एहि क्रम मे ई कैक बेर जेल गेलाह। 15 अगस्त, 1947 ई. कँ भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्र भारतक स्थापना भेल। ई पंचशीलक सिद्धान्त कँ निरूपित कएलनि। जीवन भरि प्रधानमंत्री रहि 26मई, 1964 ई. कँ एहि लोक कँ त्यागि अन्त:पुर गेलाह। परञ्च देश सदा कृतज्ञ रहत। ओ मरियो कए अमर छथि।

15. शीर्षक : **प्रगतिशील किसान**

डॉ. सुभद्र झा विद्वान तँ छलाहे, एक प्रगतिशील किसान सेहो छलाह। कृषिक नवीनतम तकनीक आ नव-नव प्रभेदक बीजक अन्वेषण मे रहैत छलाह। कोनो काज

अपने हाथेँ करब, पैरे चलब हुनक स्वस्थताक मूल कारण छल।

प्रदत्त शब्द संख्या–108

संक्षिप्त शब्द संख्या–35

16. प्रिय सुशांत

पटना

नमस्कार।

16.12.2016

एम्हर बहुत दिन सँ तोहर पत्र नहि भेटल अछि। किए? निकेँ ना छेँ ने? काल्हि हमर विद्यालय मे वार्षिकोत्सव छल। एक सप्ताह पूर्वे सँ एकर तैआरी चलि रहल छलैक। सामूहिक गीत लेल किछु छात्रक चयन कएल गेल छल। वाद–विवाद प्रतियोगिता लेल सेहो किछु विद्यार्थी केँ तैयार कएल गेल छल। वाद–विवादक विषय छलैक–'आजुक परीक्षा–पद्धति'। एहि अवसर पर एक नाटकोक आयोजन भेल छल।

प्रातेकाल सँ विद्यालय केँ सजाओल गेल। मुख्य अतिथि छलाह लालू प्रसाद यादव। ओ अपन संक्षिप्त मुदा सारगर्भित भाषण मे छात्र लोकनिक समस्या सब पर प्रकाश देलनि आ हुनका सभ केँ अनुशासित रहबाक विचार देलनि। एहि अवसर पर विद्यालयक पारितोषिक वितरण–समारोह सेहो सम्पन्न भेल। नाटकक प्रदर्शन सँ समस्त आगन्तुक हँसैत–हँसैत थाकि गेलाह। अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सँ सेहो लोकक खूब मनोरंजन भेलैक। एहि तरहेँ कल्हुका दिन विद्यालय लेल महत्त्वपूर्ण रहल।

काकी केँ प्रणाम्।

सुशांत
नया बाजार
सहरसा

तोहर मित्र
राकेश

17. प्रस्तुत गद्यांश 'क्रैक' नामक कथा सँ लेल गेल अछि। एकर कथाकार थिकाह उमाकान्त। एहिठाम नायिकाक सौन्दर्यक वर्णिन अछि।

क्रैक टेम्पो चलबैत छल। एक दिन ओकर टेम्पो मे एकटा पूर्ण यौवना चढ़लथि। विवेच्य कथांश मे ओही नवयौवनाक सौन्दर्यक वर्णन अछि। ओकर वर्ण गोर धप–धप रहैक, मुँह सुरेबगर, बाँहि सोटल, देहक काइत बान्हल, वएस सेहो बीस–पच्चीस, सिंउथ सिन्दूरक आभा सँ चमचमाइत। एहन लगैत छल जेना कृष्णक–राधा धरती पर शैह छल हेतीह।

अथवा

प्रस्तुत पाँती दीनानाथ पाठक 'बन्धु' लिखित महाकाव्य 'चाणक्य'क पहिल सर्ग मे निबद्ध अछि।

विवेच्य पद्यांश मे नेताक परिभाषा देल गेल अछि। जे माहुर सँ भरल घट पीबि अमृतक रस संसार मे बाँटि सकैछ ओएह व्यक्ति मर्त्यलोक सँ देवलोक धरि नेता कहबैत अछि। कहबाक अभिप्राय जे नेता ओएह होइछ जे स्वयं कष्ट मे रहि जनता-जनार्दन के सुख प्रदान करैए।

18. कर्मवीर - चाणक्य कर्मवीर नायक छलाह।

फाँफर - चन्द्रमुखीक नूआ फाँफर छलैक।

मखान - कोजगराक भार मे मखान पठाओल जाइछ।

पीढ़ी - पहिलुका लोक पीढ़ी पर बैसि भोजन करैत छलाह।

भरदुतिया - भाय-बहिनक पवित्र पावनि भरदुतिया होइछ।

19. संज्ञा विशेषण

दया - दयालु

विनय - विनयी

झगड़ा - झगड़ालू

त्याग - त्यागी

बुद्धि - बुद्धिमान्

20. सर्द होएब (भयभीत होएब) - शिक्षक कँ देखितहि छात्र सर्द भए गेल।

सफेद झूठ (नितान्त असत्य) - सदानन्द सन सफेद झूठ बजनिहार बहुत कय भेटल।

माछी मारब (बेकार रहब)- आइ काल्हि अनेको व्यक्ति गाम-घर मे माछी मारि रहल छथि।

छाती पीटब (दुखी होएब) - अनकर उन्नति देखि हरेराम छाती पीटए लगैछ।

कोंढ़ उनटब (कष्ट होएब) -भाइक आकस्मिक निधनक समाचार सुनितहि सुदर्शनक कोंढ़ उनटए लगलनि।

21. असुर - राक्षस

आकाश - गगन

पार्वती - भवानी

पाथर - पाषाण

झण्डा - ध्वज

22. 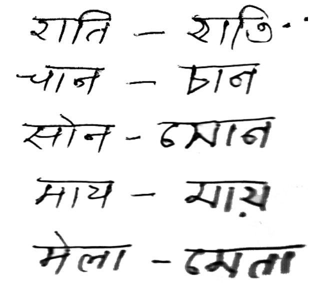

23. गोदावरी दत्त कँ मिथिला लोकचित्रकला मे उल्लेखनीय योगदानक हेतु सर्वप्रथम 1973 ई. मे राज्य सम्मान ओ राष्ट्रपतिक हाथेँ श्रेष्ठ आ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार 14 नवम्बर, 1980 ई. कँ देल गेल छलनि। पश्चात् हिनक कला साधना मे निरन्तर विकास कँ देखैत 1975 ई. मे चेतना समिति, पटना द्वारा ताम्रपत्र, 1977 ई. मे टी. ए. पाई द्वारा प्रशस्ति पत्र, 1980 ई. मे प्रख्यात चित्रकार उपेन्द्र महारथी एवं 1983 ई. मे मधुबनीक जिलाधीश द्वारा प्रशंसापत्र सेहो देल गेलनि।

24. माँगन खबास जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, ग्वालियर, बनारस, पटना, लखनऊ, कलकत्ता, काठमाण्डू आदिक संगीत सम्मेलन सभ मे अपन संगीत साधना सँ मिथिलाक मान बढ़ौलनि। मिर्जापुर संगीत सम्मेलन (1932 ई.) मे हिनका स्वर्ण पदक सँ सम्मानित कएल गेल।

25. डॉ. सुभद्र झा प्रख्यात भाषाविद् छलाह। ओ हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, अंगेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन सहित चौदह भाषाक जानकार छलाह। उक्त भाषा मे हिनक कतेको मौलिक, अनूदित ओ सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित छनि।

26. विद्यापतिक भक्ति गीत मुख्यत: दुइ प्रकारक अछि–महेशबानी आ नचारी। महेशबानी मे गौरी आ महादेवक दाम्पत्य–जीवनक प्रसंग सभ अछि। नचारी एक प्रकारक भक्ति गीत अछि–कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ। एकाछटा गीत गंगाक प्रसंग अछि।

27. चन्दा झा मैथिलीक युग प्रवर्त्तक छथि ताहि मे कनेको संशय नहि होएबाक चाही। सर्वप्रथम तँ ओ अनुसंधानक काज मैथिली मे आरम्भ कएल। मिथिलाक गामे–गाम घूमि कए ओ जे अनुसंधान कएलनि ताहि मे प्रमुख अछि विद्यापतिक गीत। बंगाली विद्वान शारदाचरण मित्र तथा विमान बिहारी मजुमदारक संग विद्यापति गीतक खोज तँ करबे कएलनि, विद्यापतिक हाथक लिखल 'भागवत' सेहो उपलब्ध कएलनि। यैह कृति देखि कए बंगाली सभ मानि गेलाह जे विद्यापति मैथिल छलाह। विद्यापतिक 'लिखनावली' एवं 'कीर्त्तिलता' नामक पोथी तकबाक श्रेय चन्दा झा कँ छनि। गोविन्ददासक गीतक जे संग्रह चन्दा झा कएलनि से बाद मे श्रृंगारभजन' नाम सँ छपल। मैथिली मे रामकथा

पर महाकाव्य सर्वप्रथम चन्दे झा लिखलनि। तहिना पुरुषपरीक्षाक अनुवाद कए मैथिली मे अनुवादक संग कथा-लेखनक मार्ग प्रशस्त कएल।

चन्दा झाक मुक्तक कविताक दूटा संग्रह उल्लेखनीय अछि-'चन्द्रपद्यावली' एवं 'चन्द्र रत्नावली'। एहि दुनू संग्रह मे भक्ति गीत सँ देशदशा विषयक गीत धरि संगृहीत अछि। जीवन आ जगतक प्रति चन्दा झाक दृष्टिकोण, वैचारिकता तथा भावाकुलता हिनक मुक्तक कविता मे मुखर भेल अछि। ओ अपना समयक आँखि आ मुँह दुनू छलाह। ओहि कालक सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक स्थिति कँ चन्दा झा मनोयोगपूर्वक देखलनि। जमीन्दार आ ब्रिटिश शासकीय जाँतक दूटा पट्टा छल जाहि मे आम लोक पिसाइत रहए। चन्दा झा अपन अनेक पद मे एहि स्थितिक वर्णन कएने छथि।

एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे चन्दा झा युग प्रवर्त्तक कवि थिकाह।

28. क्रैक टेम्पो चालक अछि। ओकर असली नाम जे होइक, लोक ओकरा 'क्रैक' कहैक। ओ अपनहुँ एहि नाम कँ स्वीकारि लेने छल। आचरण सँ सेहो 'क्रैक' नाम कँ सार्थक करैत रहैत छल। ओ बेसीकाल एकछाहा मैथिली बाजए आ गीतो बेसी मैथिलीएक गबैत रहए। व्यवहार मे हँसोड़ छल। हरदम दाँत चियारने बतिसी देखबैत रहए। अपन सवारीक सुरक्षा पर ध्यान दैत छल। एक दिनक घटना अछि जे एकटा नवयुवक ओकर टेम्पो पर आबि बैसि गेलैक। कनेक कालक बाद एकटा महिला सेहो बैसलीह। ओ युवा व्यक्ति अभद्र व्यवहार करए लागल। महिला असहज भए गेलीह। टेम्पो चालक क्रैक ओहि नवयुवक कँ मना केलकैक, नहि मानला पर ओकरा संग कठोर व्यवहार कएलक। अपन जान पर खेलिकए ओहि युवा छौँड़ा कँ अन्ततः टेम्पो सँ उतारिये कए छोड़लक।

●●

मॉडल प्रश्न पत्र

विषय : मैथिली

(सेट-१०)

समय : ३ घंटा १५ मिनट **पूर्णांक : १००**

<u>प्रश्न सम्बन्धी निर्देश:</u>

(क) सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि।

(ख) प्रश्न संख्या 1 सँ 10 धरि चारि-चारि विकल्प देल गेल अछि, जाहि मे सँ एक-एक शुद्ध अछि। अपन उत्तर-पुस्तिका मे मात्र शुद्ध उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग आओर घ) लिखबाक अछि।

(ग) प्रश्न संख्या 11 मे स्तम्भ 'अ' तथा स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करबाक अछि आओर 13 मे शुद्ध-अशुद्ध लिखू।

(घ) प्रश्न संख्या 12 मे खाली स्थानक पूर्ति करबाक अछि।

(ङ) प्रश्न संख्या 16 सँ 17 धरिक उत्तर 50 सँ 60 शब्द मे देबाक अछि।

निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तर मे सँ सही उत्तरक अक्षर क्रम (क, ख, ग वा घ) लिखू :

$10 \times 1 = 10$

1. उदयचन्द्र झा 'विनोद'क कविता-संग्रह छनि
   (क) कहलनि पत्नी (ख) चार आ देबालक फाँक मे
   (ग) अन्तर्नाद (घ) शिरोधार्य

2. 'रौदी अछि' शीर्षक कविताक रचयिता छथि
   (क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) सुकान्त सोम
   (ग) अजीत आजाद (घ) मार्कण्डेय प्रवासी

3. 'हाथ' कविता थिक
   (क) मेहनतिया मजदूरक (ख) वीर सैनिकक
   (ग) किसानक (घ) कायर डकैतक

4. 'मिथिला' नामक मैथिली साप्ताहिक आरम्भ कयलनि
   (क) डॉ. लक्ष्मण झा (ख) सुधांशु 'शेखर' चौधरी
   (ग) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (घ) रमानाथ झा

5. 'बाजूवन्द खुलि-खुलि जाय' ठुमरी थिक
   (क) गोदावरी दत्तक (ख) माँगन खबासक
   (ग) विद्यापतिक (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क

Cont. ....

6. 'सांग्स ऑफ विद्यापति' पोथी लिखल छनि

   (क) सुभद्र झाक (ख) जयकान्त मिश्रक

   (ग) उमानाथ झाक (घ) हरिमोहन झाक

7. 'नातिक पत्रक उत्तर' पोथी पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि

   (क) सुभद्र झा कें (ख) हरिमोहन झा कें

   (ग) शैलेन्द्र मोहन झा कें (घ) विभूति आनन्द कें

8. 'राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा'क लेखक थिकाह

   (क) भोलालाल दास (ख) रामलोचनशरण

   (ग) राजमोहन झा (घ) प्रेमशंकर सिंह

9. लिली रे कें साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि

   (क) मरीचिका पर (ख) पटाक्षेप पर

   (ग) उपसंहार पर (घ) रंगीन परदा पर

10. राजमोहन झाक पिता छलथिन

    (क) मनमोहन झा (ख) हरिमोहन झा

    (ग) जीवन झा (घ) जनार्दन झा

11. स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' क सही मिलान करू : 4x1=4

	स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i)	वन्दना	(क) सुकान्त सोम
(ii)	बच्चा	(ख) बुद्धिनाथ मिश्र
(iii)	रौदी अछि	(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(iv)	हाथ	(घ) विद्यानाथ झा 'विदित'

12. निम्नलिखित खाली स्थान कें उपयुक्त शब्दक चयन कय भरू : 3x1=3

    (क) गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ ....जीवनक अंग बनि गेल। (सामाजिक/सांस्कृतिक)

    (ख) मल-मूत्र यत्र-तत्र त्याग करब वायुक ....मुख्य कारण थिक। (प्रदूषणक/स्वच्छताक)

    (ग) मनुष्य ....लैत अछि आ कार्बन डायआक्साइड छोड़ैत अछि। (ऑक्सीजन/नाइट्रोजन)

13. निम्नलिखित वाक्य मे शुद्ध-अशुद्धक चयन करू : 3x1=3

    (i) बाबा कहायब हुनका नीक लागनि।

(ii) ओ अपना सामने ककरो किछु नहि बुझैत छलाह।

(iii) बाबा एकटा खेतिहर छलाह।

14. कोनो एक विषय पर निबंध लिखू : (लगभग 200 शब्द मे) 10

(क) पुस्तकालय (ख) ग्रामोत्थान (ग) समाचार-पत्र (घ) महात्मा गाँधी

15. निम्नलिखित उद्धरणक उपयुक्त शीर्षक दैत संक्षेपण करू : 8

मनुष्यक जीवनक सफलता मात्र यश आ ऐश्वर्य मे नहि अछि अपितु सम्पूर्ण मानवताक कल्याणक हेतु जीवनक समर्पण मे अछि। ओ पुरुष मृत्युक पश्चातो अमर रहैत छथि जे जीवन पर्यन्त मानवताक कष्टक निवारणार्थ अपन सुख त्याग करैत छथि। स्वर्गीय आचार्य विनोबा भावे एही श्रेणी मे अबैत छथि। मानव-मानवक बीच बिषमता आ घृणाक खाधि कैँ भरबाक हेतु ओ देशक समृद्ध लोकनिक समक्ष याचक बनि उपस्थित भेलाह। गाँधीक रामराज्यक स्वप्न कैँ साकार करबाक हेतु लक्ष-लक्ष निर्धन आ उपेक्षितक नोर कैँ पोछि समाज मे सम्मानप्रद स्थान पर बैसाओल। निश्चित रूपैँ ओ सन्त छलाह, जनिक पूजा छल दीन-दुखीक सेवा करब। हुनक सम्पूर्ण जीवन मानव-समाजक एक प्रकाशस्तम्भ अछि जकर प्रकाश मे विषमताक अन्हरिया इजोरिया मे परिवर्तित होमय लागल। स्वर्गीय नेहरू ठीके कहने छलाह-विनोबा सन अद्भुत व्यक्तित्त्वक लोक दुर्लभ अछि।

16. अपन कोनो अपेक्षित कैँ निमंत्रण पठयवा सँ संबद्ध पत्र लिखू। 7

17. निम्न पाँतीक आशय लिखू : 5

भदइ सुखायल धान दहाय।
गरिब किसान को करत उपाय।।
कोना दिन काटत जिउत की खाय।
बाल बचा मिलि करै हाय हाय।।
हृदय जनु फाटत।

अथवा

हऽ, आब भेल वर्षा
हऽ, आब भीजल संसार
हऽ, आब हल्लुक भेल मोन
हऽ, आब उगला सूर्य

18. निम्नलिखित शब्द कैँ वाक्य बनाय अर्थ स्पष्ट करू : 5

तीमन, चकविदोर, समाड., गछुली, चिलका

19. निम्नलिखित संज्ञा सँ विशेषण बनाउ : 5

ढ़ंग, स्थान, घर, जल, रंग

20. निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द बनाउ : 5

जे यात्रा करै छथि, जे चित्त देने अछि, जकर उपमा नहि हो, जकरा पुत्र नहि होइ, एक घर मात्र

21. निम्नलिखित शब्दक सन्धि विच्छेद करू : 5

भूषण, रामायण, दिग्गज, नयन, पवित्र

22. निम्नलिखित मैथिली शब्द कँ तिरहुता मे लिखू : 5

नोर, गायक, नायक, नाम, नोत

23. नचारी आ महेशवानी मे अन्तर फड़िछाउ। 4

24. चन्दा झा पर एकटा निबन्ध लिखू। 4

25. डॉ. सुभद्र झाक शैक्षणिक जीवन पर प्रकाश दिअ। 4

26. बच्चा परम्पराक कड़ी थिक-विवेचना करू। 4

27. 'माँ' कविता मे की कहय चाहैत छथि? 5

28. मिथिलाक नामकरण कोना भेल? 4

●●

उत्तर पत्र

(विषय : मैथिली)

(सेट-१०)

1. (क) कहलनि पत्नी
2. (क) बुद्धिनाथ मिश्र
3. (क) मेहनतिया मजदूरक
4. (क) डॉ. लक्ष्मण झा
5. (ख) माँगन खबासक
6. (क) सुभद्र झाक
7. (क) सुभद्र झा कँ
8. (क) भोलालाल दास
9. (क) मरीचिका पर
10. (ख) हरिमोहन झा
11.

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i)	वन्दना	(घ) विद्यानाथ झा 'विदित'
(ii)	बच्चा	(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(iii)	रौदी अछि	(ख) बुद्धिनाथ मिश्र
(iv)	हाथ	(क) सुकान्त सोम

12. (क) सांस्कृतिक
    (ख) प्रदूषणक
    (ग) ऑक्सीजन
13. (i) शुद्ध
    (ii) अशुद्ध
    (iii) शुद्ध
14. (ग) उत्तर पत्र (सेट-3) कँ देखू।

15. शीर्षक : **<u>इजोरियाक प्रतीक विनोबा भावे</u>**

आचार्य विनोबा भावेक सम्पूर्ण जीवन मानव-समाजक एक प्रकाशस्तम्भ अछि जकर प्रकाश मे विषमताक अन्हरिया इजोरिया मे परिवर्तित होमए लागल। गाँधीजीक रामराज्यक स्वप्न कँ साकार करबाक हेतु लक्ष-लक्ष निर्धन आ उपेक्षितक नोर कँ पोछि समाज मे सम्मानप्रद स्थान पर बैसाओल।

प्रदत्त शब्द संख्या-127

संक्षिप्त शब्द संख्या-42

16. प्रिय महानुभाव

अपने कँ सूचित करैत अपार हर्ष भए रहल अछि जे परब्रह्म परमेश्वरक असीम अनुकम्पा सँ चिरंजीवी श्री देवशंकर मिश्रक ज्येष्ठ कन्या शुभश्री सावित्रीक पाणिग्रहण महिनाथपुर निवासी श्री शक्तिधर झाक ज्येष्ठ बालक श्री सतीश झा, एम. ए. सँ शुभ तिथि 20.12.2016 कँ होएबाक निर्णय भेल अछि। अत: अपने सँ करबद्ध प्रार्थना अछि जे अपने एहि शुभ अवसर पर आबि कए शुभ विवाहोत्सवक शोभा बढ़ाए हमरा अनुगृहीत करी।

अपनेक दर्शनाभिलाषी

उमाशंकर

पटना

17. प्रस्तुत कवितांश कवीश्वर चन्दा झाक 'समय-साल' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। एतए रौदी-दाहीक मारल कृषक वर्गक दयनीय दशाक चित्रण अछि।

रौदी भेला पर किसान लोकनिक परिश्रम पर पानि फीरि जाइत अछि। बिगहाक बिगहा खेत पानि बिनु जजाति शून्य भए जाइछ। यैह हाल बाढ़ि अएला पर होइत छैक। खेतिहर सभ जजाति कटबाक बाट तकैत रहैत छथि परञ्च बाढ़िक पानि मे सबटा दहाए-भसिआए जाइत अछि। कृषकक परिवारक दिन कटनाइ मुश्किल भए जाइछ। हुनका लोकनिक बाल-बच्चा हाय-हाय करैत रहैत अछि। ओकर सभक चीत्कार सँ जेना हृदय फाटि जाएत।

अथवा

प्रस्तुत पाँती श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' रचित कविता 'हऽ आब भेल वर्षा' सँ लेल गेल अछि। गर्मी सँ पीड़ित लोकक मनोदशा वर्षा भेला पर केहन होइत छैक तकर चित्रण एतए भेल अछि।

भयंकर गर्मी कएने छै। लोकक गत्र-गत्र सँ घाम घैलक धैल बहार भए रहल छै। गाछ-पात सभ स्थिर ठमकल। बसातक सिहकियो नहि चलैत छै। मेघक अढ़ मे सूर्य नुकाएल छथि। सभ मनुक्ख वर्षाक प्रतीक्षा कए रहल अछि। तखनहिँ वर्षा भेलैक। लोकक जान मे जान अएलैक। लोकक मोन हल्लुक भेलै। सृष्टि जल सँ सिक्त भेल। सूर्य सेहो मेघक अढ़ सँ बहार भेलाह।

18. तीमन- झोरगर तरकारी कँ तीमन कहल जाइत अछि।

चकविदोर - राखीक मृत्यु पर हमरा चकविदोर लागि गेल।

समाड. - सदानन्द झा कँ समाड़क अभाव नहि हेतनि।

गछुली - आमक नव गछुली खूब बढ़लैक अछि।

चिलका - चिलका वेसी काल मायक कोरा मे रहैत छै।

19. संज्ञा विशेषण

ढ़ंग - ढ़ँगी

स्थान - स्थानीय

घर - घरैया

जल - जलीय

रंग - रंगीन

20. जे यात्रा करै छथि - यात्री

जे चित्त देने अछि - दत्तचित्त

जकर उपमा नहि हो - अनुपम

जकरा पुत्र नहि होइ - निपुत्र

एक घर मात्र - एकघरा

21. भूषण - भूष + अन

रामायण - राम + अयण

दिग्गज - दिक् + गज

नयन - ने + अन

पवित्र - पो + इत्र

22. नोर – 𑒢𑒼𑒩
गायक – 𑒑𑒰𑒨𑒏
नायक – 𑒢𑒰𑒨𑒏
नाम – 𑒢𑒰𑒧
नोत – 𑒢𑒼𑒞

23. शिव विषयक गीत जकरा शिवभक्त डमरू बसाए प्राय: नाचि-नाचि गबैत होथि, नचारी कहबैत अछि। एहि कोटिक गीत मे भक्तिक उद्‌गार एवं दीनताक चित्रण रहैत अछि।

शिव विषयक गीत जाहि मे शिव-पार्वतीक वैवाहिक जीवनक वर्णन होअए, महेशबानी कहबैत अछि।

24. उत्तर पत्र (सेट-4) केर 27 नम्बर कँ देखू।

25. सुभद्र झाक अध्ययनारम्भ गामेक गुरू पं. बलदेव झा करौलथिन। हिनक बाल्यावस्थाक दोसर गुरु छलाह छेदी लाल। हिनक पिता पं. कूंजी झा जखन गाम आबथि तखन हिनका अपने लग खाट पर सुताओल करिथ तथा भोरे-भोरे हिनका संस्कृतक श्लोक सभ रटाबथि। संस्कृतक अमरकोशक किछु पर्व, प्राय: आदिपर्व, एहिना ओछाओने पर हिनका कंठस्थ भए गेलनि। गामक पाठशालक बाद सुभद्र झा मिडिल स्कूल रहिका सँ मिडिल पास कएलनि। 1923 ई. मे ओ वाटसन स्कूल, मधुबनी मे नाम लिखओलनि आ ओतहि सँ मैट्रिक परीक्षा पास कएल। मैट्रिक उत्तीर्ण कए विज्ञान पढ़बाक लेल गाम सँ ओ कलकत्ताक लेल प्रस्थान कएलनि। मुदा ओ कलकत्ता नहि जाए जी. बी. बी. कॉलेज, मुजफ्फरपुर सँ 1930 ई. मे आइ. ए. परीक्षोतीर्ण भेलाह। उच्च शिक्षाक हेतु सुभद्र बाबू कलकत्ता चलि गेलाह। ओतए ओ स्कौटिश चर्च कॉलेज सँ बी. ए. तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत) कएलनि। 1935 ई. मे ओ कलकत्ता छोड़लनि। डॉ. ए. बनर्जीक निर्देशन मे पटना विश्वविद्यालय सँ चारि वर्ष लेल (1936-40) मैथिली विषयक शोध करबाक हेतु हिनका रिसर्च स्कॉलरशिप भेटलनि।

26. बच्चे वर्त्तमान होइछ आ यैह भविष्य होइत अछि। बच्चे एक दिन बढ़िकए पैघ होइत अछि। जे आइ बच्चा अछि सैह कालान्तर मे पिताक पद्‌वी धारण करैछ। तँ बच्चा कँ परम्पराक कड़ी कहल गेल छैक।

27. 'माँ' शीर्षक कविता तारानन्द वियोगीक रचना अछि। कविता सम्बोधित अछि दीदी कँ। दीदी पीसी आ जेठ बहिन दुनू कँ कहल जाइछ। मायक प्रति दीदीक भाव-सिक्त अभिव्यक्तिक सीमांकन करैत कवि प्रकारान्तर सँ अपन असीम श्रद्धा निवेदित करैत छथि। वस्तुत: ई मायक काव्य-तर्पण थिक।

माँ पर कविता लिखब असम्भव अछि। शब्द चूकि जाइछ, छन्द संग नहि दए पबैछ आ अलंकारक कोनहुटा छटा माँक चरण स्पर्श नहि कए पबैत अछि। माँ एहन वृत्त थिकीह जकर प्रदक्षिणा कोनो तन्त्र नहि कए सकैछ। माँ एकटा देवता थिकीह जनिक निर्वचन लेल कोनो मन्त्र नहि रचल गेल।

28. जनक राजवंशक स्थापना निमि जनक कएने छलाह। राज्यक स्थापनाक बाद निमि एकगोट यज्ञ करए चाहैत छलाह। यज्ञ एक हजार वर्ष धरि चलितैक। ओ यज्ञक हेतु पुरोहितक रूप मे वशिष्टक वरण कएक चाहैत छलाह। मुदा ओहि समय वशिष्ट इन्द्रक ठानल यज्ञ मे पुरोहितक काज पर छलाह। निमिक निवेदन पर वशिष्ठ अपन व्यस्तताक स्थिति देखाए देलथिन आ कहलथिन जे ओ इन्द्रक यज्ञ-समाप्तिक धरि यज्ञ रोकने रहबाक धैर्य नहि रहलनि। ओ गौतम कँ अपन पुरोहित बनाए यज्ञ ठानि देलनि। एम्हर जखन इन्द्रक यज्ञ समाप्त भेलनि तँ वशिष्ट निमिक यज्ञ आरम्भ करएबाक हेतु हुनका ओहिठाम गेलाह। ओहिठाम पूर्वहि सँ यज्ञ होइत देखि हुनका बेस क्रोध भेलनि। ओ निमि कँ शाप दए देलथिन- 'अहाँ बिनु देहक भए जाउ।' गायक फलस्वरूप निमि लगले मृत्यु कँ प्राप्त कए गेलाह। हुनक आकस्मिक मृत्यु सँ राज्य मे अराजकता पसरबाक भय छलैक। तँ यज्ञ पुरोहित ओ अन्य ऋषि लोकनि निमिक मृत शरीर कँ ताधरिक हेतु तेल आ इत्र मे राखि देलथिन यावत् यज्ञान्त नहि भए गेल। ततः पर ऋषि लोकनि निमिक मृत देह कँ मथि कए एकटा बालक उत्पन्न कएलनि। एहि बालकक नाम मिथि राखल गेलनि आ हिनके नाम पर जनक राजवंश द्वारा शासित प्रदेश कँ मिथिला कहल गेलैक।

●●